इकाई – 1

हिन्दी भाषा और व्याकरण

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 भाषा (ध्वनि, शब्द और वाक्य)

1.3 संसार की भाषाओं में हिन्दी का स्वरूप

1.4 भाषा और व्याकरण

1.4.1 व्याकरण का अर्थ एवं स्वरूप
1.4.2 भाषा और व्याकरण का सम्बन्ध

1.5 हिन्दी व्याकरण के विविध विभाग

1.6 सारांश

1.7 अभ्यासार्थ प्रश्न

1.8 संदर्भ ग्रन्थ

1.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययनोपरान्त आप

- भाषा की परिभाषा समझ सकेंगे।
- ध्वनि, शब्द और वाक्य तीनों इकाईयों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- हिन्दी भाषा के स्वरूप और देवनागरी लिपि की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- व्याकरण के विविध विभागों के अन्तर्गत सम्मिलित तत्वों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- भाषा और व्याकरण के सम्बन्ध को समझ सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी हैं। समाज में रहकर बातचीत के माध्यम से वह अपने भावों को और विचारों को प्रकट करता है। यह बातचीत भाषा के द्वारा ही सम्भव है। भाषा केवल विचार अभिव्यक्ति का माध्यम

ही नहीं वरन् विचार करने और सोचने का भी माध्यम हैं। बिना भाषा मनुष्य विचार करना और सोचना बन्द कर देते हैं। मानव और मानवेतर भाषा में यहीं मूलभूतः अन्तर है। भाषा का प्रयोग दो प्रकार से किया जाता है -

(1) बोलकर और (2) लिखकर।

बोलने में हम ध्वनियों का प्रयोग करते है और लिखने में वर्णो का। ध्वनियों या वर्णो से शब्द बनता है और सार्थक शब्दों से वाक्य की रचना होती है। इस प्रकार वाक्यों द्वारा अथवा भाषा द्वारा हम अपनी पूरी बात कहते है।'

कामता प्रसाद गुरू ने लिखा है कि ''जगत का अधिकांश व्यवहार बोलचाल अथवा लिखापढ़ी से चलता है इसीलिए भाषा जगत के व्यवहार का मूल है।''

1.2 भाषा (ध्वनि शब्द और वाक्य)

भाषा मनुष्य के विचार और भावों को प्रकट करती है। मानव का सबसे अच्छा सृजन भाषा ही है। भाषा: शब्द 'भाष' धातु से बना है, जिसका अर्थ होता है - कहना या बोलना। भाषा के हम अपनी बात दूसरों तक पहुंचाते और दूसरों की बात खुद समझते हैं। इसमें मुख्य भूमिका वाणी की ही होती है। वाणी बोलने वाले के मुंह से ध्वनि के रूप में निकलती है किंतु यदि वह ध्वनियों के रूप में व्यक्त न भी हो और बोलने वाले अर्थात् वक्ता के मन में विचार के रूप में घुमड़ती रहे तो वह भी भाषा ही है। इस प्रकार भाषा वह व्यवस्था हे जो मौन रूप में तो वैचारिक होती है और मुंह से व्यक्त होकर ध्वनि रूप में भौतिक रूप ग्रहण करती है। इसमें एक निश्चित व्यवस्था है जो ध्वनि - अक्षर - शब्द - वाक्य तक होती है।

ध्वनि शब्द और वाक्य ये तीनों भाषा के अवयय होते है।

ध्वनि - ध्वनि भाषा शरीर का सबसे छोटा (लघुत्तम) अवयय है। क, च, और अ आदि ध्वनियाँ हैं। इन्हें वर्ण भी कहते है। वर्ण वह मूल ध्वनि है; जिसके खण्ड नही हो सकते। वर्णो के मेल से शब्द बनते है और शब्द से वाक्य।

वर्णमाला- वर्णो के समुदाय को वर्णमाला कहते है। स्वर और व्यंजन से हिन्दी की वर्णमाला बनती है जिसमें 49 वर्ण स्वीकार किए गए है। ये सभी वर्ण (13 स्वर और 36 व्यंजन) देवनागरी लिपि में लिखे जाते है।

वर्ण के भेद - (1) स्वर और (2) व्यंजन

स्वर:- जिन वर्णो का उच्चारण स्वतंत्रता से हो और जो व्यंजनों के उच्चारण में सहायक हो उन्हे स्वर कहते है। इनकी संख्या 13 होती है। जो इस प्रकार है -

हिन्दी में स्वर - **अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ, अ, अः** = 13 स्वर

व्यजन:- व्यंजन उन वर्णो को कहते है जो स्वरों की सहायता के बिना नहीं बोले जाते उदाहरण के लिए 'म' एक व्यंजन है जो म + अ ध्वनियों से बना है, म् ध्वनि में जब तक 'अ' स्वर नहीं मिलता तब तक वह 'म' नही बन सकता और उसका सही उच्चारण भी नहीं किया जा सकता है।

हिन्दी में कुल 36 व्यंजन माने गए है जो निम्नलिखित है।

क, ख ग, घ ड.।

च, छ, ज, झ, ´।

ट, ठ, ड, ढ ण।

त, थ, द ध न।

प, फ, ब, भ, म।

य, र, ल, व।

श, ष, स ह।

क्ष, त्र, ज्ञ।

कुल = 36 व्यंजन

उपर्युक्त व्यंजनों में क्ष, त्र, ज्ञ, ये तीन व्यंजन संयुक्त व्यंजन कहलाते है जो इस प्रकार बने है -

क्ष = क् + ष

त्र = त् + र

ज्ञ = ज + ´

अनुनासिक अनुस्वार और विसर्ग

जब किसी स्वर का उच्चारण, नासिका (नाक) से होता है तो उसे अनुनासिक कहते है। यह एक प्रकार से अं स्वर का संक्षिप्त रूप है।

जिसे (-) चिह्न से पहचाना जाता है और लिखा जाता है, जैसे अंग ,कंघा में (-ं) चिह्न अनुनासिक है। व्यंजन के पाँच वर्गो के अन्तिम व्यंजन(ड. ´, ण, न, म) भी अनुनासिक व्यंजन कहलाते है।

अनुस्वार का ही एक रूप चन्द्र बिन्दु (ँ) है। जो सामान्यतः हिन्दी के तद्भव शब्दों को लगता है जैसे - चाँद, साँझ, कहाँ आदि।

विसर्ग का चिह्न (:) है जो अः स्वर की तरह उच्चारित होता है। इसका प्रयोग किसी शब्द के दो अक्षरो के मध्य या अंत में होता है। दुःख, मातः आदि।

हिन्दी के वर्णो की लिपि (देवनागरी) - किसी भी भाषा की वर्णमाला के लिखने के रूप में लिपि कहते है। संसार की सभी भाषाओं की लिखने की अलग-अलग लिपियाँ है। हिन्दी की वर्णमाला देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। यह भारतीय लिपि है जिसका विकास भारत की प्राचीन ब्राह्मी लिपि से हुआ। यह एक स्वदेशी लिपि है जबकि, उर्दू, रोमन इत्यादि विदेशी है।

इस लिपि की वर्णमाला का क्रम वैज्ञानिक है जैसे स्वर पहले व्यंजन बाद में, स्वर में ह्रस्व (छोटा) फिर दीर्घ स्वर। प्रत्येक वर्ग के व्यंजनों में भी अधोष-सघोष अल्पप्राण और महाप्राण नासिक्य वर्ण का स्थान और उच्चारण स्थिर है। इसके अतिरिक्त इस लिपि में एक ध्वनि के लिए ही वर्ण होता है और देवनागरी का प्रत्येक अक्षर उच्चरित होता है।

स्पष्ट है कि वर्ण (ध्वनि) भाषा की लघुतम इकाई है, किन्तु अर्थ के स्तर पर लघुत्तम इकाई शब्द है। सार्थक वर्णो या ध्वनि समूह से शब्द बनता है। जैसे म्, च् प् आदि ध्वनियाँ है पर अलग से इनका कोई अर्थ नही है किन्तु मनोज, चम्मच और पतंग शब्दों में ये ध्वनियाँ ही अन्य ध्वनियों से मिलकर ऐसे ध्वनि समूह या वर्ण समूह की रचना करती है जिसका कोई अर्थ निकलता है। किन्तु शब्द को भी अर्थ और पहचान वाक्य में प्रयुक्त होने पर ही मिलती हे। उदाहरण के लिए 'मनोज' और 'कमल' कह देने से कोई आशय नहीं निकलता। मनोज एक 'नाम' भी हो सकता है और दूसरे अर्थ में यह कामदेव भी है। इसी तरह कमल एक फूल भी है नाम भी। निम्न वाक्य रचना में शब्दां की सार्थकता है-

'मनोज पुस्तक पढ़ रहा है'। कमल का फूल खिल रहा हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि सार्थक ध्वनि समूह (वर्णो) से शब्द और सार्थक शब्दों से वाक्य बनता है। ध्वनि भाषा की लघुत्तम और वाक्य भाषा की पूर्ण इकाई होता है।

1.3 संसार की भाषाओं में हिन्दी का स्वरूप

संसार में हजारों भाषाएँ बोली जाती है जिनका अपना-अपना लिखित साहित्य और अपना व्याकरण है। संसार की लगभग तीन हजार भाषाओं को मुख्यतः चौदह परिवारों में बांटा गया है।

उनकी अनेक प्रकार की उपभाषाएँ और बोलियाँ भी है, जिनके भिन्न-भिन्न रूप है।

उन परिवारों में सबसे बड़ा परिवार भारोपीय (यूरोपीय) भाषा - परिवार है, जो अनेक प्रकार की शाखाओं और उपशाखाओं में फैला हुआ है। भारोपीय परिवार की एक प्रधान शाखा भारतीय आर्य-भाषाएँ है, जिन्हें प्राचीन, मध्यकालीन तथा आधुनिक काल में बाँटा गया। उन परिवारों जो अनेक प्रकार की शाखाओं और उपशाखाओं में फैला हुआ है। भारोपीय परिवार की एक प्रधान शाखा भारतीय आर्य भाषाएँ है जिन्हे प्राचीन, मध्यकालीन तथा आधुनिक कालों में बाँटा गया है। प्राचीनकाल की भाषाओं में संस्कृत भाषा प्रधान है जिससे मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाओं का विकास हुआ है। मध्यकालीन भाषाओं में पालि, प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं की गणना की जाती है। अपभ्रंश से ही आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का विकास हुआ है, जिनमें हिन्दी भाषा का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उसे शौरसेनी अपभ्रंश से निकला हुआ एक ऐसा रूप माना जाता है, जिसकी अनेक बोलियाँ हिन्दी-प्रदेश में

प्रचलित है। उसमें राजस्थानी और पश्चिमी हिन्दी प्रदेशों की अनेक उपभाषाएँ भी शामिल है। ब्रज, अवधी, खड़ी बोली और भोजपुरी आदि भाषाएँ उसी के भिन्न-भिन्न रूप हैं। अर्ध मागधी अपभ्रंश से पूर्वी हिन्दी का विकास हुआ है। विकास की यह परम्परा आज भी गतिशील है।

हिन्दी भाषा का 1000 वर्षो का इतिहास है। हिन्दी साहित्य का प्रारम्भिक या आदिकाल 1000 से 1500 तक माना गया है। मध्यकाल 1500 ई.से. 1800 ई. तक माना गया है और आधुनिक काल 19वीं शती से गुरू होता हैं इसी समय ब्रजभाषा के स्थान पर खड़ी बोली में साहित्य रचना हुईं हिन्दी के विकास में अंग्रेजों ने इसाइयों ने ब्रह्म संमाजियों और आर्य समाजियों का भी योगदान रहा। खड़ी बोली हिन्दी को विकसित करने में 19 वीं शताब्दी के चार लेख को लल्लूलाल, सदा सुखलाल, सदलमिश्र और इशाअल्ला खॉ का विशिष्ट योगदान रहा है। भारतेन्दु और महावीर प्रसद द्विवेदी जीने हिन्दी भाषा के प्रचार प्रसार और परिष्कार करने में विशेष योगदान दिया। इनके बाद प्रेमचन्द, प्रसाद अमृतलालनागर, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, सुमित्रनन्दपतं आदि कवि और लेखकों ने हिन्दी में साहित्य के भंडार को बढ़ाया। आजादी के उपरान्त हिन्दी को राजभाषा को सम्मान मिला। हिन्दी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की महत्वपूर्ण भाषा। हिन्दी भाषा को लोकप्रिय बनाने में हिन्दी सिनेमा का योगदान भी अभूतपूर्व है। आधुनिक आर्यभाषाओं के परिवार में हिन्दी एक प्रमुख भाषा है जो अपनी साहित्यिक विरासत तथा सांस्कृति परम्पराओं के कारण आज भी हमारे राष्ट्र जीवन का प्रतिनिधत्व कर रही है।

हिन्दी भाषा संस्कृत भाषा की गंगोत्री से निकली हुई एक ऐसी भाषा है, जो प्राकृत और अपभ्रंश की सुरम्य घाटियों को पार कर प्रायः एक हजार वर्षो से अधिक समय पर्यन्त अपने स्वतंत्र अस्तित्व के लिए जूझती आई है। उसने अपनी विकासयात्रा में अनेक संघर्ष झेले है। वह भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में अपना जो स्वरूप प्रमाणित कर सकी है, यह उसके लिए समर्पित हुए पुरोधाओं की साहित्य- साधना की एक सुखद परिणति हैं। आधुनिक भाषा-संदर्भो से जुड़कर उसके अनेक व्याकरण ग्रंथ लिखे गये हैं, जिनमें संस्कृत तथा अन्य भारतीय भाषाओं की व्याकरणशास्त्रीय परम्पराओं का अनुसरण हुआ है। अंग्रेजी भाषा की व्याकरण-रचना की विचार-शैली का भी उस पर प्रभाव पड़ा है। यह सब कुछ होते हुए भी उसका अपना स्वतंत्र अस्तित्व और मौलिक स्वरूप भी अवश्य रहा है, यह एक ध्रुव सत्य है।

1.4 भाषा और व्याकरण

भाषा और व्याकरण का अटूट सम्बन्ध होता है। दोनों एक दूसरे पर आधारित है। व्याकरण भाषा को एक आधारभूमि प्रदान करती है जिस पर वह परिष्कृत होती है तो भाषा भी अपने- विकास के माध्यम में व्याकरण को विषय क्षेत्र प्रदान करती है।

1.4.1 व्याकरण काअर्थ एवं स्वरूप

व्याकरण शब्द वि (उपसर्ग) + कृ (धातु) के योग से बना है जिसका अर्थ है विशेष रूप से पृथक-पृथक करते हुए किसी विषय वस्तु का विश्लेषण करना।

व्याकरण वह शास्त्र है जो किसी भी भाषा के चरम अवयव वर्ण (अक्षर) से लेकर उसकी शब्द रचना तथा वाक्यसंघटना की भिन्न-भिन्न प्रक्रियाओं का विश्लेषण करता हुआ उनका स्वरूपबोध कराता है। उसके द्वारा हम किसी भी भाषा की वर्णमाला, शब्द-रचना और वाक्य योजना के नियमों की जानकारी करते हुए उसे शुद्ध रूप मे बोलना, लिखना पढ़ना और समझना सीखते है।

व्याकरण शास्त्र को 'शब्दानुशासन' भी कहा गया है, जिसका अभिप्राय यह है कि वह शब्दों का अनुशासन करता है। उस अनुशासन के कारण ही हमें भाषा का शुद्ध ज्ञान होता है।

1.4.2 भाषा और व्याकरण का सम्बन्ध –

भाषा की स्थिति व्याकरण से पूर्ववर्ती है। इसका तात्पर्य यह है कि पहले भाषा बनती है, तत्पश्चात् उसे सुव्यवस्थित, सुसयंत और नियमसंगत बनाने के लिए व्याकरणशास्त्र की आवश्यकता पड़ती है। वयाकरण को 'भाषा का नेत्र' कहा गया है। उसके द्वारा भाषा के शुद्ध रूप को देखा और परखा जाता है। हमारे शास्त्रों में व्याकरण के अध्ययन को सर्वाधिक महत्व दिया गया है, क्योंकि उसके बिना भाषा का सही बोध हीं नही किया जा सकता। वह हमें केवल अपनी भाषा का ही शुद्ध ज्ञान नहीं करता, अपितु विदेशी भाषाओं को सीखने, समझने, बोलने, लिखने तथा उनका मम्र पहिचानने की क्षमता भी प्रदान करता है। सभी देशों के विद्वानों ने व्याकरण की महत्ता और उपयोगिता स्वीकार की है।

भाषा और व्याकरण में अटूट सम्बन्ध है। वे एक-दूसरे पर आधारित है। भाषा यदि विस्तृत वनस्थली है, तो व्याकरण एक सजा हुआ उद्यान कहा जा सकता है, जो व्यर्थ के झाड़-झंखाड़ो को काटकर उसे सुव्यवस्थित, परिष्कृत और संयत बनाता है। सभी भाषाओं में व्याकरण का महत्व स्वीकार किया गया है। वेद और वेदांगों में उसका स्वतंत्र निरूपण हुआ है। संस्कृत भाषा के मूलरूप और विकास को समझने के लिए महर्षि पाणिनि की -अष्टाध्यायी' तथा 'सिद्धांतकौमुदी' का अध्ययन कितना अनिवार्य है, यह किसी भी भाषाशास्त्री से छुपा हुआ नहीं है। उसका व्याकरणशास्त्र सभी भाषाओं के व्याकरण के अध्ययन का आदर्श प्रतिमान कहा जा सकता है, जिसे आधार बनाकर परवर्ती आचार्यो ने अपने ग्रंथ लिखे है।

1.5 हिन्दी व्याकरण के विविध विभाग

हिन्दी व्याकरण के विविध विभाग सभी भाषाओं के अध्ययन में वर्ण से लेकर वाक्य तक विविध व्याकणिक विषयक आयाम होते है। हिन्दी व्याकरण में इन्हीं वर्ण, शब्द वाक्य और रचना का अध्ययन सम्मिलित है जिसमें निम्नांकित की विवेचना की जाती है।

भाषा मनुष्य के मनोभावों को व्यक्त करती है। सार्थक शब्दों के समूह या संकेत को भाषा कहते है। वर्ण शब्द और वाक्य हिन्दी भाषा के महत्वपूर्ण अंग और हिन्दी व्याकरण के विविध विभाग भी।

1. वर्ण विचार - इस खंड में हिन्दी की वर्णमाला और ध्वनियों का परिचय, उच्चारण के स्थान और प्रयत्न तथा वर्णो और उनके मेल से बनने वाले शब्द आदि विवेचित होते है।

2. शब्द विचार - इस खण्ड के अंतर्गत शब्दों का वर्गीकरण और उनके भिन्न-भिन्न रूप, विकारी और अविकारी शब्दों का व्याकरणीय बोध, शब्द निर्माण की प्रक्रिया, कृदंत, तद्धित, उपसर्ग, प्रत्यय, संधि और समास जैसे महत्वपूर्ण विषयों का सोदाहरण विवेचन तथा शब्द ज्ञान से सम्बन्धित पर्यायवाची, विलोमार्थक, अनेकार्थक तथा शब्दसमूह के लिए प्रयुक्त एक शब्दों के रूप और उदाहरण देते हुए हिन्दी के शब्द भण्डार का सामान्य सर्वेक्षण किया जाता है।

3. वाक्य विचार - इस खंड में वाक्य की परिभाषा और उदाहरण, रचना और अर्थ के अनुसार वाक्य के भेद, वाक्य- परिवर्तन और वाक्य-संश्लेषण के नियम तथा उदाहरण, वाक्य के भिन्न-भिन्न स्वरूप तथा परिवर्तन और वाक्य-विग्रह और वाक्य-विश्लेषण की सोदाहरण विवेचना होती है।

4. रचना विचार - यह खंड व्याकरण के व्यावहारिक विशिष्ट ज्ञान से प्रत्यक्ष जुड़ा हुआ है इस रूप में इसकी उपयोगिता है। अतः इसके अतंर्गत लोकोक्तियाँ और मुहावरे, पत्रलेखन, विशिष्ट सूत्रवाक्यों का भावपल्लवन अथवा उन पर अनुच्छेद लेखन, अपठित अवतरणों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर, शीर्षकचयन, सारांशलेखन, शुद्धलेखन के उदाहरण तथा निबंधरचना के प्रमुख बिन्दु और उनकी रूपरेखाएँ आदि विषय समायोजित किये जाते हैं।

1.6 सारांश

मनुष्यों द्वारा प्रयुक्त 'भाषा' शब्द उन ध्वनि-समूहों का संयोजन है, जिनसे बने हुए शब्दों के अपने 'अर्थ' होते है तथा जिनसे निर्मित वाक्यों द्वारा कोई भाव या विचार प्रकट किया जाता है। वह एक ऐसी कला है, जो मौखिक रूप से वाणी द्वारा उच्चरित होकर मनुष्यों के भाव प्रकट करती है तथा लिखित रूप में लिपिबद्ध होकर उन्हें व्यापक बनाने में सहयोग देती है। उसमें ध्वनि, पद, अर्थ और वाक्य स्वतः समाहित रहते है, जिन्हें आधार बनाकर व्याकरणशास्त्र उनकी विवेचना करता है।

स्पष्ट है कि भाषा मनुष्य के मनोभावों को व्यक्त करती है। सार्थक शब्दों के समूह या संकेत को भाषा कहते हैं। वर्ण, शब्द और वाक्य हिन्दी भाषा के महत्वपूर्ण अंग है और हिन्दी व्याकरण के विविध विभाग भी।

1.7 अभ्यासार्थ प्रश्न

1. भाषा किसे कहते है? भाषा के अवयवों का नामोल्लेख कीजिए।
2. वर्णमाला की परिभाषा बताते हुए वर्ण के भेद लिखिए
3. स्वर और व्यंजन में क्या अन्तर है?
4. अनुनासिक और अनुस्वार का संक्षिप्त में वर्णन कीजिए।
5. देवनागरी लिपि की विशेषताएं संक्षेप में लिखिए।

6. वाक्य भाषा की पूर्ण इकाई है- इस कथन को उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

7. भाषा और व्याकरण का सम्बन्ध बताइए।

8. व्याकरण के विविध विभागों का नाम बताते हुए उनके अन्तर्गत सम्मिलित विषयों का उल्लेख कीजिए।

1.8 संदर्भ ग्रंथ

1 डॉ. धीरेन्द्र वर्मा: नवीन हिन्दी व्याकरण, हिन्दी मंदिर, इलाहाबाद

2 कामता प्रसाद गुरू: हिन्दी व्याकरण, काशी नागरी प्रचारिणी वाराणसी

3 पण्डित श्रीलाल, भाषा चन्द्रोदय (भारतवर्षीय हिन्दी भाषा का व्याकरण)

4 धीरेन्द्र वर्मा: हिन्दी भाषा का इतिहास, हिन्दुस्तान अकादमी इलाहाबाद।

5. किशोरीदास वाजपेयी: हिन्दी शब्दानुशासन, नागरी प्रचारिणी सभा. वाराणसी 1958

6. किशोरीदास वाजपेयी: भारतीय भाषा विज्ञान, चौखम्भा विद्या भवन वाराणसी 1959

7. किशोरीदास वाजपेयी: हिन्दी की वर्तनी एवं शब्द विश्लेषण, नागरी प्रचारिणी सभा. वाराणसी 1968

इकाई - 2

संज्ञा और सर्वनाम

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 संज्ञा - परिभाषा और भेद

2.2.1 व्यक्तिवाचक संज्ञा

2.2.2 जाति वाचक संज्ञा

2.2.3 भाववाचक संज्ञा

2.3 संज्ञा के रूपान्तर (लिंग /वचन/कारक)

2.4 सर्वनाम परिभाषा और भेद

2.4.1 पुरूषावाचक सर्वनाम

2.4.2 निजवाचक सर्वनाम

2.33 निश्चिय वाचक सर्वनाम

2.3.4 अनिश्चवाचक सर्वनाम

2.3.5 सम्बन्ध वाचक सर्वनाम

2.3.6 प्रश्नवाचक सर्वनाम

2.5 सारांश

2.6 अभ्यास प्रश्न

2.7 संदर्भग्रंथ

2.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप

- संज्ञा का अर्थ और उसके विविध प्रकारों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- सर्वनाम की परिभाषा और उसके भेदों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

- संज्ञा और सर्वनाम का अनुप्रयोग उदाहरणों के द्वारा कर सकेंगे।
- वाक्यों में संज्ञा और सर्वनाम को पहचान सकेंगे।

2.1 प्रस्तावना

इस इकाई में आप व्याकरणिक तत्व संज्ञा और सर्वनाम का अध्ययन कर रहे हैं। हिन्दी व्याकरण में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया इन चार घटकों को विकारी शब्द के अन्तर्गत रखा जाता है क्योंकि इन चारों के रूप में लिंग, वचन और कारक के अनुसार विकार या परिवर्तन हो जाता है। आप सभी जानते हैं कि एक या एक से अधिक अक्षरों से बनी हुई स्तंत्रत व सार्थक ध्वनि को शब्द कहते है जैसे कमल, ज्योत्सना, गिरधर, बुद्धिमान आदि। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया ये सब शब्द के ही भेद है। वस्तुओं के नाम बताने वाले शब्द को संज्ञा कहते है। संज्ञा के बदले आने वाले शब्द को सर्वनाम कहते है। प्रस्तुत इकाई में आप संज्ञा और सर्वनाम का अध्ययन करने जा रहे हैं1

2.2 संज्ञा परिभाषा और भेद

संज्ञा उस विकारी शब्द को कहते है जिससे किसी वस्तु, व्यक्ति और भाव के नाम का बोध हो जैसे - मैं रोज हनुमान चालीसा पढ़ता हूं।

उपर्युक्त पंक्ति में हनुमान चालिसा किसी ग्रंथ का नाम है अतः यह संज्ञा शब्द है।

भेद - संज्ञा के तीन भेद होते है।

2.2.1 व्यक्तिवाचक संज्ञा

जिस शब्द से किसी वस्तु, स्थान या व्यक्ति के नाम का बोध हो, उसे व्यक्तिगत संज्ञा कहते है। जैसे मनोज, सृजन, रामचरित्तमानस, जयपुर, होली दीवाली आदि।

डा. दीपशित्स के अनुसार व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्दों का वर्गीकरण निम्नानुसार है -

1 व्यक्तियों के नाम - श्याम, हरि, सुरेश

2 दिशाओं के नाम - उत्तर, पश्चिम, दक्षिण, पूर्व

3 देशों के नाम - भारत, जापान, अमेरिका, पाकिस्तान, वर्मा

4 राष्ट्रीय जातियों के नाम - भारतीय, रूसी, अमेरिकी

5 समुद्रों के नाम - काला सागर, भूमध्य सागर, हिन्द महासागर, प्रशान्त महासागर

6 नदियों के नाम - गंगा, ब्रहमपुत्र, बोल्गा, कृष्णा, कावेरी

7 पर्वतों के नाम - हिमालय, विन्धयाचल, अलकनन्दा, कराकोराम

8 नगरों, चौकों और सड़कों के नाम - वाराणसी, गया, चाँदनी चैक, हरिसन रोड, अशोक मार्ग

9 पुस्तकों तथा समाचार पत्रों के नाम - रामचरित मानस, ऋग्वेद, धर्मयुग, इण्डियानेशन, आर्यावर्त

10 ऐतिहासिक युद्धों और घटनाओं के नाम - पानीपत की पहली लड़ाई, सिपाही विद्रोह, अक्टूबर-क्रान्ति

11 दिनों, महीनों के नाम - मई, जुलाई, अक्टूबर, सोमवार, मंगलवार

12 त्यौहारों, उत्सवों के नाम - होली, दिवाली, रक्षाबंधन, विजयादशमी, गणतंत्र दिवस

2.2.2 जाति वाचक संज्ञा

जिस संज्ञा से किसी जाति के सम्पूर्ण पदार्थों व उनके समूहों का बोध होता है - उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं - जैसे घर, पर्वत, मनुष्य, नदी, मोर, सभा आदि

डा. वासुदेव नन्दन प्रसाद के अनुसार जातिवाचक संज्ञाएं निम्नलिखित स्थितियों में होती हैं -

1 संबंधित व्यवसायों, पदों और कार्यों के नाम - बहन, भाई, मंत्री, जुलाहा, हलवाई प्रोफेसर, अध्यापक, माली, चोर

2 पशु-पक्षिओं के नाम - घोड़ा, गाय, कौआ, तोता, मैना

3 वस्तुओं के नाम - मकान, कुर्सी, घड़ी, पुस्तक, कलम, टेबिल

4 प्राकृतिक तत्वों के नाम - तूफ़ान, बिजली, वर्षा, भूकम्प, ज्वालामुखी

2.2.3 भाववाचक संज्ञा

जिस संज्ञा से व्यक्ति या वस्तु के गुण या धर्म, दशा अथवा व्यापार का बोध होता है, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं जैसे - मित्रता, वचन, चिकनाहट, भलाई, मिठास, लम्बाई, जवानी, चतुराई, मिठास, नम्रमा, नारीत्व, सुन्दरता, समझ इत्यादि।

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया से भाववाचक संज्ञा बनाने के विविध उदाहरण इस प्रकार है —

(क) जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा शब्द

शब्द	भाववाचक संज्ञा	शब्द	भाववाचक संज्ञा
बच्चा	बचपन	लडका	लडकपन
इन्सान	इन्सानियत	वकील	वकालत
शैतान	शैतानी	बाप	बपौती

मानव	मानवता	मित्र	मित्रता
बंधु	बंधुत्व	स्वामी	स्वामीत्व
माता	मातृत्व		

(ख) सर्वनाम से भाववाचक संज्ञा शब्द

सर्वनाम	भाववाचक संज्ञा
अपना	अपनापन
निज	निजत्व
अहं	अहंकार
स्व	स्वत्व

(ग) विशेषण से

विशेषण से भाववाचक संज्ञा शब्द

बड़ा	बड़प्पन
मूर्ख	मूर्खता
ठंडा	ठंडक
नीच	नीचता
सरल	सरलता

2 क्रिया से भाववाचक संज्ञा शब्द

(घ) क्रिया से

क्रिया	भाववाचक संज्ञा
लिखना	लिखाई/लेख
मिलना	मेल/मिलाई
दौड़ना	दौड़
खेलना	खेल
झगड़ना	झगड़ा
थकना	थकान/थकावट

संज्ञा के विकार - जैसा कि प्रस्तावना में लिखा गया है कि संज्ञा विकारी शब्द है लिंग, वचन व कारक से संज्ञा शब्दों में परिवर्तन होता रहता है, उदाहरण के लिए

1 लिंग - लड़का खेलता है, लड़की खेलती है।

2 वचन - लड़का पढ़ता है, लड़के पढ़ते है।

3 कारक - लड़का फुटबाल खेलता है। लड़की ने हाॅकी खेली

2.3 संज्ञा के रूपान्तर

व्यक्तिवाचक संज्ञा की तरह भाववाचक संज्ञा से भी किसी एक ही भाव का बोध होता है। इस संज्ञा को हम अनुभव करते है तथा इसका बहुवचन प्राय: नहीं होता है।

व्यक्तिवाचक संज्ञा का जातिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयोग- संसार में कुछ ऐसे व्यक्ति होते है जिनमें अन्य व्यक्ति से भिन्न कोई ऐसी विशेषता , गुण या अवगुण होते है जिनके कारण वे विशिष्ट बन जाते है इनका नाम ही किसी गुण या अवगुण का प्रतिनिधित्व करने लगता है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति विशेष का नाम होकर भी जातिवाचक शब्द बन जाता है। जैसे जयचन्द का नाम - ''देशद्रोही' तो ''भीष्मप्रतिज्ञा' भीष्म पितामह की भीषण प्रतीक्षा के लिए प्रसिद्ध है।

व्यक्तिवाचक संज्ञा का जातिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयोग के कहीं उदाहरण है -

1 भारत तो सीता सावित्री का देश है।

2 देश में जयचन्दों की कमी नहीं है।

3 विभीषणों से बचो।

4 यह तो हरिश्चन्द निकला।

यहां रेखाकिंत शब्द सीता सावित्री, जयचन्द, विभीषण और हरिश्चन्द व्यक्तिवाचक संज्ञाऐं है लेकिन ये शब्द क्रमशः पवित्रता, देशद्रोह, विश्वासघात और सत्यवक्ता जैसे गुण अवगुण के प्रतीक बन गये है। और इस तरह के सभी व्यक्तियों के लिए ये सब प्रयोग में लाये जाने के कारण जातिवाचक संज्ञा शब्द बन गये।

जातिवाचक संज्ञा का व्यक्तिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयोग

जिस तरह व्यक्तिवाचक संज्ञा का जातिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयोग होता है। उसी तरह कभी कभी कुछ जातिवाचक शब्द भी व्यक्ति विशेष या स्थान विशेष के अर्थ में रूढ़ हो जाते है, तब वे जाति का बोध न कराकर केवल एक व्यक्ति या स्थान का बोध कराते है। उदाहरण के लिए

शास्त्रीजी भारत के लोकप्रिय प्रधानमंत्री थे।

महात्माजी का त्याग सराहनीय है।

स्वतंत्रता के बाद सरदार ने रियासतें समाप्त की।

उपयुक्त वाक्यों में रेखांकित शब्द क्रमशः लाल बहादुर शास्त्री , महात्मा गांधी और सरदार बल्लभ भाई पटेल के अर्थ में रूढ़ हो गये है। रेखांकित शब्द यद्यपि जातिवाचक संज्ञा है। लेकिन व्यक्ति विशेष के अर्थ में प्रयुक्त होने के कारण व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्द बन गये है।

2.4 सर्वनाम - परिभाषा और भेद

संज्ञा के बदले काम आने वाले शब्द को सर्वनाम कहते हैं जैसे मैं, तुम, और वह आदि शब्द।

सर्वनाम के छः भेद होते है जिनका उल्लेख इस प्रकार है

सर्वनाम के भेद -

1 पुरूषवाचक सर्वनाम - मैं, तुम, वह आप (हम, वे)

2 निजवाचक सर्वनाम - आप

3 निश्चियवाचक सर्वनाम - यह, वह (ये, वे)

4 अनिश्चियवाचक सर्वनाम - कोई, कुछ

5 सम्बन्धबोधक सर्वनाम ' जो

6 प्रश्नवाचक सर्वनाम - कौन, क्या

2.4.1 पुरूषावाचक सर्वनाम

पुरूषावाचक सर्वनाम की परिभाषा – जो सर्वनाम पुरूषों (स्त्री या पुरूष) के नाम के बदले आते हैं, उन्हं पुरूषवाचक सर्वनाम कहा जाता है।

2.4.2 निजवाचक सर्वनाम

निजवाचक सर्वनाम की परिभाषा - जिस सर्वनाम से स्वयं के अर्थ का बोध हो उसे निजवाचक सर्वनाम कहते हैं जैस आप स्वयं

2.4.3 निश्चिय वाचक सर्वनाम

निश्चिय वाचक सर्वनाम - जो सर्वनाम पास या दूर की किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति के लिए संकेत करता है, उसे निश्चियवाचक सर्वनाम कहते हैं, जैसे वह, ये वे इसको इनसे उसके लिए, इसमें उस पर आदि वैसे मूलतः निश्चियवाचक सर्वनाम दो हैं यह वह

2.4.4 अनिश्चवाचक सर्वनाम

अनिश्चवाचक सर्वनाम - जिस सर्वनाम से किसी निश्चित वस्तु का बोध न हो, उसे अनिश्चियवाचक सर्वनाम कहते हैं, जैसे कोई, कुछ इत्यादि।

उदाहरण

1 कोई यहाँ आएगा तो, मैं आपके साथ चल सकूंगा

2 किसी ने आपको रोका तो नहीं?

3 कुछ खा लेते तो अच्छा रहता

4 किस पर विश्वास करं? आजकल किसी की बात का कोई ठीक नहीं है,

5 आज कोई न कोई अवश्य आएगा

6 दाल में कुछ काला है

7 कहते सब हैं, करते कोई कोई ही हां

2.4.5 सम्बन्ध वाचक सर्वनाम

जिस सर्वनाम से एक बात का दूसी बात से संबंधज्ञात होता है, उसे संबंधवाचकसर्वनाम कहते हैं जैसे जो - सो जिसने-उसने, जिनकी-उनकी, जिसमें - उसमें जो वह

उदाहरण

1 जो सोता है, सो खाता है,

2 जो परिश्रम करेगा, वह पास होगा,

3 जिसकी लाठी, उसकी भैंस

2.4.6 प्रश्नवाचक सर्वनाम

जिस सर्वनाम से प्रश्न का बोध होता है अथवा प्रश्न करने के लिए जिस सर्वनाम का प्रयोग होता है, उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं, जैसे कौन, क्या

उदाहरण

1 कौन आ रहा है?

2 तुम क्या खा रहे हो?

3 हम किस पर विश्वास करें

2.5 सारांश

प्रस्तुत इकाई में आपने व्याकरण के आधार भूत तत्व संज्ञा, सर्वनाम का अध्ययन किया है। ये दोनों तत्व मूलत विकारी शब्द है और लिंग वचन और कारक के अनुसार इनका रूपान्तर होता है। किसी वस्तु, प्राणी या स्थान के नाम को संज्ञा कहते है। संज्ञा के स्थान पर काम आने वाले शब्द सर्वनाम होते है

सर्वनाम का प्रयोग संज्ञा के स्थान पर होता है। इसलिए संज्ञा के समान ही कारक के कारण इनमें विकार या परिवर्तन होता है। जैसे हमने, हमको, हमसे और मैंने आदि। इसे भी संज्ञा की तरह एकवचन और बहुवचन में प्रयोग कर सकते है।

2.6 अभ्यास प्रश्न

1 विकारी शब्द किसे कहते है।

2 संज्ञा की परिभाषा बताते हुए इसके विविध प्रकारों का सोदाहरण उल्लेख कीजिए।

3 सर्वनाम के भेदों की परिभाषा उदाहरण सहित लिखे।

4 जातिवाचक संज्ञा का व्यक्तिवाचक संज्ञा के रूप में कब प्रयोग कर सकते है? उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए।

5 भाववाचक संज्ञा किन किन शब्दों से बनती है? प्रत्येक के दो दो उदाहरण दीजिए।

6 निम्नलिखित शब्दों के आगे संज्ञा के भेद लिखिए

1 सौंदर्य 2 आगरा 3 सैनिक 4 मोहन

5 नेपाल 6 गाय 7 ऊँचाई 8 गुलाब 9 बचपन 10 ऐरावत

7 निश्चयवाचक और अनिश्चयवाचक सर्वनाम में उदाहरण सहित अन्तर लिखिए

8 निम्नलिखित वाक्यों मे सर्वनाम शब्द छांटकर उनके भेद लिखिए

1 तुम आगरा कब गए थे?

2 देखो कौन आया है।

3 हमारे देश में चुनाव हो रहे है।

4 जैसी करनी वैसी भरनी।

5 स्कूल में कुछ खा लेना

9 कोई और कुछ का प्रयोग सर्वनाम के रूप में कीजिए।

2.7 संदर्भ ग्रंथ

1 डॉ. धीरेन्द्र वर्मा: नवीन हिन्दी व्याकरण, हिन्दी मंदिर, इलाहाबाद

2 कामता प्रसाद गुरू: हिन्दी व्याकरण, काशी नागरी प्रचारिणी वाराणसी

3 पण्डित श्रीलाल, भाषा चन्द्रोदय (भारतवर्षीय हिन्दी भाषा का व्याकरण)

4 धीरेन्द्र वर्मा: हिन्दी भाषा का इतिहास, हिन्दुस्तान अकादमी इलाहाबाद।

5. किशोरीदास वाजपेयी: हिन्दी शब्दानुशासन, नागरी प्रचारिणी सभा. वाराणसी 1958
6. किशोरीदास वाजपेयी: भारतीय भाषा विज्ञान, चौखम्भा विद्या भवन वाराणसी 1959

इकाई - 3

विशेषण और क्रिया

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 विशेषण : अर्थ और भेद

3.2.1 गुणवाचक विशेषण

3.2.2 संख्यावचाक विशेषण

3.2.3 परिमाणवाचक विशेषण

3.2.4 सार्वनामिक विशेषण

विशेषण शब्दों का निर्माण

3.3 क्रिया परिभाषा और भेद

3.3.1 अकर्मक क्रिया

3.3.2 सर्कर्मक क्रिया

3.4 सारांश

3.5 अभ्यास प्रश्न

3.6 संदर्भग्रंथ

3.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप

- विशेषण का अर्थ व विविध भेदों को समझ सकेंगे।
- क्रिया का अर्थ व प्रकारों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- विशेषण व क्रिया का अनुप्रयोग उदाहरणों के द्वारा कर सकेंगे।
- वाक्यों में विशेषण और क्रिया को पहचान सकेंगे।

3.1 प्रस्तावना

इससे पूर्व आपने संज्ञा और सर्वनाम का अध्ययन किया। इस इकाई में आप व्याकरणिक तत्व विशेषण और क्रिया का अध्ययन कर रहे हैं। हिन्दी व्याकरण में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया इन चार घटकों को विकारी शब्द के अन्तर्गत रखा जाता है क्योंकि इन चारों के रूप में लिंग, वचन और कारक के अनुसार विकार या परिवर्तन हो जाता है। संज्ञा और सर्वनाम (वस्तुओं) की विशेषता बताने वाले शब्द को विशेषण कहते है। वस्तुओं के विषय में विधान करने वाले शब्द को क्रिया कहते है। क्रिया से किसी काम का करना या होना पाया जाता है।

3.2 विशेषण : अर्थ और भेद

विश्लेषण की परिभाषा - जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताये, उसे विशेषण कहते हैं, जिस शब्द की विशेषता बताई जाए, वह विशेष्य कहलाता है।

जैसे - राम बुद्धिमान छात्र है, यहां बुद्धिमान शब्द से राम की विशेषता का बोध होता है।

विशेषण के भेद निम्नानुसार है

3.3.1 गुणवाचक विशेषण

जिस शब्द से संज्ञा का गुण, दशा, स्वभाव आदि लक्षित है, उसे गुणवाचक विशेषण कहते है।

अन्य विशेषणों की अपेक्षा गुणवाचक विशेषणों की संख्या अधिक रहती है, इसके मुख्य रूप नीचे दिये जा रहे हैं -

काला - नया, पुराना, प्राचीन, नवीन, अगला, पिछला, आगामी आदि

स्थान - पूर्वी, पश्चिम, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय, भीतरी, संकरा, सीधा इत्यादि

आकार - गोल, चपटा, चैकोर, तिकोना, लम्बा, मोटा, पतला, नुकीला, तिरछा, धुंधला, धुंधयारा आदि

दशा - दुबला-पतला, मोटा, भारी, फूला, पिचका, गाढ़ा, गीला, सूखा, घना, गरीब, अमीर, स्वस्थ, रोगी, पालतू, जंगली, कैदी, स्वतंत्र, आदि

गुण - भला, बुरा, उचित, अनुचित, सच्चा, झूठा, दानी, त्यागी, लोभी, लालची, दुष्ट, नेक, शान्त, उद्वत, उच्छंखल, सरल, कुटिल आदि।

3.3.2 संख्यावचाक विशेषण

संख्यावाचक विशेषण के मुख्य भेद तीन हैं –

(क) निश्चियवाचक (ख) अनिश्चियवाचक और (ग) परिमाणबोधक

(क) निश्चियवाचक संख्यावाचक विशेषण - इससे वस्तुओं की निश्चित संख्या का बोध होता है जैसे दो लड़के, बीस आम, दस रूपय, चैथा भाग, तीन गुणा लाभ इत्यादि (ख) अनिश्चियवाचक और (ग) परिणामबोधक

संज्ञा या सर्वनाम की संख्या बताने वाले शब्द संख्यावाचक विशेषण कहते है जैसे कुछ लोग चिल्ला रहे है, गांधीजी के तीन बंदरों की मुद्रा अद्भूत है। इन दोनों उदाहरणों में रेखाकिंत शब्द संख्यावाचक विशेषण है।

अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण

इससे वस्तु की अनिश्चित संख्या का बोध होता है जैसे कुछ लड़के, सब सवारियाँ इत्यादि

3.3.**4 सार्वनामिक विशेषण**

पुरूषावाचक और निजवाचक सर्वनामों को छोड़कर शेष सर्वनामों का प्रयोग विशेषण के समान होता है, ये सार्वनामिक विशेषण कहे जाते हैं, अतः पुरूषावाचक और निजवाचक सर्वनाम (मैं, तू, वह) के सिवा अन्य सर्वनाम जब किसी संज्ञा के पहले आते हैं, तब वे सार्वनामिक विशेषण कहे जाते हैं, जैसे - वह छात्र आज अनुपस्थित है, यह गाय मरखनी है, इन वाक्यों में वह और यह संज्ञा के पहले आए हैं, अतः विशेषण की भांति प्रयुक्त हैं, परन्तु छात्र पढ़ने में तेज हैं, वह अनुपस्थित है अथवा वह अनुत्तीर्ण हो गया - वाक्यों में वह छात्र के बदले आया है, अतः सर्वनाम है।

3.3 विशेषण शब्दों का निर्माण

विशेषण शब्दों का निर्माण मुख्यत: तीन प्रकार से किया जाता है 1 संज्ञा से 2 सर्वनाम से तथा 3 क्रिया से। उदाहरण के लिए

अर्थ	आर्थिक
इतिहास	ऐतिहासिक
सम्प्रदाय	साम्प्रदायिक
राजनीति	राजनीतिक
स्थान	स्थानीय
भाग्य	भाग्यवान
श्रद्धा	श्रद्धेय,श्रद्धालु
अन्त	अन्तिम

सर्वनाम से विशेषण

सर्वनाम	विशेषण

यह	ऐसा
वह	वैसा
सो	वैसा
भगत्	भवदीय

क्रिया से विशेषण

क्रिया	विशेषण
दर्श	दर्शनीय
कर	करणीय
वन्द	वन्दनीय
पूंज	पूजित
कंथ	कथित
विद	विदित
ख्या	ख्यात

हिन्दी संज्ञा से विशेषण

शब्द	विशेषण
भूख	भूखा
रस	रसीला
प्यास	प्यासा
फुर्ती	फुर्तीला
ठंड	ठंडा

3.4 क्रिया : परिभाषा और भेद

परिभाषा - जिस शब्द में किसी काम का करना या होना समझा जाय, उसे क्रिया कहते हैं, जैसे पढ़ना, जाना, खाना, पीना, रोना इत्यादि

धातु - जिस मूल शब्द में विकार होने से क्रिया बनती है, उसे धातु कहते हैं, जैसे भागा क्रिया में मूल शब्द भाग में आ प्रत्यय जोड़कर भागा शब्द बना है, अतः भागा क्रिया की धातु भाग है, इसी प्रकार आए क्रिया का धातु आ है।

क्रिया बनाना - क्रिया के सामान्य रूप में ना जोड़कर हिन्दी क्रियाएं बनाई जाती है, इन सामान्य रूपों में से ना हटाकर धातु का रूप ज्ञान किया जा सकता है।

हिन्दी में क्रियाएँ धातुओं के अलावा संज्ञा और विशेषणों में भी बनती है, जैसे - काम+आना कमाना, चिकना+आना - चिकनाना, दूहरा+आना – दुहराना

3.4.1 अकर्मक क्रिया

जिस धातु में सूचित होने वाले व्यापार का फल कर्ता पर ही पड़ता है, उसे अकर्मक धातु कहते हैं, जैसे - मैं रोता हूँ, क्रिया का व्यापार और उसका फल, मैं कत्ता पर ही पड़ता है, अतः रोता हूं क्रिया अकर्मक है।

3.4.2 सर्कर्मक क्रिया

जिस धातु से सूचित होने वाले व्यापार का फल कर्ता से निकलकर किसी दूसरी वस्तु पर पड़ता है, उसे सकर्मक धातु कहते हैं, यथा - छात्र ने पुस्तक पढ़ी, पढ़ी क्रिया के व्यापार का फल छात्र से निकल कर पुस्तक पर पड़ता है, इसलिए पढ़ी क्रिया (अथवा पढ़ धातु सकर्मक है।

3.5 सारांश

प्रस्तुत इकाई में आपने व्याकरण के आधार भूत तत्व विशेषण और क्रिया का अध्ययन किया है। ये दोनों तत्व मूलत विकारी शब्द है और लिंग वचन और कारक के अनुसार इनका रूपान्तर होता है। संज्ञा की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण होते है। जिन शब्दों की विशेष्ता बताई जाती है, उन्हें विशेष्य कहते हैं। विशेषण के चार भेद होते है - गुणवाचक, संख्यावाचक, परिमाण वाचक और सार्वनामिक विशेषण। विशेषण भी विकारी शब्द होते हैं और लिंग भेद कारक भेद और वचन भेद के कारण इनमें विकार परिवर्तन उत्पन्न होता है। वाक्य में जो शब्द किसी कार्य के करने या होने का बोध कराता है क्रिया कहलाता है। क्रिया का फलकर्ता और कर्म पर पड़ने के अनुरूप क्रिया के दो भेद। अकर्मक क्रिया और 2 सकर्मक क्रिया माने गये हैं। संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण की भांति क्रिया भी विकारी शब्द है। क्रिया के लिंग और वचन संज्ञा के अनुसार परिवर्तित होता है।

2.5 अभ्यासार्थ प्रश्न

1 विशेषण किसे कहते है? गुणवाचक विशेषण को उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

2 विशेषण के कितने भेद होते है? उनकी परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

3 संख्यावाचक विशेषण और परिमाणवाचक विशेषण में क्या अन्तर है?

4 निम्नलिखित शब्दों में विशेषण बनाइए -

1 भूगोल 2 धर्म 3 नगर 4 दीनता 5 चमक 6 लालिमा

5 निम्नलिखित विषेषणों के लिंग बदलकर वाक्य बनाओ

1 गुणवान 2 मीठा 3 ममेरा 4 गोरा 5 अच्छा

6 निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त विषेषणों को छांटकर उनके भेद लिखों।

1 आप चतुर है

2 काला घोड़ा दौड़ रहा है।

3 मेरी कक्षा में बीस छात्र है।

4 प्रतिभाशाली छात्रों को पुरस्कार दिया गया।

5 किताब के कुछ पृष्ठ और पढ़ने है।

7 क्रिया का अर्थ बताते हुए सकर्मक क्रिया को उदाहरण देकर समझाइए

8 अकर्मक और सकर्मक क्रिया का अन्तर उदाहरण देते हुए लिखिए। निम्नलिखित शब्दों के विशेषण शब्द बनाइए।

भूख, हठ, दिन, सम्प्रदाय, भाग्य, वह, राष्ट्र, जंगल, वर्ष

3.6 संदर्भ ग्रंथ

1 डॉ. धीरेन्द्र वर्मा: नवीन हिन्दी व्याकरण, हिन्दी मंदिर, इलाहाबाद

2 कामता प्रसाद गुरू: हिन्दी व्याकरण, काशी नागरी प्रचारिणी वाराणसी

3 पण्डित श्रीलाल, भाषा चन्द्रोदय (भारतवर्षीय हिन्दी भाषा का व्याकरण)

4 धीरेन्द्र वर्मा: हिन्दी भाषा का इतिहास, हिन्दुस्तान अकादमी इलाहाबाद।

इकाई - 4

लिंग, वचन और कारक

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 लिंग - परिभाषा और भेद

4.3 लिंग निर्धारण के नियम

4.4 कतिपय लिंग (अभ्यास हेतु)

4.5 वचन - परिभाषा और भेद

4.6 वचन सम्बन्धित नियम

4.7 कतिपय वचन परिवर्तन (अभ्यास हेतु)

4.8 कारक की परिभाषा **और भेद**

4.9 लिंग, वचन और कारक का व्याकरणिक महत्व

4.10 सारांश

4.11 अभ्यासार्थ प्रश्न

4.12 संदर्भ ग्रन्थ

4.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप

- लिंग की परिभाषा और भेद जान सकेंगे
- लिंग निर्धारण के कतिपय नियमों को समझ सकेंगे
- वचन की परिभाषा ओर भेद की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- कारक की परिभाषा और भेद जान सकेंगे

- वाक्यों में लिंग, वचन और कारक को पहचान सकेंगे, उनका वाक्य में प्रयोग कर सकेंगे और उन्हें उदाहरण द्वारा स्पष्ट कर सकेंगे।
- लिंग, वचन और कारक का व्याकरणिक महत्व समझ सकेंगे।

4.1 प्रस्तावना

इससे पूर्व आपने इकाईयों में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया चारों का अध्ययन किया है। यह आप जानते हैं कि शब्द के दो भेद (**1**) विकारी और (**2**) अविकारी में से संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया ये चारों विकारी शब्द के अन्तर्गत आते है क्योंकि लिंग, वचन और कारक के कारण इनमें विकार, रूपान्तरण (परिवर्तन) होता हो। अतः इस इकाई में लिंग, वचन और कारक की जानकारी दी गई है। इनकी उचित जानकारी प्राप्त कर विद्यार्थी संज्ञा, विशेषण, सर्वनाम और क्रिया का रूपान्तरण भी करना सीख जाता है। हिन्दी में लिंग, वचन और कारक की अभिव्यक्ति वाक्यों में होती है, वाक्य में वचन व लिंग की पहचान संज्ञा, सर्वनाम और क्रिया से ही होती है।

4.2 लिंग - परिभाषा और भेद

व्याकरण में पुरूष या स्त्री शब्द को लिंग कहते है। अंग्रेजी का 'जेण्डर' शब्द हिन्दी में लिंग अर्थ में प्रयुक्त होता है। जिसका अर्थ होता है चिह्न अथवा पहचान का साधन। शब्द के जिस रूप से यह पता चले कि वह पुरूष जाति का है अथवा स्त्री जाति का हिन्दी व्याकरण में उसे लिंग कहते है।

हिन्दी भाषा के शब्द भण्डार में सामान्यतः पुरूषवाचक या स्त्रीवाचक शब्द अधिक होते है इसलिए हिन्दी में लिंग के दो भेद किए गए है -

प्रथम (**1**) पुल्लिंग और द्वितीय (**2**) स्त्रीलिंग

पुल्लिंगः पुरूष या नर जाति का बोध कराने वाले शब्द को पुल्लिंग कहते है।

जैसे - छात्र, मोहन, बालक, गाँव, देश, शहर, बंदर आदि।

स्त्रीलिंगः नारी या स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्दों को स्त्रीलिंग कहते है

जैसे - शेरनी, चुहिया, नारी, बहन, लडकी, चिड़िया आदि

अधिकांश प्राणियों के लिंगनिश्चित होते है और प्रत्येक भाषा का व्यक्ति उसे अपनी परम्परा से ग्रहण कर लेता है किंतु निर्जीव वस्तुओं के लिंग का निर्धारण करने में असमंजस्य की स्थिति रहती है दही, मेज, किताब आदि शब्द। वस्तुतः भाषा अपनी परम्परा के अनुसार इनका लिंग निर्धारण कर देती है और व्यक्ति उसी अनुसार इनका प्रयोग करने लग जाता हे,

जैसे - दूध ठंडा हो गया है। (पुल्लिंग)

चाय कहाँ रखी है। (स्त्रीलिंग)

मेज टूट गई है। (स्त्रीलिंग)

4.3 लिंग - निर्धारण संबंधी नियम

हिन्दी भाषा में तीन प्रकार के संज्ञा-शब्द प्रचलित हैं। एक तो वे जो प्राणी जगत में अंग अथवा शरीर रचना की भिन्नता के आधार पर किसी जाति या व्यक्ति को दिए हुए है। दूसरे वे जिनके लिंग निर्धारण के पीछे कोई प्रत्यक्ष या तर्क-संगत आधार नहीं, उन्हें पुरूषवाचक या स्त्रीवाचक संज्ञा दे दी गई है। यद्यपि उनमें न कोई पुरूष है न स्त्री। जैसे - समुद्र, पत्थर (पुल्लिंग) नदी, शिला (स्त्रीलिंग) तीसरे वे जो रूढि के आधार पर प्रचलित हो गए हैं जैसे नर कौवा अथवा मादा कौवा, नगर कोयल अथवा मादा कोयल।

विद्यार्थियों को पुल्लिंग शब्द और स्त्रीलिंग शब्दों के लिंग निर्धारण सम्बन्धित नियमों की जानकारी होनी चाहिए।

पुल्लिग शब्द - पुल्लिंग शब्द के लिंग निर्धारण के नियम निम्नानुसार है -

1) दिनों (वार) के नाम - सोमवार, मंगलवार, बुधवार, गुरूवार, शुक्रवार, शनिवार, रविवार

2) मास (महीनों) के नाम पुल्लिंग है - आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ आदि। अंग्रेजी मास में जनवरी, फरवरी, मई, जुलाई, अपवाद है।

3) रत्नों के नाम - हीरा, मोती, पन्ना, नीलम, मँूगा, पुखरा पुल्लिंग किन्तु मणि अपवाद है।

4) द्रव्य पदार्थ - रक्त, घी, पैट्रोल, डीजल, तेल, पानी पुल्लिंग

5) धातुओं के नाम - सोना, पीतल, लोहा, ताँबा, पुल्लिंग है किन्तु चाँदी स्त्रीलिंग है।

6) प्राणी जगत में - कौआ, मेंढक, खरगोश, भेडिया, उल्लू, तोता, खटमल, पक्षी, पशु, जीवन, प्राणी

7) वृक्षों के नाम - नीम, पीपल, जामुन, बड़, गुलमोहर, शीशम,

अशोक, आम, कंदब, देवदार, चीड़ शब्द पुल्लिग।

8) पर्वतों के नाम - कैलश, अरावली, हिमाचल, विंध्याचल, सतपुड़ा।

9) अनाजों के नाम - गेहँ, बाजरा, चावल, मूंग आदि शब्द पुल्लिग है।

किन्तु मक्का, ज्वार, अरहर, अपवाद।

10) ग्रहों के नाम - रवि, चंद्र, सूर्य, ध्रुव, मंगल, शनि, बृहस्पति शब्द पुल्लिंग हैं किन्तु पृथ्वी आपवाद है।

11) शरीर के अंग - पैर, पेट, गला, मस्तक, अँगूठा, मस्तिष्क, हृदय, सिर, हाथ, दाँत, ओठ, कंधा, वक्ष, बाल पुल्लिग है।

12) वर्णमाला के अक्षर - स्वरों में (इ, ई, ऋ, ए, ऐ, को छोडकर) सभी पुल्लिंग है।

13) (अ) संस्कृत शब्द (तत्सम शब्द) जैसे - दास, अनुचर, मानव, मनुष्य, देव, दानव, राजा, ऋषि, पुष्प, पत्र, फल, गृह, दीपक।

14) समुद्रों के नाम - प्रशांत महासागार, अंध महासागार, अरब सागर, भूमध्यसागर, हिन्द महासागर

15) आकार-प्रकार, देखने में भारी भरकम, विशाल और बैडोल वस्तुएँ पुल्लिंग होती है - ट्रक, इंजन, बोरा, खंभा, स्तंभ।

16) विशिष्ट स्थान - वाचनालय, शिवालय, मंदिर, भंडारघर, स्नानागार, रसोईघर, शयनगृह, सभाभवन, न्यायालय, परीक्षा केन्द्र, मंत्रालय

17) व्यवसाय सूचक - उपन्यासकार, कहानीकार, नाटककार, कर्मचारी, अधिकारी, व्यापारी, सचिव, आयुक्त, राज्यपाल, उद्योगपति, दुकानदार, देनदार, लेनदार, सेठ, श्रेष्ठी, सैनिक, सुनार, सेनापति।

18) समुदायवाचक शब्द - समाज, दल, संघ, गुच्छा, मंडल, सम्मेलन, परिवार, कुटुंब, वंश, कुल, झुंड।

19) भाववाचक संज्ञा - बाबा, बहाव, नचाव, दिखावा, मोटापा।

20) एरा, दान, वाला, खाना, बाज, वान तथा शील, दाता और अर्थी प्रत्येय वाले शब्द सपेरा, फूलदान, दूधवाला, कारखाना, दयावाद, सुशील, परमार्थी, विद्यार्थी, शरणार्थी, मतदाता, रक्तदाता आदि।

स्त्रीलिंग शब्द -

1) लिपियों के नाम - देवनागरी, रोमन, शारदा, खरोष्ठी।

2) नदियों के नाम - गंगा, यमुना, सरस्वती, कावेरी, नर्मदा।

3) भाषाओं के नाम - हिन्दी, अरबी, फारसी, अंग्रेजी, जर्मन, मराठी।

4) तिथियों के नाम - अमावस्या, पूर्णिमा, प्रतिपदा

5) बेलों के नाम - जूही, चमेली, मधुमति।

6) प्राणियों में - कोयल, चील, मैना, मछली, गिलहरी

7) वर्णमाला के अक्षर - ई, ई, ऋ।

8) शरीर के अंग - आँख, नाम, नाभि, भौ, पलक, छाती।

9) हथियारों में - तलवार, कटार, तोप, बंदूक, गोली, गढा।

10) समुदायों में - संसद, परिषद्, सभा, सेना।

11) नक्षत्रों के नाम - भरणी, कृतिका, रोहिणी।

12) जिन शब्दों के अंत में इ, नी, आनी, आई, इया, इमा आदि से जुड़े शब्द -गर्मी कहानी, मलाई, बुढ़िया, कालिमा।

4.4 कतिपय लिंग (अभ्यास हेतु)

विद्यार्थियों की जानकारी और अभ्यास हेतु कतिपय शब्दों का लिंग परिवर्तन निम्नानुसार है -

	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग		पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
1)	नर	नारी	**18)**	दर्शक	दर्शिका
2)	बेटा	बेटी	**19)**	संपादक	संपादिका
3)	बंदर	बंदरिया	**20)**	भवदीय	भवदीया
4)	गोप	गोपी	**21)**	वचन	वाणी
5)	दास	दासी	**22)**	वर	वधू
6)	चूहा	चूहिया	**23)**	विद्वान	विदुषी
7)	बेटा	बिटिया	**24)**	सम्राट	सम्राज्ञी
8)	लड़का	लड़की	**25)**	पिता	माता
9)	नौकर	नौकरानी	**26)**	पाषाण	शिला
10)	दर्जी	दर्जिन	**27)**	आँख	चक्षु
11)	अध्यापक	अध्यापिका	**28)**	गमन	गति
12)	सेवक	सेविका	**29)**	बिलाव	बिल्ली
13)	अभिनेता	अभिनेत्री	**30)**	बैल	गाय
14)	विधाता	विधात्री	**31)**	राजा	रानी
15)	नायक	नायिका	**32)**	श्री	श्रीमती
16)	शिष्य	शिष्या	**33)**	ससुर	सास
17)	परिचायक	परिचायिका	**34)**	इनका	इनकी
35)	देव/भाग्य	निति	**36)**	दुःख	पीडा

37)	तुम्हारा	तुम्हारी	**38)**	बुद्धिमान	बुद्धिमति
39)	महान	महती	**40)**	हंस	हंसिनी
41)	जीजा	जीजी	**42)**	बहन	बहनोई
43)	हाथी	हथिनी	**44)**	कोयल	मादा कोयल
45)	खरगोश	मादा खरगोश			

विद्यार्थियों को पुल्लिंग से स्त्रीलिंग और स्त्रीलिंग से पुल्लिंग शब्द में परिवर्तन करने के अपने ज्ञान में वृद्धि करनी चाहिए जो निरन्तर अभ्यास से ही संभव है।

4.5 वचन: परिभाषा और भेद

शब्द के जिस रूप से उसके एक अथवा अनेक होने का बोध होता है, उसे वचन कहते है।

वचन भेद - वचन दो प्रकार के होते है

(1) एकवचन: शब्द के जिस रूप से उसके संख्या में एक होने क बोध होता है उसे एकवचन कहते है, जैसे पुस्तक, आदमी, संन्यासी पतंगा आदि।

(2) बहुवचन: शब्द के जिस रूप से उसके संख्या में अनेक का बोध हो, एक से अधिक वस्तुओं, संस्थाओं और स्थानों का बोध हो उसे बहुवचन कहते है।

4.6 वचन संबंधी नियम

हिन्दी में कुछ शब्द सदा एकवचन में होते हैं और कुछ सदा बहुवचन में प्रयुक्त होते है। इनके नियम निम्नानुसार है

एकवचन में

(क) धातु पदार्थो का ज्ञान कराने वाली जातिवाचक संज्ञाएं -

सोना, चाँदी, लोहा, पीतल, ताँबा, घी, राँगा आदि।

(ख) भाववाचक संज्ञाएँ -

प्रेम, करूणा, दया, कृपा, क्रोध, घृणा, प्यार, डर, मिठास, खटास, अपनापन, अहंकार।

(ग) आग, पानी, हवा, पवन, जल, वायु, वर्षा, दूध, दही, जनता, शब्द, धरती, आकाश, पाताल, सत्य, व्यथा आदि

(घ) समूहवाचक संज्ञा -

सेना, जाति, संस्था, कक्षा, गुच्छा, मंण्डल, सभा, गण, वृंद, केन्द्र, संसद, प्रशासन आदि।

बहुवचन में

(क) दर्शन, समाचार, हस्ताक्षर, प्राण, केश, आँसू, रोम, लोग, सदैव बहुवचन में प्रयुक्त होते है।

(ख) आदरसूचक शब्दो का प्रयोग सदैव बहुवचन में ही होता है

जैसे - माताजी, पिताजी, दादाजी, आप, गुरू आदि।

ऐतिहासिक पुरूषों, नारियों, पौराणिक नामों, सार्वजनिक, महान नेताओं, साहित्यकारों, वैज्ञनिकों के नाम इसी श्रेणी में आते है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि धातु-पदार्थो का ज्ञान प्रदान कराने वाली जातिवाचक संज्ञाए, भाववाचक संज्ञाए, समूह वाचक संज्ञाए एकवचन के अन्तर्गत आती हैं। इसी तरह ऊपर लिखे गए शब्द बहुवचन में प्रयोग किये जाते है

4.7 कतिपय वचन – परिवर्तन (अभ्सास हेतु)

निम्नलिखित शब्दों का वचन-परिवर्तन निम्नानुसार है -

1)	कलम -	कलमें	**2)**	पुस्तक -	पुस्तकें
3)	बाते -	बाते	**4)**	माँग -	माँगें
5)	कविता -	कविताएं	**6)**	बहू -	बहुएँ
7)	लड़का -	लडके	**8)**	माता -	माताएँ
9)	कपडा -	कपउे	**10)**	तिथि -	तिथियां
11)	थाली -	थालियाँ	**12)**	टोपी -	टोपियाँ
13)	रीति -	रीतियाँ	**14)**	खटिया -	खटियाँ
15)	अध्यापक -	छात्रवृन्द	**16)**	विद्वान -	विद्वानजन
17)	छात्र -	छात्राकृन्द	**18)**	मजदूर -	मजदूर लोग
19)	गिरि -	गिरि (रूप एक समान)	**20)**	छाया -	छाया (एक समान)
21)	पानी -	पानी (रूप एक समान)	**22)**	सदी -	सदियाँ
23)	सैकड़ा -	सैकडों	**24)**	देवता -	देवताओं
25)	गरीब -	गरीबों	**26)**	धनिक -	धनिकों
27)	सरिता -	सरिताओं	**28)**	मुर्गी -	मुर्गियों
29)	बच्चे -	बच्चों	**30)**	भाई -	भाइयों

31) बाबू - बाबूओं

4.8 कारक की परिभाषा और भेद

वाक्य में संज्ञा और सर्वनाम के जिस कार्य का सम्बन्ध क्रिया से जाना जाता है, उसे कारक कहते है। संक्षेप में कारक का अर्थ है क्रिया को करने वाला। कारक शब्दों (संज्ञा और सर्वनाम) को क्रिया के साथ किसी न किसी रूप् में जोड़ती है।

उदाहरण के लिए - 'राम मोहन को बचाने के लिए साइकिल से गिर गया'

यहाँ पर को, के लिए, और से आदि कारक क्रमशः राम मोहन बचाने, साइकिल आदि शब्दों को राम द्वारा मोहन को बचाने की क्रिया से जोड़ रहें हैं।

कारक के भेद –

हिन्दी में कारक के 8 **भेद होते हैं** —

कारक के भेद और उनके विभक्ति चिह्न इस प्रकार है —

	कारक		**विभक्ति चिह्न**
1	**कर्ता कारक**	—	**ने**
2	**कर्म कारक**	—	**को**
3	**करण कारक**	—	**से, के द्वारा (साधन का बोध)**
4	**सम्प्रदान कारक**	—	**के लिए, को**
5	**अपादान कारक**	—	**से (अलग होने का बोध)**
6	**सम्बन्ध कारक**	—	**का, की, के**
7	**अधिकरण कारक**	—	**में, पर**
8	**सम्बोधन**	—	**हे!, अरे!**

4.9 लिंग, वचन और कारक का व्याकरणिक महत्व

व्याकरण की दृष्टि से लिंग, वचन और कारक की भूमिका संज्ञ, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के रूपान्तर में होती है। हिन्दी भाषा में लिंग सूचक शब्द रूपों का बहुत महत्व है। विशेषण एवं क्रिया रूप भी लिंग के अनुरूप् ही चलते है जैसे -

अच्छा व्यक्ति सभी का सम्मान करता हैं

अच्छी नारी सभी का सम्मान करती है।

उपर्युक्त उदाहरण में रेखाकिंत शब्द क्रमश; विशेषण, लिंग और क्रिया है। प्रथम वाक्य में व्यक्ति पुललिंग तथा द्वितिय वाक्य में नारी स्त्रीलिंग शब्द से विशेषण व क्रिया रूप में भी परिवर्तन हो गया है। इसी तरह वचन एवं कारक भी हिन्दी भाषा में शब्द -रूपों को प्रभावित करते है। अन्य शब्दों का सम्बन्ध क्रिया से जोड़ने वाले विभक्ति चिह्न 'कारक' कहलाते है। यदि कारक न हो तो क्रिया के साथ शब्दों को सम्बंध नही बैठ पाएगा और वाक्य अर्थहीन और आधारहीन हो जाएगा। जैसे - राम ने रावण को धनुष से मारा यहाँ पर रेखांकित विभक्ति चिहन है' यदि इन्हे हटा देते है तो वाक्य रह जाएगा- राम रावण धनुष मारा भाषा में इस उक्त वाक्य आधारहीन अर्थहीन और निरूद्धदेश्य है जिसका कोई प्रयोग नही। इस प्रकार स्पष्ट है कि भाषा लेखन में लिंग,वचन व कारक का अपना महत्व है।

4.10 सारांश

इस इकाई में आपने लिंग, वचन और कारक की जानकारी प्राप्त की है। हिन्दी में संज्ञाएं, लिंग वचन और कारक द्वारा अपना रूप निर्धारित करती है। हिन्दी में लिंग की अपनी विशिष्टता है, जिसके निर्धारण के नियमों के अतिरिक्त यह लोक-प्रयोग और अभ्यास से ही जाना जा सकता है तथा गैर हिन्दी भाषी इसे हिन्दी शब्द-कोष या मातृभाषियों से सीख सकते है। हिन्दी में वचन भी होते है, एक वचन और बहुवचन, संख्या में एक या अनेक होने के आधार पर यष्ह भद किया गया है। वचन का भी प्रभाव संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया पर पड़ता है। संज्ञा या सर्वनाम का क्रिया के साथ सम्बन्ध निर्धारित करने वाले तत्व को कारक कहते है तथा जिन शब्दों या शब्दांश से सम्बन्ध स्थापित होता है उन्हें कारक चिह्न या विभक्ति चिह्न कहते है। सर्वनाम के साथ भी कारक चिह्न का प्रयोग होता है जैसे इससे किसका, उसने; यहाँ रेखांकित शब्द कारक चिह्न है जो सर्वनाम के साथ जुडे है। संक्षेप में यह इकाई आपके व्याकरण ज्ञान का विकास कर भाषा को शुद्ध लिखने और बोलने की क्षमता का विकास करती है।

4.11 अभ्यासार्थ प्रश्न

1. लिंग की परिभाषा और उसके भेद उदाहरण सहित लिखिए।

2. निम्न शब्दों का लिंग परिवर्तन कीजिए

राक्षस,गायक,दुःख जेठ, पंडित, भिखारी,बाबु, बेगम, विद्युर, प्रार्थी प्रिया भगवान, क्षत्रिय, दर्जिन आदि

3. रेखाकिंत शब्दों का लिंग परिवर्तन कर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए -

(क) युवक आया और ..... भी ।

(ख) नाटक में नायक और ..... दोनो अन्त में मर जाते है

(ग) जब ससुर गया तो ..... भी गयी।

(घ) पहले सुनार आया बाद में .....।

(ड) विदवान और ..... में संवाद हुआ।

4. निम्नलिखित स्त्रीलिंग शब्दों में किस प्रत्यय का प्रयोग किया गया है -

(1) प्राचार्या

(क) आ (ख) या

(ग) रा (घ) इया

(2) देवरानी

(क) नी (ख) अनी

(ग) आनी (घ) ई

5 वचन की परिभाषा और भेदों का उदाहरण सहित उल्लेख कीजिए

6 रेखांकित शब्दों का वचन बदलकर पुनः लिखिए -

(1) पेड़ से पत्ते गिरता है। .....

(2) मंच पर लड़का नाच रहा है।

(3) पक्षी गगन में उड़ रहा है।

(4) बिल्ली अँधेरे में देख सकती है।

(5) इस फाटक से गाड़ी गुजरती है।

9 कारक किसे कहते है **?** कारक के विभाक्ति चिह्न का उल्लेख करो।

10 कारक के भेदों के नाम लिखिए

11 क्रिया करने वाले कारक को क्या कहते है

12 का। की ।के की विभाक्ति किस कारक के साथ लगती है।

13 करवा कारक का विभाक्ति चिह्न कौनसा है **?**

14 क्रिया जिस स्थान पर की जाती है**,** उसे कहते है।

15 रिंक्त स्थानों की पूर्ति उपयुक्त कारक चिह्न से कीजिए

(1) वह पुस्तक ..... पढ़ रहा है **'** (कर्म कारक)

(क) को (ख) से

(ग) के लिए (घ) में

(2) वह घर .....है (अधिकरण कारक)

(क) से (ख) के लिए

(ग) पर (घ) को

(8) निम्न शब्दों को बहुवचन में बदलिए -

मिठाई, समाचार,कविता, मूख, संतरा, झील, लिपि, पाठक, आदि।

(5) 'पर्वत' के नाम से किन्ही चार पुल्लिंग शब्दों को लिखिए

4.12 संदर्भ ग्रन्थ

1 डॉ. धीरेन्द्र वर्मा: नवीन हिन्दी व्याकरण, हिन्दी मंदिर, इलाहाबाद

2 कामता प्रसाद गुरू: हिन्दी व्याकरण, काशी नागरी प्रचारिणी वाराणसी

3 पण्डित श्रीलाल, भाषा चन्द्रोदय (भारतवर्षीय हिन्दी भाषा का व्याकरण)

4 धीरेन्द्र वर्मा: हिन्दी भाषा का इतिहास, हिन्दुस्तान अकादमी इलाहाबाद।

इकाई - 5

शब्द - संरचना: (संधि, समास, उपसर्ग एवं प्रत्यय)

इकाई की रूपरेखा

5.0 उद्देश्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 संधि

5.3 समास

5.4 उपसर्ग

5.5 प्रत्यय

5.6 सारांश

5.7 अभ्यासार्थ प्रश्न

5.8 संदर्भ ग्रंथ

5.0 उद्देश्य

इस इकाई में शब्द निर्माण में सहायक व्याकरणिक साधनों का अध्ययन किया गया है। इस इकाई के अध्ययनोपरांत आप-

- संधि का अर्थ, प्रकार व स्वर संधि की जानकारी प्राप्त कर सकेगें।
- समास का अर्थ व विविध रूपों में की जानकारी प्राप्त कर सकेगें।
- उपसर्ग एंव प्रत्ययों की परिभाषा और इनके उदाहरणों के माध्यमों से शब्द निर्माण करना सीख सकेंगे।
- शब्द में संधि, समास उपसर्ग और प्रत्यय को पहचानते हुए इनके व्यावहारिक अनुप्रयोग का कौशल विकसित कर सकेगें।

5.1 प्रस्तावना

दैनिक जीवन में हम भाषा के समुचित प्रयोग द्वारा अपने भावों और विचारों को आकर्षक ढ़ंग से प्रकट करना प्रसन्द करते है। हम चाहते है कि हमारी भाषा और शब्द संयोजन ऐसा हो जिसे पढ़कर और सुनकर पाठक और श्रोता हमसे अच्छी तरह प्रभावित हो जाए। इस कौशल के लिए विद्यार्थियों की भाषा के

व्यावहारिक पक्ष पर पकड़ होना जरूरी है। हिन्दी भाषा का व्यावहारिक पक्ष मुहावरे लोकोक्ति, पर्यायवाची, युग्म शब्द, आदि के साथ साथ, समास, उपसर्ग एवं प्रत्यय से भी समृद्ध होता है। शब्द निर्माण की कला विद्यार्थियों को आनी चाहिए। संस्कृत में उपसर्ग एवं प्रत्ययं लगाकर एक शब्द से अनेक शब्द बनाए जा सकते हैं। हिन्दी भाषा में संस्कृत के अलावा उर्दू और अंग्रेजी के उपसर्गो एवं प्रत्ययों से भी शब्द निर्माण की प्रक्रिया अपनाई जाती है। संधि विच्छेद और समास-विग्रह से शब्द के टुकड़े कर उनके अर्थ की गंभीरता को समझने में सहायता मिलती है। उपयुक्त शब्द चयन में भी संधि और समास सहायक होते है।

5.2 संधि

संधि की परिभाषा - 'सधि' का शाब्दिक अर्थ है 'मेल' या 'मेल मिलाप'। जब दो ध्वनियों परस्पर मिलती है और मिलकर एक स्वतंत्र भाषिक रूप बना लेती हैं तो उसे संधि कहते है। उदाहरणतया-

पुस्तक + आलय = पुस्तकालय

संधि के तीन भेद होते है ' 1 स्वर संधि 2 व्यंजन संधि और 3 विसर्ग संधि

स्वर संधि -

दो स्वरों के पारस्परिक मेल से जो विकार होता है, उसे स्वर संधि कहते है। इसके चार भेद होते है-

(1) दीर्घ (2) गुण

(3) वृद्धि (4) यण संधि

(1) दीर्घ सन्धि - ह्रास्य या दीर्घ अ, इ, उ से परे क्रमशः ह्रस्व या दीर्घ अ, ई, उ आने पर क्रमशः दीर्घ आ, ई, ऊ हो जाते है।

	अ	+	अ	=	आ
1.	मत	+	अनुसार	=	मतानुसार
2.	परम	+	अर्थ	=	परमार्थ
3.	सुख	+	अर्थी	=	सुखार्थी
4.	पीत	+	अंबर	=	पीतांबर
5.	मत	+	अधिकार	=	मताधिकार
6.	न्याय	+	अधीश	=	न्यायाधीश
7.	उदय	+	अचल	=	उदयाचल
8.	नव	+	अंकुर	=	नवांकुर

9. सूर्य + अस्त = सूर्यास्त

10. स्व + अर्थ = स्वार्थ

अ + आ = आ

1. भोजन + आलय = भोजनालय
2. देव + आलय = देवालय
3. रत्न + आकर = रत्नाकर
4. जन + आदेश = जनादेश
5. नील + आकाश = नीलाकाश
6. गज + आनन = गजानन
7. परम + आनन्द = परमानन्द
8. नव + आगत = नवागत
9. धर्म + आत्मा = धर्मात्मा
10. सत्य + आग्रह = सत्याग्रह

आ + अ = आ

1. यथा + अर्थ = यथार्थ
2. शिक्षा + अर्थी = शिक्षार्थी
3. विद्या + अर्थी = विद्यार्थी
4. परीक्षा + अभ्यास = परीक्षाभ्यास
5. सीमा + अंत = सीमांत
6. रेखा + अंकन = रेखांकन
7. यथा + अवसर = यथावसर

आ + आ = आ

1. महा + आत्मा = महात्मा
2. विद्या + आलय = विद्यालय
3. महा + आनंद = महानंद
4. वार्ता + आलाप = वार्तालाप

5.	महा	+	आशय	=	महाशय
6.	मदिरा	+	आलय	=	मदिरालय

इ + इ = ई

1.	अभि	+	इष्ट	=	अभीष्ट
2.	रवि	+	इन्द्र	=	रवींन्द्र
3.	अति	+	इव	=	अतीव
4.	मुनि	+	इंन्द्र	=	मुनींद्र

इ + ई = ई

1.	गिरि	+	ईश	=	गिरीश
2.	कवि	+	ईश	=	कवीश
3.	मुनि	+	ईश	=	मुनीश
4.	परि	+	ईक्षा	=	परीक्षा

ई + इ = ई

1.	मही	+	इन्द्र	=	महींद्र
2.	शची	+	इन्द्र	=	शचींद्र

ई + ई = ई

1.	रजनी	+	ईश	=	रजनीश
2.	नदी	+	ईश	=	नदीश
3.	मही	+	ईश्वर	=	महीश्वर
4.	सती	+	ईश	=	सतीश

उ + उ = ऊ

1.	सु	+	उक्ति	=	सूक्ति
2.	लघु	+	उत्तर	=	लघूत्तर
3.	बहु	+	उद्देश्यीय	=	बहुदद्शीय
4.	भानु	+	उदय	=	भानूदय
5.	लघु	+	उत्सव	=	लघूत्सव

6.	गुरू	+	उपदेश	=	गुरूपदेश
	उ + ऊ = ऊ				
1.	अंबु	+	अर्भि	=	अंबूर्मि
2.	अंबु	+	ऊर्जा	=	अंबूर्जा
	ऊ + उ = ऊ				
1.	वधू	+	उत्सव	=	वधूत्सव
	ऊ + ऊ = ऊ				
	भू	+	ऊर्जा	=	भूर्जा

2. गुण सन्धि - यदि अ और आ के आगे इ या ई, उ या ऊ, ऋ स्वर आते हैं, तो दोनों के मिलने से क्रमशः ए, ओ और अर् हो जाते है, जैसे -

	अ + इ = ए				
1.	देव	+	इंद्र	=	देवेंद्र
2.	सुर	+	इंद्र	=	सुरेन्द्र
3.	गज	+	इंद्र	=	गजेंद्र
4.	शुभ	+	इच्छा	=	शुभेच्छा
5.	स्व	+	इच्छा	=	स्वेच्छा
6.	भारत	+	इंदु	=	भारतेंदु
7.	जैन	+	इंद्र	=	जैनेंद्र
	अ + ई = ए				
1.	नर	+	ईश	=	नरेश
2.	परम	+	ईश्वर	=	परमेश्वर
3.	गण	+	ईश	=	गणेश
4.	दिन	+	ईश	=	दिनेश

3. वृद्धि सन्धि - ह्रस्व 'अ' या दीर्घ 'आ' से परे ए या ऐ हो तो दोनों मिलकर 'ऐ' और 'ओ' या 'औ' हो तो 'औ' हो जाते है -

अ/आ+ए/ऐ= ऐ

1.	मत	+	ऐक्य	=	मतैक्य
2.	सदा	+	एवं	=	सदैव
3.	मता	+	ऐश्वर्य	=	महैश्वर्य
4.	एक	+	एक	=	एकैक

अ/आ+ओ/ओ= औ

1.	वन	+	औषधि	=	वनौषधि
2.	परम	+	औदार्य	=	परमौदार्य
3.	महा	+	ओजस्वी	=	महौजस्वी
4.	मता	+	औषध	=	महौषध

आ + इ = ए

1.	यथा	+	इष्ट	=	यथेष्ट
2.	रमा	+	इंद्र	=	रमेंद्र
3.	राजा	+	इंद्र	=	राजेन्द्र
4.	महा	+	इंद्र	=	महेन्द्र

आ + ई - ऐ

1.	रमा	+	ईश	=	रमेश
2.	उमा	+	ईर्श	=	उमेश
3.	महा	+	ईश	=	महेश
4.	लंका	+	ईश्वर	=	लंकेश्वर

(ख) अ + उ = ओ

1.	वीर	+	उचित	=	वीरोचित
2.	पर	+	उपकार	=	परोपकार
3.	सूर्य	+	उदय	=	सूर्योदय
4.	सर्व	+	उत्तम	=	सर्वोतम
5.	जीर्ण	+	उद्धार	=	जीर्णोद्धार

6.	जल	+	उर्मि	=	गलोर्मि
7.	नव	+	उदित	=	नवोदित
8.	रोग	+	उपचार	=	रोगोपचार
9.	मानव	+	उपयोगी	=	मानवोपयोगी
10.	मद	+	उन्मत्त	=	मदोन्मत्त
	आ + उ - ओ				
1.	महा	+	उत्सव	=	महोत्सव
2.	महा	+	उदय	=	महोदय

4. यण् सन्धि - यदि इ,ई, उ, ऊ और ऋ के बाद भिन्न स्वर आए तो इ/ई का य्, उ/ऊ का व् और ऋ का र् हो जाता है, जैसे -

	अ/आ+ए/ऐ= ऐ				
1.	इ	+	अ	=	य
	अति	+	अधिक	=	अत्यधिक
2.	इ	+	आ	=	या
	इति	+	आदि	=	इत्यादि
	प्रति	+	उपकार	=	प्रत्युपकार
3.	ई	+	आ	=	या
	नदी	+	आगन	=	नद्यागम
4.	इ	+	उ	=	यु
	ज्परि	+	युक्त	=	उपर्युक्त
5.	इ	+	ऊ	=	यू
	वि	+	ऊह	=	व्यूह
	आ + ऋ - अर्				
	महा	+	ऋषि	=	महर्षि
	इ + ए - ये				

	प्रति	+	एक	=	प्रत्येक
	ई + ऐ - यै				
	देवी	+	ऐश्वर्य	=	दैव्यैश्वर्य
	उ + अ - व				
सु	+	अर्च्छ	=	स्वच्छ	
	अ + आ - वा				
सु	+	आगत	=	स्वागत	
	उ + ए - वे				
अनु	+	एषण	=	अन्वेषण	
	उ + इ - वि				
अनु	+	इति	=	अन्विति	
	ऋ + आ - रा				
पितृ	+	आज्ञा	=	पित्राज्ञा	
	अ + ऋ - अर्				

1.	राज	+	ऋषि	=	राजर्षि
2.	देव	+	ऋषि	=	देवर्षि

नोट – 'अयादि' संधि के भेद की हिन्दी में आवश्यकता नहीं है क्योंकि इस संधि के रूप हिन्दी भाषा में यौगिक शब्द नहीं है।

5.3 समास

परस्पर सम्बन्ध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्दों से मिलकर जब एक नया शब्द बन जाता है और उनके बीच के संयोजक शब्द का कारक के चिह्न का लोप हो जाता है तब उस क्रिया को **'समास'** कहते है। समास के द्वारा बना हुआ शब्द '**समस्त पद**) कहलाता है और 'समस्त पद' के शब्दों का अंगो को अलग-अलग करके दिखलाना **विग्रह** कहलाता है, जेसे –

समस्त पद	विग्रह	समास
राजमाता	राजा की माता	तत्पुरूष
जय - पराजय	हानि या लाभ जय या पराजय	द्वन्द्व

सप्तऋषि	सप्तऋषियों का समूह	द्विगु
पंचानन	पांच है आनन जिसके ‘ गणेश	बहुब्रीही

समास के मुख्य छः भेद हैः-

1 अव्ययीभाव समास - जिसका पहला शब्द अव्यय हो, अथवा कोई शब्द दो बार आये और वह क्रिया-विशेषण का काम करे, जैसे -निडर, प्रतिदिन, घर-घर, गली-गली, प्रतिवर्ष, यथाशक्ति, एकाएक, रातोंरात, प्रतिक्षण, आजीवन, आमरण, निः शंक। अन्य उदाहरण निम्नानुसार है -

समास	**समास – विग्रह**	**समास**	**समास - विग्रह**
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार यथासंभव		जैसा संभव हो
यथास्थान	जो स्थान निर्धारित है	यथाशीघ्र	जितना शीघ्र हो
यथार्थ	जैसा वस्तव में	यथासमय	जो समय निर्धारित है
	अर्थ है	यथासाध्य	जितना साधा जा सके
यथाक्रम	जैसा क्रम है	यथाविधि	जैसी विधि निर्धारित है
यथास्थिति	जैसी स्थिति है	यथानुरूप	उसी के अनुरूप
यथोचित	जैसा उचित है वैसा	प्रतिध्वनि	ध्वनि की ध्वनि
यथामति	जैसी मति (बुद्धि) है	प्रतिदिन	हर दिन
यथायोग्य	जो जितना योग्य है	प्रतिक्षण	हर क्षण
प्रत्यक्ष	अक्षि (ऑख) के आगे	प्रतिपल	हर पल
समक्ष	अक्षि के सामने	प्रत्येक	हर एक

2. तत्पुरूष समास - जिस समास में कर्त्ता और सम्बोधन का छोड़कर किसी कारक का चिह्न लुप्त हो, जेसे - (अस्त को गत)। विद्याविहीन (विद्या से विहीन)। रसोईघर (रसोई का घर)। जन्मांध (जन्म से अंधा) कलानिपुण (कला से निपुण। भू-पतित (भू पर पतित) । चिड़िमार (चिड़ियों को मारने वाला)। यशोडभिलाषी (यश का अभिलाषी)। मनसिज (मनसि+ज = मन में उत्पन्न हुआ)। पदच्युत (पद से च्युत)। गुरू-दक्षिणा (गुरू के लिए दक्षिणा। यहॉ उदाहरण में रेखांकित कारक चिह्न है। जिसका समास बनाते समय लोप हो जाता है। अन्य उदाहरण निम्नानुसार है

समास	**समास विग्रह**	**समास**	**समास विग्रह**
विरोधजनक	विरोध को जन्म देनेवाला	आपत्तिजनक	आपत्ति को जन्म देनेवाला
स्वर्गग्रस्त	स्वर्ग को प्राप्त	हस्तगत	हस्त को गया हुआ
दिलतोड़	दिल को तोड़नेवाला	जेबकतरा	जेब को कतरनेवाला

शरणागत	शरण को आया हुआ	गिरहकट	गिरहह (गाँठ) को
चिड़ीमार	चिड़ी को मारनेवाला		काटनेवाला
मुँहतोड़	मुँह को तोड़नेवाला	गगनचुंबी	गगन को चूमनेवाला
प्राप्तोदक	उदक (जल) को प्राप्त तक	सर्वज्ञ	सर्व (सब) को जाननेवाला
तिलकुटा	तिल को कूटकर बनाया हुआ	नरभक्षी	नरों को भक्षित करनेवाला
		स्याहीचूस	स्याही हो चूसनेवाला
जगसुहाता	जग को सुहानेवाला	कनकटा	कान को कटवाया हुआ
संकटापन्न	संकट को प्राप्त आपन्न	विद्युत्मापी	विद्युत् को मापनेवाला
विदेशगमन	विदेश को गमन	परलोकगमन	परलोक को गमन
दोषमुक्त	दोष से मुक्त	जलरिक्त	जल से रिक्त
जन्मरोगी	जन्म से रोगी	गर्वशून्य	गर्व से शून्य
पदच्युत	पद से व्युत	धर्मविरत	धर्म से विरत
त्रुटिहीन	त्रुटि से हीन	वीरविहीन	वीर से विहीन

3. कर्मधारय समास - जहां दो शब्दों में विशेष्य- विशेषण हो या उपमान सम्बन्ध हो, जैसे - घनश्याम (धन सा श्याम)। चन्द्रमुख (चन्द्र सा मुख)। मुख-कमल (मूख रूपी कमल)। प्राण-प्रिय (प्राणों के समान प्रिय है जो)। जीर्णकुटी (जीर्ण है कुटी जो)। परम सुन्दर (परम है सुन्दर हो। सुसंवाद (सु =अच्छा) है संवाद जो। कुपुत्र (कुत्सित पुत्र है जो)। महापुरूष (महान् है पुरूष जो)। नीलकमल (नील है कमल जो) अन्य उदाहरण इस प्रकार है -

समास	**समास- विग्रह**	**समास**	**समास- विग्रह**
नीलोत्पल	नील है जो उत्पल (कमल)	कुमाररगंधर्व	कुमार है जो गंधर्व
नीलकमल	नील है जो कमल	प्रभुदयाल	दलायु है जो प्रभु
रक्तलोचन	रक्त (लाल) है जो लोचन	परमाणु	परम है जो अणु
महासागर	महान् है जो सागर	हताश	हत है जिसकी आशा
महापुरूष	महान् है जो पुरूष	गतांक	गत है जो अंक
चरमसीमा	चरम तक पहुंची है जो सीमा	सद्धर्म	सत् है जो धर्म

महर्षि	महान् है जो ऋषि	परकटा	कटे हुए हैं पर जिसके
चूड़ामणि	चूड़ा (सर) में पहनी जाती है	कमतोल	कम तोलता है जो वह
जो मणि		पिछवाड़ा	पीछे है जो वाड़ा
प्राणप्रिय	प्रिय है जो प्राणों को	बहुसंख्यक	बहुत है संख्या जिनकी वे
शुभागमन	शुभ है जो आगमन	सद्बुधि	सत् है तो बुद्धि
नवयुवक	नव हैं जो युवक	अल्पाहार	अल्प है जो आहार
सदाशय	सत् है जिसका आशय	मंद बुद्धि	मंद है जिसकी बुद्धि

4. द्विगु समास - जिस समास में पहला शब्द संख्या वाचक हो और पूरे शब्द से एक समूह का बोध हो, जैसे -नवरत्न (नौ रत्नों का एक समूह)। पंसेरी (पांच सेर का एक समूह)। सप्तर्षि (सप्त ऋषियों का एक समूह) नवग्रह (नवग्रहों का समूह) त्रिभुवन (तीन भवनों का एक समूह)। इसी प्रकार अठन्नी, चारपाई, पंचामृत, सतसई, चौराहा, आदि। अन्य उदाहरण इस प्रकार है

समास	**समास -विग्रह**	**समास**	**समास -विग्रह**
एंकाकी	एक अंक का (नाटक)	दुमट	दो प्रकार की मिट्टी
एकतरफा	एक ही तरफ है जो	द्विगु	दो गायो का समाहार
एकतंत्र	एक (राजा) का तंत्र		(समास की एक कोटि)
इकट्ठा	एक जगह स्थित	दोपहर	दो पहर (प्रहर) के बाद
इकलौता	एक ही है जो		का समय
त्रिपाठी	तीन पाठों (तीन वेदों के)	दुगुना	दो बार गुना
	को जाननेवाला	दुमंजिला	दो हैं जिसकी मंजिल
त्रिवेणी	तीन वेणियों (धाराओ)	दुबारा	दो बार
	का संगम-स्थल	दुसूती	दो है जिसके सूत (धागे)
त्रिभुवन	तीन भुवन (संसार) का	दुनाली	दो नालवाली
	समाहार	दुराहा	दो राहों का समाहार

5. द्वन्द्व समास - जहां दो शब्दों के बीच में और, या, अथवा का चिह्न लुप्त हो, वहां द्वन्द्व समास होता है। जेसे- जलवायु (जल और वायु)। भाई-बहन (भाई और बहन)। सीता-राम (सीता और राम)। उत्काषपिकर्ष (उत्कर्ष या अपकर्ष) जय-पराजय (जय या पराजय)। हानि-लाभ (हानि या

लाभ)। इसी प्रकार सुख-दुःख, पान-फूल, पाप-पुण्य, कील-काँटा, नव-शिख, अन्न-जल, हरि-हर, ब्रह्मा-विष्णु-महेश आदि। द्वन्द्व समास है।

6. **बहुव्रीहि समास-** जहां दोनों शब्दों का ही अर्थ प्रधान न हो, बल्कि दोनों शब्द मिलकर या तो एक विशेष अर्थ का बोध कराये या किसी अन्य शब्द के विशेषण बन जावें, वहां बहुव्रीहि समास होता है। जेसे-नीलकण्ठ (नीला है कण्ड जिसका अर्थात शिवजी)। बारहसींगा (बारह है सींग जिसके, ऐसा एक पशु), पंचानन (पाँच है आनन जिसके, शिवजी या सिंह)। लम्बोदर (लम्बा है उदर जिसका, गणेश जी)। नकटा (नाक है कटी हुई जिसकी, ऐसा कोई स्त्री) पंकज (पंक से जो पैदा हुआ है, कमल)। चतुर्भुज (चार है भुजा जिसके, विष्णु)। अत: यहां नीलकण्ठ, बारहसिंहा, पंचानन, लम्बोदर, नकटा ओर पंकज और चतुर्भुज आदि शब्द बहुव्रीही समास है।

कर्मधारय और बहुव्रीहि का अन्तर - कर्मधारय समास में समस्त पद विशेष्य (संज्ञा) होती है और बहुव्रीहि में समस्त पद विशेषण होता है। जैसे -

पीताम्बर - पीत है अम्बर जो अर्थात् पीला कपड़ा - विशेष्य (कर्मधारय)

पीताम्बर - पीत है अम्बर जिसका अर्थात् कृष्ण - विशेषण (बहुव्रीहि)

उदाहरण - 'पीताम्बर पहने घनश्याम' में पीताम्बर कर्मधारय है, 'पीताम्बर भगवान कृष्ण' में पीताम्बर बहुव्रीहि है। इसी प्रकार, 'मोहन एक सच्चरित्र छात्र है' में 'सच्चरित्र' बहुव्रीहि है। 'उसने अपने सच्चरित्र से सबको प्रभावित कर दिया' में 'सच्चरित्र' कर्मधारय है।

द्विगु और बहुव्रीहि का अन्तर- द्विगु समास में संख्या बोधक शब्द से संख्या का बोध होता है, किन्तु बहुव्रीहि में समस्त पद का अर्थ ही भिन्न हो जाता है, जिसका संख्या से कोई सम्बन्ध नहीं रहता, जैसे - **शंकर के त्रिलोचन को देखकर कामदेव कॉप उठा'** में 'त्रिलोचन' में द्विगु समास है, यहॉ इसका विग्रह 'तीन लोचनों का एक समूह है। त्रिलोचन भगवान् शंकर ने **तांडव नृत्य किया** में त्रिलोचन' में बहुव्रीहि समास है, इसका विग्रह होगा- तीन है लोचन जिनके। इसमें संख्या को कोई महत्व नही।

5.4 उपसर्ग

उपसर्ग वे शब्दांश है जो शब्दों के पूर्व लगकर उनके अर्थ में विशेषता उत्पन्न कर देते है, जैसे अनुकरण, पराजय इत्यादि अनुकरण में 'अनु' पराजय में 'परा' उपसर्ग है। उपसर्ग लगाने की प्रथा प्रायः सभी भाषाओं में है।

इसे समझने हेतु निम्नलिखित उदाहरण दिए जा रहे हैं -

(क) संस्कृत - उपसर्ग (अति, अधि, अन्, अव, परि, अप, प्र, सि, उप, सु:, दु:, कु:, वि आदि संस्कृत के उपसर्ग है)

उपसर्ग सहित	व्युत्पन्न	उपसर्ग सहित मूल शब्द	व्युत्पन्न शब्द

अति+रिक्त	अतिरिक्त	अनु+करण	अनुकरण
अधि+कार	अधिकार	अप-यश	अपयश
अन्+अन्तर	अनन्तर	अभि+मान	अभिमान
अव+नति	अवनति	सं+योग	संयोग
परि+वर्तन	परिवर्तन	वि+हार	विहार
प्र+कोप	प्रकोप	प्रति+निधि	प्रतिनिधि
निः+काम	निष्काम	उत्+कर्ष	उत्कर्ष
सह+योग	सहयोग	अधः+पतन	अधःपतन
उप+कार	उपकार	दुः+गम	दुर्गम
सुःयोग	सुयोग	कु+पुत्र	कुपुत्र

(ख) हिन्दी - उपसर्ग

उपसर्ग सहित	व्युत्पन्न	उपसर्ग सहित मूल शब्द	व्युत्पन्न शब्द
भर+पूर	भरपूर	अध+मरा	अधमरा
अन+जान	अनजान	अ+छूता	अछूता
स+पूत	सपूत	कु+ठोर	कुठोर
सु+डोल	सुडौल	नि+डर	निडर
अप+सगुन	अपसगुन	औ+गुन	औगुन

(ख) उर्दू- उपसर्ग

उपसर्ग सहित	व्युत्पन्न शब्द	उपसर्ग सहित मूल शब्द	व्युत्पन्न शब्द
गैर+हाजिर	गैरहाजिर	बा+कायदा	बाकायदा
बद+नाम	बदनाम	दर+असल	दरअसल
ना+लायक	नालायक	हर+दम	हरदम
कम+जोर	कमजोर	ला+सानी	लासानी
बे+वकूफ	बेवकूफ	खुश+हाल	खुशहाल

(ख) अंग्रेजी- उपसर्ग

प्री+वार	प्रीवार

इल्+लीगल	इल्लीगल	नान्+सैंस	नान्सैंस
अन्+काइन्ड	अन्काइण्ड	री+राइट	रीराइट
इम् +प्रापर	इम्प्रापर	इन+जस्टिस	इनजस्टिस

5.5. प्रत्यय

प्रत्यय वे शब्दांश है जो शब्दों के अन्त में लगकर उनके अर्थ में विशेषता उत्पन्न कर देते है, प्रत्यय दो प्रकार के है - (क) कृत् - जो क्रिया के अन्त में लगे, जैसे चढ़ना+आवा =चढ़ावा, गवैया, और (तद्धित) - जो संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण अन्त में लगे, जैसे - रंग+ईला =रंगीला। धन+वान = धनवान्

(क) कृत् - प्रत्यय (इयत, ई, वट, इया, ओड़ा, एरा, आन इत्यादि)

प्रत्यय सहित–		व्युत्पन्न शब्द	प्रत्यय सहित –		व्युत्पन्न शब्द
क्रिया- प्रत्यय	-	कृदन्त	क्रिया-प्रत्यय-		कृदन्त
अड़ना+इयल	=	अड़ियल	उड़ना+आन	=	उड़ान
कमाना+ऊ	=	कमाऊ	सजाना+वट	=	सजावट
घुड़कना+ई+		घुड़की	खपना+त	=	खपत
भरना+हुआ	=	भरा हुआ	गाना+वाला	=	गाने वाला
खाना+वैया	=	खवैया	जड़ना+इया	=	जड़िया
चढ़ना+आवा	=	चढ़ावा	झूलना+आ	=	झूला
लूटना+एरा	=	लूटेरा	भागना+ओड़ा	=	भगोड़ा
खेलना+डी	=	खिलाड़ी	घबराना+हट	=	घबराइठ
तैरना+आक	=	तैराक	सूंघना+नी	=	सूंघनी

सूचना - खाना, पीना, पढ़ना आदि क्रियाओं में अन्त का 'ना' केवल क्रिया का चिह्न मात्र है, मूल क्रियाये खा, पी, पढ़ है और प्रत्यय इन मूल क्रियाओं के आगे ही लगाये जाते है।

(ख) तद्धित – प्रत्यय (इया, एरा, डी, ई, वान, री, आई, आ इत्यादि)

प्रत्यय सहित– व्युत्पन्न शब्द	प्रत्यय सहित – व्युत्पन्न शब्द
क्रिया-प्रत्यय-तद्धितान्त	क्रिया-प्रत्यय- तद्धितान्त
तबला+ची= तबलची	चौड़ा+आई=चौड़ाई
चाचा+एरा= चचेरा	लाठी+इया=लठिया

चटक+ईला=चटकीला	जुआ+री=जुआरी
तेल+ई = तेली	टाँग +ड़ी= टँगड़ी
लघु+त्व = लघुत्व	मधुर+ता= मधुरता
जल+द=जलद	देव+ई= देवी
धन+वान=धनवान	शिव्+आ=शिवा
गुस्सा+एला=गुसैला	लड़का+पन=लड़कपन

5.6 सारांश

प्रस्तुत इकाई में संधि, समास, उपसर्ग एवं प्रत्यय इन चार महत्वपूर्ण व्याकरणिक घटको की जानकारी दी गई। शब्द सरंचना के क्षेत्र में ये महत्वपूर्ण घटक है। दो वर्णो के पास-पास आने पर जिस वर्ण में (स्वर, व्यंजन या विसर्ग में किसी एक में) में विकार (परिवर्तन) होता है। उसी वर्ण के नाम से संधि कहलाती है। इस आधार पर संधि के तीन भेद होते है। (1) स्वर संधि (2) व्यंजन संधि और(3) विसर्ग संधि - प्रत्येक भाषा अपने में कुछ ऐसा कौशल विकसित करती है कि वह कम से कम शब्दों के प्रयोग से अधिक अर्थ व्यक्त कर सके। इसके लिए शब्द प्रयोग में संक्षिप्तता पर ध्यान दिया जाता है। कम से कम शब्दों द्वारा वहीं अर्थ को प्रकट करने के लिए समास की जानकारी आवश्यक है। शब्दांश का मूल शब्द के पहले या अंत में प्रयोग करने से क्रमशं उपसर्ग और प्रत्यय का निर्माण होता है। हिन्दी में उपसर्ग और प्रत्यय लगाकर नवीन-नवीन शब्दों का निर्माण किया जाता है इसलिए हिन्दी की शब्द निर्माणकारी संरचना से परिचित होने के लिए इनका अध्ययन महत्वपूर्ण है।

5.7 अभ्यासार्थ प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

1. संधि किसे कहते है, संधि के प्रकार का नामोल्लेख कीजिए?
2. समास की परिभाषा हुए प्रमुख भेदों का नाम लिखिए।
3. कर्मधारय समास की परिभाषा सोदाहरण लिखिए।
4. स्वर संधि के पांच भेद कौन-कौन से है।
5. कर्मधारय और बहुब्रीहि समास मं अन्तर उदाहरण के साथ स्पष्ट कीजिए।
6. उपसर्ग किसे कहते है।
7. प्रत्यय किसे कहते है।
8. निम्नलिखित उपसर्गो से शब्द का निर्माण कीजिए

अप, अनु, उप, सु, नि

9. निम्नलिखित प्रत्ययों से शब्द का निर्माण कीजिए

ऊ, नी, आ, एरा, आन

10. निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग छांटकर अलग से लिखिए। नालायक, प्रकोप, सुपुत्र, खुशहाल, अधूरा

11. निम्नलिखित शब्दों में से प्रत्यय छांटकर अलग से लिखिए –

जुआरी, घबराहट, चमकीला, चढ़ावा, लुटेरा

12. सत्याग्रह शब्द में कौन-सी संधि है -

(अ) गुण संधि (ब) दीर्घ संधि

(स) वृद्धि संधि (द) यण संधि

13. बीजांकुर का संधि विच्छेद बताइए-

(अ) बीज + अंकुर (ब) बीजान+कुर

(स) बी + जांकुर (द) बीजांकु + र

14. मिलान कीजिए -

लम्बोदर	-	द्विगु समास
राजमहल	-	द्वन्द्व समास
तिराहा	-	अव्ययी भाव समास
दिन-रात	-	बहुब्रीहि समास
यथासंभव	-	तत्पुरूष समास

5.8 संदर्भग्रंथ

1 डॉ. धीरेन्द्र वर्मा: नवीन हिन्दी व्याकरण, हिन्दी मंदिर, इलाहाबाद

2 कामता प्रसाद गुरू: हिन्दी व्याकरण, काशी नागरी प्रचारिणी वाराणसी

3 पण्डित श्रीलाल, भाषा चन्द्रोदय (भारतवर्षीय हिन्दी भाषा का व्याकरण)

4 धीरेन्द्र वर्मा: हिन्दी भाषा का इतिहास, हिन्दुस्तान अकादमी इलाहाबाद।

5. किशोरीदास वाजपेयी: हिन्दी शब्दानुशासन, नागरी प्रचारिणी सभा. वाराणसी 1958

6. किशोरीदास वाजपेयी: भारतीय भाषा विज्ञान, चौखम्भा विद्या भवन वाराणसी 1959

7. किशोरीदास वाजपेयी: हिन्दी की वर्तनी एवं शब्द विश्लेषण, नागरी प्रचारिणी सभा. वाराणसी 1968

इकाई – 6

हिन्दी का शब्द ज्ञान

इकाई की रूपरेखा

6.0 उद्देश्य

6.1 प्रस्तावना

6.2 पर्यायवाची शब्द

6.3 अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

6.4 शब्द युग्म

6.5 विलोम शब्द

6.6 सारांश

6.7 अभ्यास प्रश्न

6.8 संदर्भ ग्रंथ

6.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

- हिन्दी भाषा की शब्द सम्पदा की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- इस संदर्भ में पर्यायवाची शब्द, वाक्यांश शुद्धि शब्द, विलोम शब्द और शब्द युग्म आदि की जानकारी प्राप्त कर शब्द ज्ञान के कौशल को विकसित करेंगे।

6.1 प्रस्तावना

इससे पूर्व इकाई संख्या 5 में आपने हिन्दी भाषा के शब्द संरचना की जानकारी प्राप्त की है। किसी भी विकासमान भाषा के लिए शब्द भण्डार का सम्पन्न होना अत्यन्त आवश्यक है। पयार्यवाची, युग्मशब्द, विलोम शब्द, वाक्यांश सूचक शब्दों की जानकारी ओर उनके प्रयोग अभ्यास से शब्द ज्ञान का वृद्धि विस्तृत होता है। इसमें उपयुक्त शब्द को चयन करने की क्षमता विकसित होती है। पर्यायवाची शब्द, वाक्यांश सूचक शब्द, विलोम शब्द एवंशब्द युग्म की जानकारी से आपकी मौखिक और लिखित दोनों

प्रकार की अभिव्यक्तियॉं प्रभावी बनती है। अतः इन सभी की जानकारी प्राप्त करना विद्यार्थी की प्रथम आवश्यकता है।

6.2 पर्यायवाची शब्द

भारतीय परम्परा को व्यक्त करने वाले हिन्दी संस्कृत के पर्यायवाची शब्दों की जो अमूल्य धरोहर हमें प्राप्त है, उनका विद्यार्थियों को अवश्य ज्ञान होना चाहिए। पर्यायवाची शब्द और पर्यायवाची दो शब्दों से मिलकर बना है जिसका क्रमशः अर्थ है - समान और वचन अर्थात् पर्यायवाची शब्द से आशय होता है -

समान अर्थ वाला शब्द। ये समान अर्थ छायाओं के रूप में होते है जिनका संदर्भ के अनुसार अलग अलग प्रयोग भी होता है। सामान्यतः कोई भी भाषा एक ही अर्थ के लिए अधिक शब्दों को वहन नहीं करती किन्तु एक अर्थ की विभिन्न छायाओं वाले लगभग पर्याय से शब्द अवश्य होते है। यह अवश्य है कि पर्यायवाची शब्दों का भी संदर्भ के अनुसार अलग अलग अर्थ में प्रयोग होता है।

हिन्दी में पर्यायवाची शब्द निम्नलिखित है -

1	अंधकार	-	अँधेरा, तक, तिमिर, ध्वांत, अंधियारा
2	अतिथि	-	मेहमान, अभ्यागत,पाहुन, आगंतुक
3	अमृत	-	पीयूष, सुधा, अमिय, सोम, सुरभोग, अमी
4	अश्व	-	घोड़ा, तुरंग, बाजी,हय, घोटक, सैंधव
5	आँख	-	नेत्र, नयन, चक्षु, दृग, लोचन
6	आकाश	-	नभ, अम्बर, गगन, व्योम, अनंत, खगोल, नाक, शून्य
7	इंद्र	-	देवराज सुरपति, मघवा, देवेश, देवन्द्र, पुरन्दर,सुरेश, अमरपति, शचीपति
8	ईश्वर	-	जगदीश, परमात्मा, परमेश्वर, प्रभु, स्वयंभू, ब्रह्म, स्रष्टा, जगन्नाथ
9	उपवन	-	बाग, बगीचा, वाटिका, गुलशन, उद्यान
10	कनक	-	कंचन, सोना, स्वर्ण, हिरण्य , हेम, हाटक
11	कमल	-	सरोज,जलन, पंकज , इंदीवर,नलिन, अंबुज , नीरज, तामरस, सारंग, राजीव, अरविंद, अब्ज, पुंडरीक
12	कपड़ा	-	वस्त्र,चीर,बसन, अंबर , पट, परिधान, पोशाक
13	कल्पवृक्ष	-	देववृक्ष, सुरतरू, कलपतरू, कलपद्रुम

14 कर्ण - सूर्यपुत्र, सूतपुत्र, राधेय, अंगराज

15 कामदेव - मदनख् मनसिज, रतिपति, प्रद्यूमन , मीनकेतु, पुष्पधन्वा, अवंग, मनोज

16 कृष्ण - बनवारी, श्याम, मोहन, माधव, मुरलीधर, गोपीनाथ, दामोदर, नंदलाल, मुंकुद, कन्हैया, गिरिधर

17 कोयल - काक, पिक, बंसतदूत, वनप्रिय, श्यामा, कोकिल

18 गंगा - मंदाकिनी, भागीरथी, देवनदी, त्रिपथगा, सुरसरि, विष्णुपदी, जह्नतनया

19 गजानन - गणेश, विनायक, लंबोदर, गजवदन, मूषकवाहन, वक्रतुंड, गणपति

20 गाय - धेनु, सुरभी, गौ, गौरी, गैया, गऊ

21 चाँद - चन्द्र, चंद्रमा, शशि, निशाकर, हिमांशु, सुधांशु, सुधाकर,राकेश, मृगांक, इंदु,, मयंक, राकापति, रजनीपति

22 जवानी - यौवन, तरूणाई, युवावस्था

23 तालाब - सर, तड़ाग, पदमाकर, जलाशय, पुष्कर, सरोवर, ताल

24 देवता - देव, सूर, अमर, अजर, विवुध, भगवान

25 दानव - राक्षस, असुर, दैत्य, दनुज, निशाचर, रजनीचर, दमुल

26 दूध - पय, क्षीर, दुग्ध, गोरस

27 दीपक - दीप, प्रदीप, दीया, ज्योति, गृहमणि

28 धरती - पृथ्वी, धरा, वसुंधरा, मेदिनी, इला, भू, धरणी, भूमि, मही, अचला, अवनी

29 धीरज - धैर्य, सब्र, धीरता, संतोष, तोष

30 नदी - सरिता, आपगा, शैलजा, सिंधुगामिनी , तटिनी, वाहिनी

31 निशा - रात, रात्रि, रजनी, निशि, यामिनी, रैन

32 नारी - स्त्री, महिला, औरत, वामा, रमणी, अबला

33 पिता - जनक, तात्, पितृ

34 पहाड़ - गिरी, पर्वत, भूधर, अचल,शैल, नग

35 पक्षी - खग, विहग, लभचर, विहंग

36 पुत्र - सुत, तनय, पूत, बेटा, लाल, वत्स, तनुज

37 पुत्री - सुता, तनया, आत्मजा, नंदिनी, दुहिता

38	प्रेम	-	स्नेह, अनुराग, प्रीति, राग
39	परिवार	-	कुटुंम, कुलबा, घराना, खानदान
40	फूल	-	पुष्प, कुसुम, सुमन, प्रसून,गुल

6.3 अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

वाक्यांश सूचक शब्द

शब्द के इस वर्गीकरण में - एक वाक्यांश या वाक्य के बदले को जाने वालों शब्दों को सम्मिलित किया जाता है। कम से कम शब्दों के माध्यम से अधिकाधिक अर्थ को व्यक्त करने की दृष्टि से इस प्रकार के शब्दों की जानकारी आवश्यक है। किसी गद्यांश के संक्षिप्तीकरण में भी ऐसे शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए।

किसी भाषा में प्रयुक्त होने वाले कुछ ऐसे शब्द निम्नानुसार है -

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

1	सबसे आगे रहने वाला	-	अग्रणी
2	जिसका खंडन न किया जा सके	-	अखंडनीय
3	जिसका पता न हो	-	अज्ञात
4	जो इंद्रियों (गो) द्वारा न जाना जा सके	-	अगोचर
5	जिसकी गिनती न की जा सके	-	अगणित
6	जिसकी गहराई का पता न लग सके	-	अथाह
7	जिसे देखा ना जा सके	-	अदृश्य
8	जिसके बराबर दूसरा न हो	-	अद्वितीय
9	वह स्त्री जिसके पति ने दूसरी शादी कर ली है	-	अध्यूढ़ा
10	धर्मशास्त्र के विरूद्व कार्य	-	अधर्म
11	जो अबतक से संबंध रखता है	-	अधुनातन
12	जिसका कोई आदि /प्रारंभ न हो	-	अनादि
13	जिसकी उपमा न दी जा सके	-	अनुपम
14	परम्परा से चली आई कथा	-	अनुश्रुति
15	जो नियमानुसार न हो	-	अनियमित

16	मूलकथा में आने वाला प्रसंग, लघुकथा	-	अंतकथा
17	जिसका निवारण न किया जा सके	-	अनिवार्य
	जिसे करना आवश्यक हो -		
18	जिसे बुलाया न गया हो	-	अनाहूत
19	अविवाहित महिला	-	अनूढा
20	जो अनुग्रह (कृपा) से युक्त हो	-	अनुगृहीत
21	पीछे पीछे चलने वाला - अनुगामी		
22	अनुकरण करने योग्य (कार्य का अनुकरण)	-	अनुकरणीय
23	महल का वह भाग जहाँ रानियाँ निवास करती है	-	अंतःपुर
24	जो कुछ नहीं जानता हो	-	अज्ञ/अज्ञानी
25	जो पहले पढ़ा न गया हो	-	अपठित
26	जो धन को व्यर्थ ही खर्च करता हो	-	अपव्ययी
27	जिस पर अपराध करने का अरोप हो	-	अभियुक्त
28	जिस वस्तु का मूल्य न आंका जा सके	-	अमूल्य
29	जो कम जानता हो	-	अल्पज्ञ
30	जो इस लोक का ना हो	-	अलौकिक
31	जो विधि या कानून के विरूद्ध हो	-	अवैध
32	जिसका विभाजन न किया जा सके	-	विभाज्य
33	जो बिना वेतन के कार्य करता हो	-	अवैतनिक
34	जो मृत्यु के समीप हो	-	आसन्नमृत्यु
35	जो कार्य अवश्यहोने वाला हो	–	अवश्यम्भावी
36	जो शोक करने योग्य नहीं हो	-	अशोक्य
37	जो ईश्वर में विश्वास रखता हो	-	अस्तिक
38	जो मृत्यु के समीप हो	-	आसन्नमृत्यु
39	जो शीघ्र प्रसन्न हो जाए	-	आशुतोष
40	जो अतिथि का सत्कार करता हो	-	अतिथेय/मेजबान

41	जिसका संबंध आत्मा से तो	-	आध्यात्मिक
42	वह जिस पर हमला किया गया हो	-	आक्रांत
43	किसी स्थान के सर्वाधिक पुराने निवास	-	आदिवासी
44	पर्वत के नीचे तलहटी की भूमि	-	उपत्यका
45	जिसने अपनण ऋण पूरा चुका दिया हो	-	उऋण
46	ऊपर की ओर जाने वाला	-	ऊर्ध्वगामी
47	बर्तन बेचेने वाला	-	कसेरा
48	भूख से पीड़ित	-	क्षुधार्त
49	शरीर का व्यापार करने वाली स्त्री	-	गणिका
50	आकाश को स्पर्श करने वाला	-	गगनचुंबी
51	अपनी इचछा के अनुसार लिया गया	-	स्वैच्छिक
52	जो अपने ही अधीन हो	-	स्वाधीन
53	सत्यके लिए संघर्ष/आग्रह	-	सत्याग्रह
54	सब का समान भाव से देखने वाला	-	समदर्शी
55	मांसयुक्त भोजन	–	सामिश
56	आकाश से युक्त (मूर्तिमान)	-	साकार
57	जिसका चरित्र अच्छा हो	-	सच्चरित्र
58	जो साथ पढ़ा हो	-	सहपाठी
59	जो अपना हित सोचता है	-	स्वार्थी
60	जो सत्य (बाऐं) हाथ से भी काम कर लेता हो	-	सव्यसाची

6.4 शब्द युग्म

शब्द-युग्म - शब्द युग्म का अर्थ है शब्दों का जोड़ा (शब्दों की लिखावट) हिन्दी में कुछ शब्द ऐसे भी है जिनकी वर्तनी और उच्चारण में मामूली सा अन्तर है किन्त उनके अर्थ में बड़ी भिन्नता है। इनमें से कुछ शब्दों के जोड़े बने हुए है, जो बहु प्रचलित है। ऐसे ही शब्दों को 'शब्द युग्म' कहा जाता है। समान-सा उच्चारण प्रतीत होने के कारण छात्रों को ऐसे शब्दों को अर्थ में प्रायः भ्रम हो जाता है। जिससे अर्थ का

अनर्थ हो सकता है। ऐसे शब्दों का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है ताकि उनके अन्तर से भली प्रकार परिचित होकर विद्यार्थी कोई त्रुटि न करें। यहॉ ऐसे ही कुछ शब्द और अनके अर्थ दिये जा रहे है -

1.	अलि	-	भौंरा
	आली	-	सखी
2.	अकथ	-	जिसके विषय मं कुछ न कहा जा सके
	अथक	-	जो थके नहीं
3.	अवधि	-	समय
	अवधी	-	एक भाषा विशेष
4.	आय	-	आमदनी
	आयु	-	उम्र
5.	आचार	-	आचारण
	अचार	-	खाने का एक पदार्थ
6.	अगम	-	कठिन
	आगम	-	आगमन, शास्त्र
7.	कर्म	-	कार्य
	क्रम	-	रीति
8.	चरम	-	अंतिम
	चर्म	-	खाल
9.	चित्त	-	मन
	चित्र	-	तस्वीर
10.	कटक	-	सेना
	कटुक	-	कडुआ
11.	तरणि	-	सूर्य
	तरणी	-	नाव
12.	केसर	-	अयाल
	केशर	-	सुगंधित पदार्थ

13.	कंजर	-	एक जाति विशेष
	कुंजर	-	हाथी
14	कुल	-	वंश, सब
	कूल	-	किनारा
15.	तरंग	-	लहर
	तुरंग	-	घोड़ा
16.	चिर	-	हमेशा, प्राचीन
	चीर	-	वस्त्र
17.	तप	-	तपस्या
	ताप	-	गर्मी
18.	दग्ध	-	जला हुआ
	दुग्ध	-	दूध
19.	द्रव्य	-	रतल पदार्थ, रस
	द्रव्य	-	पदार्थ, सम्पति
20.	वारि	-	जल
	वारी	-	गज बंधन
21.	प्रकार	-	तरीका
	प्राकार	-	परकोटा
22.	कोष	-	भण्डार
	कोश	-	शब्द कोश
23.	गत	-	गया हुआ
	गति	-	समय, दशा
24.	सबल	-	शक्तिशाली
	शबल	-	चितकबरा
120.	द्विप	-	हाथी
	द्वीप	-	टापू

	द्विज	-	ब्रह्मण, पक्षी दाँत
25.	सकल	-	समस्त
	शकल	-	टुकड़ा
26	शिव	-	महादेव
	शिवि	-	एक राजा
27	भवन	-	घर
	भुवन	-	संसार
28	वारिद	-	बादल
	वारिधि	-	समुद्र
29	सुत	-	पुत्र
	सूत	-	सारथी, धागा
30.	वस्तु	-	चीज
	वास्तु	-	मकान
31.	नंदी	-	बैल
	नान्दी	-	मंगलाचरण
32.	पानी	-	जल
	पाणि	-	हाथ
33.	नगर	-	शहर
	नागर	-	नगर का, चतुर
34.	पुरूष	-	आदमी
	परूष	-	कठोर

6.5 विलोम शब्द

विलोम शब्द का अर्थ है विपरीत। उल्टा। विलोम शब्द वे होते है जो शब्द के अर्थ से विपरीत या उल्टा अर्थ बताए जैसे रात का दिन किन्तु राजा का रानी और भाई का बहन विलोम नहं है। यह तो केवल लिंग परिवर्तन है। कुछ महत्वपूर्ण विलोम शब्द इस प्रकार है।

शब्द	विलोम शब्द

1	अर्थ	-	अनर्थ
2	अस्त्र	-	उदय
3	अमृत	-	विष
4	अग्रज	-	अनुज
5	अपमान	-	सम्मान
6	अनुकूल	-	प्रतिकूल
7	अवनि	-	अंबर
8	अनिवार्य	-	ऐच्छिक/वैकल्पिक
9	अकाल	-	सकाल
10	आकाश	-	पाताल
11	अतिवृष्टि	-	अल्पवृष्टि,अनावृष्टि
12	अर्वाचीन	-	प्राचीन
13	अल्पज्ञ	-	बहुत
14	आदर	-	निरादर
15	अनुराग	-	विराग
16	आदि	-	अंत
19	अनुरक्त	-	विरक्त
20	आवश्यक	-	अनावश्यक
21	अल्पप्राण	-	महाप्राण
22	आरंभ	-	अन्त
23	आस्तिक	-	नास्तिक
24	अपराधी	-	निरपराध
25	आशा	-	निराशा
26	उचित	-	अनुचित
27	आनन्द	-	शौक
28	उदार	-	अनुदार

29	आधुनिक	-	प्राचीन
30	उन्नति	-	अवनति
31	उत्तम	-	अधम
32	उत्तीर्ण	-	अनुत्तीर्ण
33	उत्साह	-	निरूत्साह
34	इच्छा	-	अनिच्छा
35	खुशबू	-	बदबू
36	कृतज्ञ	-	कृतध्न
37	कृपा	-	कोप
38	गृहस्थ	-	सन्यासी
39	चैतन	-	अचैतन
40	निर्गुण	-	सगुण
41	दुर्जन	-	सज्जन
42	परतंत्र	-	स्वतंत्र
43	पराधीन	-	स्वाधीन
44	यश	-	अपयश
45	प्रेम	-	घृणा
46	व्यक्ति	-	समाज
47	श्रोता	-	व्यक्ता
48	बात	-	विवाद
49	लोक	-	परलोक
50	विद्धान	-	मूर्ख
51	विजय	-	पराजय
52	लंबा	-	चौड़ा
53	विख्यात	-	कुख्यात
54	विदाई	-	स्वागत

55	व्यष्टि	-	समष्टि
56	शांत	-	अशांत
57	सजीव	-	निर्जीव
58	ससीम	-	असीम
59	संधि	-	विग्रह
60	साकार	-	निराधर
61	समास	-	व्यास
62	साक्षर	-	निरक्षर
63	साधु	-	असाधु
64	सुरीला	-	बेसुरा
65	सुलभ	-	दुर्लभ
66	स्मरण	-	विस्मरण
67	सुंदर	-	असुंदर
68	सुमति	-	कुमति
69	सूक्ष्म	-	स्थूल
70	सौभाग्य	-	दुर्भाग्य
71	सृजन	-	विनाश
72	सृष्टि	-	प्रलय
73	स्तुति	-	निंदा
74	हार	-	जीत
75	हित	-	अहित
76	हिंसा	-	अहिंसा
77	क्षणिक	-	शाश्वत
78	ज्ञान	-	अज्ञान
79	क्षमा	-	दण्ड
80	समास	-	व्यास

81	संयुक्त	-	वियुक्त
82	संतोष	-	असंतोष
83	शुभ	-	अशुभ
84	शुष्क	-	आर्द्र
85	श्लील	-	अश्लील
86	श्याम	-	श्वेत
87	विपत्ति	-	सम्पत्ति
88	वियोग	-	सयोग
89	विधवा	-	सधवा
90	विशेष	-	सामान्य
91	मृदु	-	कठोर
92	मरण	-	जीवन
93	रूदन	-	हास्य
94	राक्षस	-	देवता
95	युवा	-	वृद्ध
96	मनुज	-	दनुज
97	मानवीय	-	अमानवीय
98	मूल्यवान	-	मूल्यहीन

6.6 सारांश

हिन्दी एक जीवन्त प्रचलित भाषा है। इसमें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, अरबी, फारसी, अंग्रेजी शब्दों के साथ भारत के विभिन्न प्रांतों के शब्दों का समावेश होने से इसका शब्द भण्डार अत्यन्त विशाल एवं व्यापक हो गया है। इस शब्दावली के ओर विस्तृत ज्ञान के लिए आपने प्रस्तुत इकाई में पर्यायवाची, विलोम शब्द, युग्म के साथ ही साथ अनेक शब्दों के लिए एक शब्द निर्माण की प्रक्रियाओं को भी

समझा है और अभ्यास किया है। हिन्दी की शब्दावली का यथेष्ट ज्ञान प्राप्त करने में यह अभ्यास विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है।

6.7 अभ्यासार्थ प्रश्न

1 विलोम शब्द की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

2 वाक्यांश सूचक शब्द का अर्थ बताते हुए इसकी उपयोगिता का उल्लेख कीजिए।

3 निम्नलिखित शब्द युग्मों में अर्थगत अन्तर लिखिए

1 कर्म - क्रम

2 अवधि - अवधी

3 तरणि - तरणी

4 कंजर कुंजर

5 पुरूष - परूष

4 निम्नलिखित शब्दो के तीन तीन पयार्य लिखिए

1 कृष्ण

2 आँख

3 अमृत

4 पुत्र

5 रात्रि

5 निम्नांकित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए -

राजा, उत्साह, अमृत, प्रेम, मूर्ख, अनुज, साक्षर, लोक

6 निम्नांकित वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए -

1 पीछे पीछे चलने वाला

2 जो कम जानता हो

3 जिसकी उपमा न दी जा सके

4 आकाश को स्पर्श करने वाला

5 जिसका चरित्र अच्छा हो

6.8 संदर्भ ग्रंथ

1 डॉ. धीरेन्द्र वर्मा: नवीन हिन्दी व्याकरण, हिन्दी मंदिर, इलाहाबाद

2 कामता प्रसाद गुरू: हिन्दी व्याकरण, काशी नागरी प्रचारिणी वाराणसी

3 पण्डित श्रीलाल, भाषा चन्द्रोदय (भारतवर्षीय हिन्दी भाषा का व्याकरण)

4 धीरेन्द्र वर्मा: हिन्दी भाषा का इतिहास, हिन्दुस्तान अकादमी इलाहाबाद।

5. किशोरीदास वाजपेयी: हिन्दी शब्दानुशासन, नागरी प्रचारिणी सभा. वाराणसी 1958

6. किशोरीदास वाजपेयी: भारतीय भाषा विज्ञान, चौखम्भा विद्या भवन वाराणसी 1959

7. किशोरीदास वाजपेयी: हिन्दी की वर्तनी एवं शब्द विश्लेषण, नागरी प्रचारिणी सभा. वाराणसी 1968

इकाई -7

विराम चिह्न

इकाई की रूपरेखा

7.0 उद्देश्य

7.1 प्रस्तावना

7.2 विराम चिह्न का अर्थ व प्रकार

7.3 अन्य विराम चिह्न

7.4 सारांश

7.5 अभ्यासार्थ प्रश्न

7.6 संदर्भ ग्रन्थ

7.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप

- विराम चिह्न की परिभाषा और उनके भेदों की जानकारी प्राप्त कर सकेगें।
- वाक्य में विराम चिह्ननों का प्रयोग कर सकेगें।
- विराम चिह्न को पहचान कर उनका भेद बता सकेगें
- अपने भाषा अभिव्यक्ति के कौशल का विकास कर सकेगें।

7.1 प्रस्तावना

हिन्दी व्याकरण में विचारों को प्रकट करने के लिए, उनमें स्पष्टता और शुद्ध उच्चारण के साथ-साथ उचित ठहराव भी जरूरी है तभी आप अपनी बात दूसरों तक पूरे अर्थ के साथ पहुंचा सकते है। इसके लिए विराम चिह्नों का ज्ञात आवश्यक हे। प्रस्तुत इकई में चिराम चिह्नों के प्रकार और उपयोग की जानकारी दी जा रही है।

7.2 विराम चिह्न का अर्थ

हिन्दी में विराम चिह्न - विराम चिह्न का शाब्दिक अर्थ है - 'रूकना' अथवा 'ठहराव'। लेखन में भावाभिव्यक्ति की स्पष्टता के लिए विराम चिह्न की आवश्यकता होती है, डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार - '' जो चिह्न बोलते या पढ़ते समय रूकने का संकेत देते है, उन्हें विराम चिह्न कहते है,'' विराम

चिह्नों में अब तक अनेक चिह्न सम्मिलित कर लिए गए है यद्यपि सभी का काम रूकने का संकेत देना नहीं है तथापि विराम चिह्नों के अन्तर्गत परम्परा से प्रयोग रहने के कारण इन्हें भी विराम चिह्नो के रूप में ही जाना जाता है।

अर्थ के स्पष्टीकरण में विराम चिह्न की कितनी उपयोगिता है, यह निम्नलिखित उदाहरण से स्पष्ट हो जाता है, राम स्कूल गया, यह एक सामान्य वाक्य है किन्तु विराम चिह्न लगाने के बाद यह 'प्रश्नवाचक' और आश्चर्यबोधक' भावों का अलग-अलग बोध कराता है -

1. राम स्कूल गया?
2. राम स्कूल गया?
3. राम स्कूल गया?

इसके अतिरिक्त विराम चिह्न के प्रयोग से उच्चारण और वाचन की गति में भी सुविधा रहती है।

प्रकार - हिन्दी भाषा में विराम चिह्न के छः भेद और उनके चिह्न इस प्रकार है

	विराम के भेद	चिह्न
1.	पूर्ण विराम	(।)
2.	अर्द्ध विराम	(:)
3.	अल्प विराम	(,)
4.	योजक चिह्न	(-)
5.	प्रश्नवाचक चिह्न	(?)
6.	विस्मय सूचक चिह्न	(!)

उपर्युक्त विराम चिह्नों की परिभाषा और उनके प्रयोग निम्नानुसार है-

1. **पूर्ण विराम** - पूर्ण विराम का अर्थ है, पूरी तरह रूकना या ठहरना,, सामान्यतः पढ़ते समय जहॉ वाक्य की गति समाप्त हो जाय, वहाँ पूर्ण विराम का प्रयोग होता है, वाक्य छोटा हो या बड़ा प्रत्येक वाक्य की समाप्ति पर पूर्ण विराम लगाया जाना चाहिए, जैसे- वह घर गया, हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है, परिश्रम ही सफलता की कुंजी है।

   कभी-कभी किसी व्यक्ति या वस्तु का सजीव वर्णन करते समय वाक्यांशो के अन्त में पूर्ण विराम लगाया जाता है, जैसे- गोरा, रंग। गालों पर कश्मीरी सेब की सी सुर्खी, सिर के बाल न अधिक बड़े, न अधिक छोटे कानों के पास बालों में कुछ सफेदी, पानीदार बड़ी-बड़ी आँखे चौड़ा माथा।

   यहाँ व्यक्ति की मुखमुद्रा का विविध वाक्यांशों में सजीव वर्णन किया गया है, अतः ऐसे स्थलों पर पूर्ण विराम का उचित प्रयोग हुआ है।

2. **अर्द्धविराम-** इसका प्रयोग प्रायः कम होता है क्योंकि अर्द्धविराम की जगह अल्पविराम लगाकर काम चला लिया जाता है। अर्द्धविराम का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है -

(i) एक वाक्य का यदि दूसरे से सम्बन्ध हो और बात पूरी न हो तो पहले वाक्य के अन्त में अर्द्धविराम लगता है। जैसे - मैं आपका काम कर दूंगा, आप निश्चिंत रहें।

(ii) एक ही वाक्य में उदाहरण स्वरूप कई पदबन्ध होने पर अर्द्धविराम का प्रयोग होता है, जैसे -कहीं सृजन तो कहीं विनाश, कहीं मिलन तो कहीं विछोह; कहीं उत्थान तो कहीं पतन; यही प्रकृति की गति है।

(iii) कोश में एक शब्द के अलग-अलग अर्थ व्यक्त करने के लिए अर्द्धविराम का प्रयोग होता है।

3. **अल्पविराम** - हिन्दी के विराम चिह्नों में अल्पविराम का प्रयोग सर्वाधिक होता है, 'अल्प विराम' का अर्थ है थोड़ी देर के लिए रूकना या ठहरना लिखते-पढ़ते समय अनेक ऐसी भाव दशाएँ आती है जब थोड़ी देर के लिए रूकना पड़ता है, अल्पविराम निम्नलिखित परिस्थितियों में प्रयोग किया जाता है-

(i) वाक्य में जब दो ये अधिक पदो, पदांशो अथवा वाक्यों में जहाँ' और' का प्रयोग किया जा सकता हो, अल्प विराम का प्रयोग होता है।

(ii) वाक्य में जब दो से अधिक पदो, पदांशो अथवा वाक्यों में जहाँ 'और' का प्रयोग किया जा सकता हैः अल्पविराम का प्रयोग होता है, जैसे- भारत में हिन्दू, मुसलमान, सिख् और ईसाई सभी को समान अध्णिकार प्राप्त है।

आत्मा, अजर, अमर और अविनाशी है। वह रोज आता है, काम करता है और चला आता है।

(iii) भावावेश में जहाँ शब्दों भी पुनरावृत्ति होती है, वहाँ अल्पविराम का प्रयोग होता है, जैसे -

नहीं, नहीं ऐसा कभी नहीं हो सकता।

देखो, देखो, पिताजी घर लौट आए।

(iv) यदि वाक्य में कोई अन्तर्वती वाक्य खण्ड आ जाय तब अल्पविराम का प्रयोग होता है, जैसे-

आलस्य चाहें जिस रूप में हो, व्यक्ति को दरिद्र बनाता है।

क्रोध चाहें जैसा भी हो, मनुष्य को दुर्बल बनाता है।

(v) यदि वाक्यों के बीच में पर, इसीसे, इसलिए, किन्तु, परन्तु, अतः, क्योंकि जिससे तथापि आदि अवयवों का प्रयोग होता हो, वहॉ अल्पविराम लगाया जा सकता है, उदाहरण देखे-

वह निर्धन है, किन्तु बेईमान नहीं।

मैं व्यवसायी हूँ, इसलिए सफल होता हूं।

ऐसा कोई काम न करो, जिससे अवयश मिले।

वह वापस आ गया, क्योंकि बाजार बन्द था।

(v) वस्तुतः अच्छा, बस, हाँ, नहीं, सचमुच, अन्ततः आदि से प्रारम्भ होने वाले वाक्यों में इन शब्दों के बाद अल्पविराम लगता है, जैसे -

अच्छा, कब मिलेंगे,

नहीं, मैं वहाँ नहीं जाऊँगा।

4. योजक चिह्न - योजक चिह्न का प्रयोग निम्नलिखित अवसरों पर किया जाता है -

(i) द्वन्द्व समास से बने पदो में-

दिन-रात, दाल-चावल

(ii) समान अर्थ वाले युग्म शब्दों में -

रूपया-पैसा, मान-मर्यादा

(iii) विलोम शब्दों के बीच-

राजा-रंक, अपना-पराया

(iv) एक शब्द की पुनरावृत्ति में -

घर-घर, अच्छा-अच्छा

(v) निश्चित तथा अनिश्चित संख्यावाचक शब्दों में-

तीन-चार, कम-से-कम

(vi) दो शब्दों के बीच का, की के लुप्त होने पर -

लेखन-कला, जन्म-भूमि, शब्द-सागर, राम-लीला

(vii) शब्दों के बीच ही, से, का, न, का प्रयोग होने पर -

किसी-न-किसी, ज्यो-का-त्यो, आप-ही-आप, बहुत-सा

(viii) दो क्रियाओं के एक साथ प्रयुक्त होने पर -

कहना-सुनना, खाना-पीना

(ix) मूल क्रिया के साथ प्रयुक्त प्रेरणार्थक क्रिया के बीच-

सीखना-सिखाना, पीना-पिलाना

(x) दो विशेषण पदों का संज्ञा के अर्थ में प्रयोग होने पर -

काला-गौरा, मूर्ख-बुद्धिमान

5. प्रश्नवाचक-चिह्न- प्रश्नवाचक वाक्यों के अन्त में पूर्ण विराम का प्रयोग न होकर प्रश्नवाचक चिह्न (?) लगाया जाता है, जैसे-तुम कहाँ जा रही हो?, तुम्हारा क्या नाम है?

इसके अतिरिक्त अनिश्चय भाव वाले वाक्यों तथा व्यंगयोक्तियों में भी प्रश्नवाचक चिह्न लगाया जाता है, जैसे- आप शायद दिल्ली जा रहे है? भ्रष्टाचार आजकल का शिष्टाचार है, है न?

6. विस्मयोदिबोधक चिह्न- हर्ष, विषाद, विस्मय, घृणा, आश्चर्य, करूणा, भय आदि भावों को व्यक्त करने वाले वाक्यों में विस्मयादिबोधक चिह्न का प्रयोग किया जाता है, इसके साथ ही शुभकामनाएँ देने तथा व्यंग्यपूर्ण वाक्यों में भी उसका प्रयोग होता है, जैसे -

वाह! कितनी सुन्दर है यह लड़की!
भगवान तुमको दीर्घायु आयु दे!
उफ! वह इतनी नालायक है!
छिःछिः! तुम इतने गन्दे हो!

कभी-कभी एक से अधिक विस्मयादिबोधक चिह्न का प्रयोग भी एक साथ किया जाता है- राजीव गांधी का निधन! शोक!! महाशोक!!!

अन्य चिह्न - कुछ अन्य चिह्नों को भी विराम चिह्न के अन्तर्गत रखा जाता है, डॉ. भोलानाथ तिवारी ने ऐसे चिह्नों के संदर्भ में लिखा है, ''यद्यपि वास्तविक रूप में इन्हें विराम चिह्न ने कहकर 'चिह्न' कहना अधिक उपयुक्त होता है, यों शुद्ध लेखन और पठन की दृष्टि से इनकी भी जानकारी भी उपयोगी है।

7.3 अन्य विराम चिह्न

उपर्युक्त चिह्नों के अतिरिक्त कुछ ऐसे चिह्न होते हे जो शुद्ध लेखन एवं पठन की दृष्टि से उपयोगी होते है। इस तरह के विराम चिह्न निम्नांकित है -

	विराम के भेद	चिह्न
1.	विवरण चिह्न	(:-)
2.	उद्धरण चिह्न	(‘ ’)
3.	कोष्ठक चिह्न	( ), { }, [ ]
4.	संक्षप सूचक चिह्न	(.)
5.	बिन्दुरेखा	(.....)
6.	निर्देश चिह्न	(-)

इनका प्रयोग निम्नानुसार होता है -

1. विवरण चिह्न - किसी विषय को विस्तार से समझाने अथवा तथ्यों का विवरण देने के लिए संकेत रूप में विवरण चिह्न (या:-) का प्रयोग होता है, जैसे -

(1) आज की बैठक में विचारणीय तथ्य है:

(क) समाज में बढ़ता अपराध।

(ख) शिक्षा व्यवस्था में राजनीति।

(2) बीस सूत्रीय कार्यक्रम इस प्रकार है:-

(क) .....

(ख) .....

2. उद्धरण चिह्न - यह दो प्रकार के होते हैं - इकहरा (‘ ’) तथा दोहरा (‘‘ ’’) जब किसी विशेष पद, शब्द या वाक्य को उद्धरण के रूप में लिखा जाता है, तब इकहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग होता है, जहाँ किसी पुस्तक से कोई वाक्य या अवतरण ज्यों का त्यों उद्धृत किया जाता है वहाँ दुहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

पुस्तक, समाचार-पत्र, लेखक का उपनाम, कविता, कहानी का शीर्षक आदि लिखते समय इकहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग किया जाता है, जैसे - ‘रामचरितमानस’ तुलसी दास की सर्वश्रेष्ठ कृति है, ‘हिन्दुस्तान’ हिन्दी का एक प्रमुख दैनिक पत्र है, ‘अज्ञेय’ हिन्दी के श्रेष्ठ कवि थे, तिलक ने कहा था- ‘‘स्वतंत्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है’’।

3. कोष्ठक चिह्न - लेखन में सामान्यतः ( ) कोष्ठक का ही प्रयोग होता है, कोष्ठक के अन्य चिह्नों का प्रयोग गणित में किया जाता है।

वाक्य में प्रयुक्त किसी शब्द या वाक्यांश को स्पष्ट करने के लिए कोष्ठक चिह्न का प्रयोग होता है, जैसे-

अनेक भारतवासी बापू (महात्मा गाँधी) के अनन्य भक्त हैं?

गेटे (जर्मनी का एक प्रसिद्ध कवि) के कथन अत्यन्त प्रेरणाप्रद हैं।

4. संक्षेपसूचक शब्द - किसी शब्द या पद के संक्षिप्त रूप के बाद इसका प्रयोग किया जाता है, जैसे- कृ.पृ.उ. (कृपया पृष्ठ उलटिये), बी.ए. (बैचलर ऑफ आर्ट,) डॉ. (डाक्टर), डी.लिट. (डॉक्टर ऑफ लैटर्स/लिटरेचर)

5. बिन्दु रेखा - वाक्य में लुप्त, अज्ञात या लिखे न जाने योग्य अंशों को सूचित करने के लिए बिन्दु रेखा (.....) का प्रयोग किया जाता है, जैसे -

सीता पास हो जाती, परन्तु .....

इस कॉलेज में सब ..... है, परन्तु ..... नहीं है।

कथा साहित्य विशेषकर नाटकों में बिन्दुरेखा का प्रचुर प्रयोग देखा जा सकता है।

6. निर्देश चिह्न - निर्देश चिह्न (-) का प्रयोग निम्नलिखित रूप में होता है -

जैसे - इंगलैण्ड, अमेरिका, रूस, भारत आदि,

बड़े आदमियों - महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू, सुभाषचन्द्र बोस की चिन्तन पद्धतियाँ प्रायः समान थीं।

7.4 सारांश

प्रस्तुत इकाई की पढ़कर आप विराम चिह्नों की जानकारी और उनका प्रयोग करना सीख गए हैं। इनके समुचित उपयोग से आपकी भाव और अभिव्यक्ति में स्पष्टता आती है अन्यथा अर्थ का अनर्थ होने की आशंका बनी रहती है।

7.5 अभ्यासार्थ प्रश्न

1. विराम चिह्न किसे कहते है? इसके विविध भेदों का उल्लेख कीजिए?
2. हिन्दी के प्रमुख विराम चिह्न का क्या महत्व है?
3. योजक चिह्न और निर्देश चिह्न में अन्तर लिखिए।
4. पूर्ण विराम, अर्द्धविराम और अल्पविराम में अन्तर बताओ।
5. हिन्दी के सभी विरामों को उनके चिह्न के साथ लिखिए।

7.6 संदर्भ ग्रंथ

1 डॉ. धीरेन्द्र वर्मा: नवीन हिन्दी व्याकरण, हिन्दी मंदिर, इलाहाबाद

2 कामता प्रसाद गुरू: हिन्दी व्याकरण, काशी नागरी प्रचारिणी वाराणसी

3 पण्डित श्रीलाल, भाषा चन्द्रोदय (भारतवर्षीय हिन्दी भाषा का व्याकरण)

4 धीरेन्द्र वर्मा: हिन्दी भाषा का इतिहास, हिन्दुस्तान अकादमी इलाहाबाद।

5. किशोरीदास वाजपेयी: हिन्दी शब्दानुशासन, नागरी प्रचारिणी सभा. वाराणसी 1958

6. किशोरीदास वाजपेयी: भारतीय भाषा विज्ञान, चौखम्भा विद्या भवन वाराणसी 1959

7. किशोरीदास वाजपेयी: हिन्दी की वर्तनी एवं शब्द विश्लेषण, नागरी प्रचारिणी सभा. वाराणसी 1968

इकाई 8

मुहावरे व लोकोक्ति का महत्व

इकाई की रूपरेखा

8.0 उद्देश्य

8.1 प्रस्तावना

8.2 कतिपय मुहावरे उनका अर्थ एवं वाक्य प्रयोग

8.3 कपितय लोकोक्ति, उनका अर्थ एवं वाक्य प्रयोग

8.4 मुहावरे और लोकोक्तियों अन्तर

8.5 महत्व

8.6 सारांश

8.7 अभ्यासार्थ प्रश्न

8.8 संदर्भ ग्रंथ

8.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययनोपरांत आप -

- मुहावरे का अर्थ एवं उनकी उपयोगिता जान सकेंगे।
- इसी प्रकार लोकोक्ति का अर्थ एवं उनकी उपयोगिता भी जान सकेगें।
- कतिपय मुहावरे व लोकोक्तियों का अर्थ एवं वाक्यों में प्रयोग की जानकारी प्राप्त कर इनका वाक्यप्रयोग करने की क्षमता में अभिवृद्धि कर सकेगें।

8.1 प्रस्तावना

हिन्दी भाषा : रचना कौशल का एक महत्वपूर्ण भाग है :- मुहावरा और लोकोक्ति। मुहावरा व लोकोक्ति से भाषा में रोचकता और चुटीलापन आ आता है। प्रस्ततु इकाई में कतिपय मुहावरे एवं लोकोक्तियों के अर्थ एवं वाक्य प्रयोग का अध्ययन कर विद्यार्थी स्वय अपनी भाषा को रोचक प्रभावी व लाक्षणिक बना सकते है। हिन्दी में मुहावरों एवं लोकोक्तियों की संख्या असंख्य है। इनके शब्दकोश तैयार किए गए हैं संसार की सभी भाषाओं में मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रचलन है। जिनके निर्माण के पीछे देश की संस्कृति परम्पराओं, सामाजिक प्रथाओं एवं भौगोलिक परिस्थितियों एवं लोकोक्तियों का भी योगदान

रहा है। लोकोक्ति और मुहावरे का प्रयोग भाषा में रवानगी, ताजगी और अभिव्यक्ति में संक्षिप्तता लाने के लिए किया जाता है। मुहावरे एवं लोकोक्ति के प्रयोग में दो बातों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। प्रथम (1) वाक्यों में प्रयोग करते समय लोकोक्ति और मुहावरे का ही प्रयोग किया जाए न कि उसके अर्थ वाले शब्दों का। उदाहरण के लिऐ **कमर कसना** मुहावरे का अर्थ है- तैयार होना अत: वाक्य में प्रयोग करते समय 'कमर कसना' का ही प्रयोग हो 'तैयार होना' अर्थ का नही।

द्वितीय (2) वाक्यों में प्रयोग इस तरह से किया जाए कि अर्थ अच्छी तरह स्पष्ट हो जैसे- राम ने मनोज की ऑख में धूल झौंक दी - इस वाक्य में अर्थ की स्पष्टता नहीं होती है। अत: प्रयोग इस तरह करना चाहिए- ''मनोज बहुत सतर्क रहता था, अभी तक कोई भी उसे धोखा नहीं दे पाया किंतु राम ने तो फिर भी अपनी चालाकी से उसकी ऑखों में धूल झोंक ही दी।''

8.2 कतिपय मुहावरे उनका अर्थ एवं वाक्य प्रयोग

परिभाषा - वह वाक्यांश जिसका प्रयोग सामान्य अर्थ में न होकर विशेष अर्थ में हो, मुहावरा कहलाता है। जैसे 'उड़ती चिड़िया पहचानना' इसका प्रयोग सामान्य अर्थ में इस प्रकार होगा - ''क्या तुम इस उड़ती चिड़िया को पहचानते हो? किन्तु जब इसका प्रयोग सामान्य अर्थ में न होकर एक विशेष अर्थ में किया जाता है तब उड़ती चिड़िया पहचानना' एक मुहावरा बन जाता है और इसका अर्थ होता है किसी की दिल की बात पहचान जाना, जैसे - अरे इनमें क्या छुपा रहे रहे हो? हम वह शख्स है जो उड़ती चिड़िया पहचान लेते है। इस प्रकार स्पष्ट है कि मुहावरे के प्रयोग से अभिव्यक्ति विशिष्ट और लाक्षणिक हो जाती है।

हिन्दी में महत्वपूर्ण मुहावरे, उनका अर्थ और वाक्य में प्रयोग विद्यार्थियों के लिए निम्नानुसार दिए जा रहे हैं -

मुहावरे (अर्थ और वाक्य में प्रयोग)

1- अँगूठा दिखाना (साफ इनकार कर देना) जब विद्यालय निर्माण के लिए मैने सेठजी से दान माँगा तो उन्होनें अँगूठा दिखा दिया।

2- अपने पांव पर कुल्हाड़ी मारना (स्वयं अपनी हानि करना)- पहलवान से झगड़ा मोल लेकर मैने अपने पॉव आप कुल्हाड़ी मार ली।

3- अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना (अपनी प्रशंसा स्वयं करना) आजकल के नेता अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनने से तनिक संकोच का अनुभव नहीं करते।

4- आँखो का तारा होना (बहुत प्यारा) - प्रत्येक बच्चा अपनी माँ के लिए आँखो का तारा होता है।

5- अपने पैरों पर खड़ा होना (आत्मनिर्भर होना)- वर्तमान समय में प्रत्येक लड़की को अपने पैरो पर खड़ा होना चाहिए।

6- आसमान पर चढ़ना (बहुत अभिमान करना) जव से राकेश आर.ए.एस. बना है, तब से उसका दिमाग आसमान पर चढ़ गया हैं।

7- आकाश के तारे तोड़ना (असंभव काम करना) नरेश नेत्रहीन है, पर उसने परीक्षा में अव्वल स्थान प्राप्ता किया यह तो आकाश से तारे तोड़ने के समान है।

8- एड़ी चोटी का जोर लगाना (बहुत प्रयत्न करना) प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए योगेश ने एड़ी चोटी का जोर लगा दिया।

9- ऐसी तैसी होना (बहुत बुरा होना, गत बनना) - पाक कला में स्वयं को सर्वश्रेष्ठ मानते हुए भी, कल पार्टी के खाने मलता की ऐसी तेसी हो गई।

10- कंगाली में आटा गीला होना (अभाव में अधिक हानि होना) - सुरेश गरीब तो था ही उस पर उसकी गाय मर गयी यह तो कंगाली में आटा गीला गली बात हो गई।

11- कफन सिर पर बाँधना (मरने के लिए तैयार होना) - भारत देश के जवान कफन सिर पर बांध कर सीमा पर तैनात रहते है।

12- कलेजे का टुकड़ा होना - (बहुत प्रिय होना) राम कौशल्या के कलेजे के टुकड़े थे।

13- कलेजा फटना (बहुत दुख होना) अपनी माँ को मृत्यु शैय्या पर देखकर मेरा कलेजा फट गया।

14- कलेजे पर सांप लोटना (ईष्या से जलना) - जब रमेश की सरकारी नौकरी लगी तो कमलेश के कलेजे पर सॉप लौटने लगा।

15- कान का कच्चा होना (बिना सोच-समझे बात पर विश्वास करना) रत्ना की बातें प्रामाणिक नहीं होती क्योंकि वह कान की कच्ची है।

16- कान पर जू न रेंगना (बार-बार कहने पर भी असर न होना)- मोहन को रोजगार ढूंढने की बात बार-बार कहने पर भी उसके कान पर जू भी नहीं रेंगी।

17- कान भरना (चुगली करना) – लक्ष्मी ममता को पसन्द नहीं करती इसलिए उसने ममता के प्रति प्रिसंपल के कान भर दिये।

18- कोल्हू का बैल (लगातार काम में लगे रहना) - कोल्हू का बैल बनकर भी सीता दो वक्त की रोटी का इंतजाम नहीं कर सकी।

19- किताब का कीड़ा (हर समय पढ़ते रहना) - रोहन को बड़ा अफसर बनना था इसलिए वह किताब का कीड़ा बन गया।

20- खाला जी का घर होना (आसान काम) आजकल रसूख वालो के लिए तो नौकरी पाना खाला जी का घर है।

21- खून का घूँट पीना (अपने क्रोध को भीतर ही भीतर सहना)- सास द्वारा अपमानित होने पर भी राखी खून का घूँट पीकर रह गई।

22- खिल्ली उड़ाना (हँसी उड़ाना)- बाल भिखारियों को देखकर उनकी खिल्ली उड़ाना सज्जन लोगों का काम नहीं है।

23- गागर में सागर भरना (बड़ी बात को थोड़ै शब्दों में कहना) रीतिकाल के कवि बिहारी ने अपने दोहों में गागर में सागर भरा है।

24- गाल बजाना (बढ़ा-चढ़ाकर अपनी प्रशंसा करना) रोहित कल के क्रिकेट मैच में कुछ अच्छा करके दिखाओ, गाल बजाने से काम नहीं चलेगा।

25- गिरगिट की तरह रंग बदलना (सिद्धान्तहीन होना) कमला की पड़ोसिन विमला गिरगिट की तरह रंग बदलती है।

26- गुस्सा पीना- (क्रोध को रोकना) - उस दिन लड़ाई के समय अर्जुन ने गुस्सा पी कर बात को संभाला।

27- गुदड़ी का लाल (निर्धन परिवार में जन्मा गुणी व्यक्ति) – वैज्ञानिक सोच वाले अब्दुल कलाम गुदड़ी के लाल है।

28- गुड़ गोबर कर देना (बनी बात बिगाड़ देना)- हास्य कविता के कार्यक्रम में बेहुदी कविता गाकर कवि ने शाम का गुड़ गोबर कर दिया।

29- घड़ो पानी पड़ जाना (बहुत शर्मिदा होना) - धीरज जैसे सब-इस्पेक्टर को रिश्वत लेते हुए देखकर मानों लोगों पर घड़ो पानी पड़ गया।

30- घर का चिराग (घर की आशा) आज भी घर में पुत्र-रत्न को घर का चिराग मानते है।

31- घाव पर नमक छिड़कना (दुखी को और दुखी करना)- मोहन प्रतियोगिता परीक्षा में विफल हो गया परन्तु उसके मित्र बार बार उसका परिणाम के बारे में जानकर कर उसके घावों पर नमक छिड़क रहे थे।

32- घाट-घाट का पानी पीना- (अत्यंत अनुभवी होना) जमुना को बहुत व्यावहारिक ज्ञान है उसने घाट-घाट का पानी पीया है।

33- घी के दिए जलाना (खुशियाँ मनाना) भारत द्वारा क्रिकेट में विश्वकप जीतने पर आम जनता ने घी के दीपक जलाये।

34- घुटने टेकना (हार मान लेना) दामिनी के आरोपियों को कानून के सामने घुटने टेकने ही पड़े।

35- घोड़े बेचकर सोना। (निश्चिंत होना) राधा अपना गृह कार्य कर आज इतना थक गई कि घोड़ै बेचकर सो गई।

36- चाँदी होना (लाभ ही लाभ होना) बलवान की सरकारी नौकरी तो लग गई थी पर अब उसका करोबार भी अच्छा चल पड़ा है अब तो उसकी चाँदी ही चाँदी है।

37- चादर से बाहर पैर पसारना (आमदनी से अधिक खर्च करना) - रघु साधारण किसान है पर वह लाखों की जमीन लेना चाहता हैं पर उसे कौन समझाये जितनी चादर है उतने ही पैर पसारने चाहिए।

38- चारपाई पकड़ना (बीमार होना) - मोहन के मामा स्वस्थ है पर अब अचानक उन्होने चारपाई पकड़ ली है।

39- चिराग तले अँधेरा (महत्वपूर्ण स्थान के समीप अपराध या दोष पनपना) न्यायमूर्ति का पुत्र होते हुए भी न्याय के विरूद्ध कार्य किया यह तो वही बात हो गई कि चिराग तले अंधेरा होता है।

40- चिकना घड़ा- (बेअसर) - सोहन इतना बिगड़ गया था कि माता-पिता की बात का उस पर कोई असर नहीं होता था वह चिकना घड़ा बन चुका था।

41- चेहरे पर हवाइयाँ उड़ना (घबरा जाना) पुलिस को आता हुआ देखकर चोर के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ गयी।

42- छक्के छुड़ाना (हराना)- भारत ने करगिल युद्ध में पाक सेना के छक्के छुड़ा दिये।

43- छठी का दूध याद आना (बहुत दुखी होना) - आतंकवादी को पुलिस ने इतनी पिटाई की कि उसे छठी का दूध याद दिला दिया।

44- छाती से लगाना - (बहुत प्यार करना) – वनवास के समय भरत को देखकर राम ने उन्हें छाती से लगा लिया।

45- छोटा मुँह बड़ी बात (अपनी सीमा से बढ़कर बोला) भ्रष्टाचारी नेताओं द्वारा आदर्शों पर भाषण देना छोटा मुंह बड़ी बात लगती है।

46- जहर का घूँट पीना (अपमालन सहन करना) मालिक ने राधे को बहुत डांटा परन्तु नौकरी करना उसकी विवशता है इसलिए वह जहर का घूंट पीकर रह गया।

47- जान पर खेलना (जोखिम उठाना) - भगतसिंह भारत की आजादी के लिए जान पर खेल गये थे।

48- टाँग अड़ाना (व्यर्थ में दखल देना) - कई लोग अपना कार्य नहीं करते बल्कि दूसरों के काम में भी टांग अड़ाते है।

49- टाल-मटोल करना - (बहाने बनाना) - मोहन कार्य करने के लिए हाँ नही कहा बल्कि टाल-मटोल करने लगा।

50- टेढ़ी खीर होना (बहुत कठिन होना)- आज के समय में नौकरी लगना टेढ़ी खीर से कम नहीं है।

51- ठोकरें खाना (धक्के खाना) - कई डिग्रियाँ लेने के बाद भी रामकरण नौकरी के लिए ठोकरें खा रहा है।

52- ढाक के तीन पात (कोई सुखद परिवर्तन न होना) सलीम नरेगा में काम करने लगा परन्तु फिर भी उनके घर में कोई परिवर्तन नहीं हुआ वहीं ढ़ाक के तीन पात।

53- तिल का ताड़ बनाना (छोटी सी बात को बढ़ा देना) बच्चो की आपस की लड़ाई इतनी बड़ गई कि तिल का ताड़ बन गया।

54- तिल रखने की जगह न रहना (ज्यादा भीड़ होना) - आप पार्टी के समर्थन में इतने लोग जमा हुए कि तिल रखने की जगह नही मिली।

55- थाली का बैंगन (सिद्धान्त हीन व्यक्ति) राधामोहन धुर्त और अवसर वादी हैा समाज में उसकी की छवि थाली के बैंगन जैसी है।

56- दाँतो तले अंगुली दबाना (आश्चर्यचकित होना) - जादूगर के करतब देखकर दर्षको ने दाँतो तले अँगुली दबा ली।

57- दाँत कटी रोटी होना (पक्की दोस्ती होना) - सीता और गीता की दोस्ती दाँत कटी रोटी है।

58- दाँत खट्टे करना (हराना) भारतीय हॉकी टीम ने जर्मनी की हॉकी टीम के दांत खट्टे कर दिये।

59- दाल में कुछ काला - (कुछ रहस्य होना) - सुरेन्द्र और राजेश ने पुनीत के आत ही बाते बंद कर दी जरूर दाल में कुछ काला है।

60- दाल न गलना - (सफल न होना) - महाराणा प्रताप की वीरता के सामने अकबर की दाल न गली।

61- दाहिना हाथ - (बहुत बड़ा सहायक) – बीरबल शहशांह अकबर का दाहिना हाथ माना जाता था।

62- दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करना (अधिकाधिक उन्नति करना) हर पिता की यही इच्छा होती है कि उसका बेटा दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करे।

63- दुम दबाकर भागना- (डर कर भाग जाना) पुलिस को आता देख कर चोर दुम दबाकर भाग गया।

64- दूध का दूध पानी का पानी (ठीक-ठीक न्याय करना) न्याय ऐसा होना चाहिए कि दूध का दूध पानी का पानी हो जाये।

65- दूर के ढोल सुहावने लगना (पूरे परिचय के अभाव में कोई वस्तु आकर्षक लगना) आज की पीढ़ी भारत जैसे देश को छोड़कर विदेशों में जाना पसंन्द करते है। सही कहा है दूर के ढोल सुहावने लगते है।

66- दो नावों पर पैर रखना (एक साथ दो लक्ष्यों को प्राप्त करने की चेष्टा करना)- जितेन्द्र या तो तुम पढ़ाई कर लो या दुकानदारी कर लो। इस प्रकार दो नावों पर पॉव रखने से तो कुछ भी तुम्हारे हाथ नहीं लगेगा।

67- धज्जियाँ उठाना (खंड-खंड कर देना) गाँधी ने अपने वक्तव्य से अंग्रेजों के थोथे तर्को की ध धज्जियाँ उड़ा डाली।

68- नमक हलाल होना (कृतज्ञ होना) - किशन एक नमकहलाल नौकर है वह अपने मालिक को कभी धोखा नहीं देगा।

69- नमक मिर्च लगाना (बढ़ा-चढ़ाकर कहना) - समाचार-पत्र आजकल प्रत्येक खबर को नमक मिर्च लगाकर छापते है

70- नानी याद आना -(संकट में पड़ना) खेल में राम ने सुरेश को नानी याद दिला दी।

71- नाक में दम करना (बहुत तंग करना) - शैखर इतना शैतान है कि उसने अपने मामा की नाक में दम कर दिया है।

72- नाकों चने चबाना (बहुत तंग करना) शिवाजी ने मुगल सेना को अनेक बार नाकों चने चबाएं।

73- नाक पर मक्खी न बैठने देना (अपने पर आक्षेप न आने देना) राजनीति के दलदल में चाहे कितने ही नेता भष्ट्र क्यों न हो पर आरोपों को लेकर वह नाक पर मक्खी भी नहीं बैठने देते।

74- नाक कटना (इज्जत जाना) – श्याम एक इज्जतदार युवक था पर चोरी की घटना करने के बाद उसकी नाक कट गई।

75- नौ दो ग्यारह होना (भाग जाना) - पुलिस को देखकर चोर नौ दो ग्यारह हो गये।

76- पत्थर की लकीर (पक्की बात) - महान संतो की बातें हमेशा पत्थर की लकीर होती है।

77- पेट में चूहे कूदना (जोर की भूख लगना) - सफर के धक्के खाने के बाद घर का स्वादिष्ट खाना देखकर पेट में चूहे दौड़ने लगे।

78- पैरों तले से जमीन निकल जाना (स्तब्ध रह जाना) राजेन्द्र यादव की मृत्यु की खबर सुनकर पाठकों के पैरों तले जमीन खिसक गई।

79- फूला न समाना (बहुत खुश होना) परीक्षा में सफल होने का समाचार सुनकर छात्र फूला न समाया।

8.3 लोकोक्तियाँ, उनका अर्थ एवं वाक्य प्रयोग

परिभाषा - 'लोकोक्ति' वह लोक प्रसिद्ध उक्ति (कहावत) होती है जो किसी विशेष अभिप्राय को प्रकट करने के लिए समय-समय पर लोगों द्वारा कहीं और सुनी जाती है। यह वाक्याशं न होकर पूर्ण वाक्य होती है। लोकोक्तियाँ उपदेश नीति, युक्ति (उपाय) के लिए भी व्यवहार में प्रचलित है। लोकोक्ति के प्रयोग का उदाहरण इस प्रकार है -

लोकोक्ति - सॉप मरे न लाठी टूटे।'

अर्थ - काम भी बन जाएं और नुकसान भी न हो।

प्रसंग - जब किसी से कोई कार्य सहूलियत से करवाना हो।

प्रयोग - अधिक डराने - धमकाने से यह आपके विरूद्ध हो जाएगा, उससे इस तरह से काम लो कि 'सॉप मरे न लाठी टूटे।'

कतिपय लोकोक्तियाँ उनका अर्थ एवं वाक्य में प्रयोग इस प्रकार है -

लोकोक्ति का अर्थ एवं वाक्य प्रयोग -

1- अंधी पीसे कुत्ता खाए (कमाए कोई, खाए कोई)- वर्तमान समय में 'अंधी पीसे कुत्ता खाए' वाली स्थिति हो रखी है पूंजीपति वर्ग मजदूों की कमाई पर जीवन व्यतीत कर रहे है।

2- अपनी अपनी ढपली अपना अपना राग- (सबका अलग-अलग मत होना) मैना के घर में एकता नहीं है क्योकि सभी के **अपनी अपनी ढपली अपना अपना राग** वाली स्थिति है।

3- अधजल गगरी छलकत जाए- (थोड़ा ज्ञान या धन रखने वाले अधिक अभिमान का प्रदर्शन करते है।) इस किसान के पास कुल पांच बीघे जमीन है परन्तु भूमिपति होने की डींग मारता फिरता है। इसे ही कहते है ***अधजल गगरी छलकत जाए***।''

4- अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता (अकेला आदमी कुछ नही कर सकता) - मोहन ने अपनी हॉकी की टीम को जीताने के लिए प्रयास किया परन्तु अकेला वह क्या कर सकता था सही है **अकेला चना फाड़ नहीं फोड़ सकता**।

5- अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत (पहले परिश्रम न करके बाद में व्यर्थ पछताना) सीता पहले तो तुम मौज में सोती रही और अब अनुत्तीर्ण होने पर पछता रही हो। **अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत**।

6- अपना हाथ जगन्नाथ (स्वयं का कार्य सबसे अच्छा होता है) गाँधीजी अपना काम स्वयं करते थे। उनका मानना था **अपना हाथ जगन्नाथ**।

7- आप भला तो जग का भला (स्वयं का कार्य सबसे अच्छा होता है) संतो की सोच यही होती है कि **आप भला तो जग भला**।

8- आधी छोड़ सारी को धावै, आधी मिले न सारी पावै। लालच छोड़कर थोड़े में ही संतोष करना चाहिए, लालची को कुछ भी नहीं मिलता) लोभी होकर राम पाखण्ड के झांसे में आ गया और अधिक धन के लालच में जो था वो भी गंवा बैठा यह तो वही बात हो गई **आधी छोड़ सारी को धावै, आधी मिले न सारी पावै**।

9- आए थे हरिभजन को ओटन लगे कपास (आवश्यक कार्य को छोड़कर अनावश्यक कार्य में उलझ जाना) मैं पुस्तकालय में निबंध खोजने गया था, किन्तु वहॉ जाकर कहानियाँ पढ़ने लगा। वहीं बात हुई- आए थे **हरिभजन को ओटन लगे कपास**।

10- आगे कुआँ पीछे खाई (सभी और से विपत्ति आना) अनिता गरीब तो थी और डॉक्टर ने उसे कैंसर बता दिया। उसके लिए तो मानो **आगे कुआ पीछे खाई** वाली बात हो गई।

11- आम के आम और गुठली के दाम (दोहरा लाभ) - प्रेशरकुकर का उपयोग किया तथा पुराना होने पर उसे फिर कंपनी को दे दिया। यह तो **आम के आम और गुठली के दाम** वाली बात हो गई।

12- ऊँट के मुँह जीरा (आवश्यकता अधिक लेकिन मिलना बहुत कम) मुझे भूख इतनी जोर की लगी थी परन्तु टिफिन में दो रोटी ही थी यह तो **ऊँट के मुँह में जीरे** वाली बात हो गई।

13- ऊँची दुकान फीका पकवान (दिखावा अधिक और तत्व कम) वैवाहिक साड़ियों की दुकान परन्तु विवाह के लायक एक भी साड़ी नहीं यह तो **ऊँची दुकान फीका पकवान** वाली बात हो गई।

14- उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे (अपना दोष स्वीकार न करके पूछने वाले को दोशी ठहराना) एक तो मेरे रूपये चुराए, दूसरे अपराध स्वीकार करने की अपेक्षा मुझै ही आँखे दिखाता है। **उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे।**

15- एक तंदुरूस्ती हजार नियामत (स्वास्थ्य बहुत बड़ी चीज मोहन अमीर शख्स है परन्तु अपने से कोई कार्य नहीं कर पाता है। उचित कहा है किसी ने एक तदुरूस्ती हजार नियामत।

16- एक तो चोरी, दूसरे सीनाजोरी (अपराधी होकर उल्टे अकड़ दिखाना) एक तो मुझै गाली दी और अब मुकर रहे हो। अरे वाह **एक तो चोरी ऊपर से सीनाजोरी**।

17- एक तो करेला कडुआ दूसरे नीम च़ढ़ा (स्वाभाविक दोषों का किसी कारण से बढ़ जाना) मोहन जुआरी तो था ही अब शराबी की संगत में रहने लग गया। इसी को कहते है- एक तो **करेला कडुआ दूसरा नीम चढ़ा।**

18- एक हाथ से ताली नहीं बजती (झगड़े में दोनों पक्ष कारण होते है) मैं कैसे मान लूँ कि तुमने श्याम को अपषब्द नहीं करे और उसने तुम्हे पीट दिया। **एक हाथ से कभी ताली नहीं बजती।**

19- एक म्यान में दो तलवारें समा नहीं सकती (एक वस्तु के दो समान अधिकारी नहीं हो सकते) राधा को पता चला कि उसकी दुश्मन सीता भी वही नौकरी करती है तो उसने बॉस को साफ कह दिया **एक म्यान में दो तलवारें नही रह सकती।**

20- एक अनार सौ बीमार (एक वस्तु के अनेक ग्राहक) - नौकरी के लिए एक रिक्त स्थान और आवदेन इनते सारे यह तो **एक अनार सो बीमार** वाली बात हो गई।

21- एक पंथ दो काज (एक काम से दोहरा लाभ) मुझे मंदिर तो जाना ही था और रास्ते में दीदी से भी मिलकर आ गई यह तो **एक पंथ दो काज** वाली बात हो गई।

22- ओखली में सिर दिया तो मूसलों से क्या डर (किसी कार्य को करने की ठान ली तो कष्टों से क्या डरना) जब फौज में नौकरी करनी ही है तो युद्ध और गोले बारूद से क्या डरना। **ओखली में सिर दिया तो मूसलों से क्या डरना।**

23- कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तैली - (दो असमान व्यक्तियों की तुलना) तुम अपने गली-मौहल्ले के क्रिकेट खिलाड़ी की तुलना सचिन से कर रहे **हो कहॉ राजा भोज कहॉ गंगू तेली।**

24- कभी नाव गाड़ी पर कभी गाड़ी नाव पर- (एक दूसरे की सहायता लेनी ही पड़ती है।) जीवन भर माँ-बाप बच्चे की सहायता करते रहे। आज वहीं माँ-बाप बच्चे की सहायता से दिन काट रहे है यह तो ऐसा ही है- **कभी नाव गाड़ी पर कभी गाड़ी नाव पर।**

25- कहीं की ईट कहीं का रोड़ा भानुमती ने कुनना जोड़ा (असंगत वस्तुओं का मेल बैठाना, बिना सिर-पैर का काम करना) आज राजनीतिक दलों के विचार आपस में मेल नहीं खाते है ऐसा लगता है मानो **कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा भानुमती ने कुनवा जोड़ा।**

26- काठ की हाँड़ी बार-बार नहीं चढ़ती (बेईमानी बार-बार नहीं चलती) दूधिया दूध में प्रतिदिन पानी मिलाता था एक दिन रंगे हाथो पकड़ा गया। ठीक ही कहा है काठ की हॉडी बार-बार नहीं चढ़ती।

27- काला अक्षर भैंस बराबर (बिल्कुल अनपढ़) किशनलाल अनपढ़ है उसके लिए तो काला अक्षर भैस बराबर है।

28- का बरखा जब कृषि सुखाने (काम बिगड़ने पर सहायता व्यर्थ होती है) रोगी के मरने के पश्चात् डॉक्टर वहॉ पहुंचा, अब क्या करना था का **बरखा जब कृषि सुखाने।**

29- कोयले की दलाली में मुंह काला (दुर्जनों की संगति से कलंक लगता है) चोर की संगति में रहने के कारण निर्दोष श्याम भी पुलिस की गिरफ्त में आ गया। **कोयले की दलाली में मुँह काला होता है।**

30- खग जाने खग की भाषा (चालाक ही चालाक की भाषा समझता है) ये दोनों बच्चे न जाने इशारों में क्या बाते करते है। मुझे तो कुछ भी समझ में नहीं आता। खग जाने खग की भाषा।

31- खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है (बुरी संगति का प्रभाव अवश्य पड़ता हैं) कॉलेज में जाते ही मेरा भोला-भाला भाई ने जाने कैसे अफलातून हो गया है। जब देखा, फिल्म, वीडियों की बातें करते हुए उसका मन नहीं भरता। सच ही, **खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है।**

32- खिसियाई बिल्ली खंभा नोचे (अपनी शर्म छिपाने के लिए व्यर्थ का काम करना, अपनी खीझ निकालना) रोहित ने बॉस से तो कुछ नही कहॉ सारा गुस्सा अपनी पत्नी पर निकाल दिया **खिसियाई बिल्ली खंभा नोचें।**

33- खोदा पहाड़ निकली चुहिया (परिश्रम अधिक, फल कम) बम की खबर सुनकर सभी परेशान हो गये और अंत में पता लगा की खाली डिब्बा था। यह तो वहीं बात हो गई। **खोदा पहाड़ निकली चुहिया।**

34- जाके पैर न कटै बिवाई सो क्या जाने पीर पराई (जिसमें दुख नहीं भोगा, वह दुखी जनों का कष्ट न हीं समझ सकता) वर्तमान लेखक वातानुकूलित कक्ष में बैठ कर दरिद्रता का भावपूर्ण चित्रण नहीं कर सकते है। **जांके पैर न फटै बिवाई, सो क्या जाने पीर पराई।**

35- जैसा देश वेसा भेष - (जहॉ रहो, वहॉ वैसी रीति से चलो) घनश्याम ग्रामीण है किन्तु शहर में जाने के बाद वह शहर जैसे हो बया । सही कहॉ गया है **जैसा देश वैसा भेष।**

36- नाच न जाने आँगन टेढ़ा (स्वयं अयोग्य होना, दोष दूसरो को देना) सविता को कपड़े सीना तो आता नहीं दोष मशीन का बताती है। इसी को कहते हैं- नाच न जाने आँगन टेढ़ा।

37- न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी (विवाद को जड़ से ही नष्ट कर देना) यदि झगड़े का मूल कारण मैं हूँ तो मै ही यहॉ से चली जाती हूँ **ने रहेगा बॉस न बजेगी बासुंरी।**

38- बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद (मूर्ख व्यक्ति गुण का आदर करना नहीं जानता) नयी कविताओं की समझ आज कल के फिल्म प्रेमी युवाओं को है। सही कहा है **बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद।**

39- लेना एक न देना दो (बिना मतलब) झगड़ा मेरा और मेरे भाई का है। तुम बीच में कौन होते हो- **लेना एक न देना दो।**

40- होनहार बिरवान के चिकने पात (होनहार व्यक्तियों का बचपन में ही पता चल जाता है।) महारानी लक्ष्मीबाई बचपन में ही पेश्वा के पुत्रों से होड़ किया करती थी। बड़ी होकर उसने अंग्रेजों को नाकों चने चबवाए) सच है **होनहार बिरवान के होत चिकने पात।**

8.4 मुहावरे और लोकोक्तियों अन्तर

लोकोक्ति और मुहावरे अपने गुण के कारण एक समान प्रतीत होते है परन्तु इनमें अन्तर भी विद्यमान है। मुहावरे वाक्यांश (वाक्य के अंश) होते है और उनका अलग स्वतंत्र रूप से प्रयोग नहीं होता जबकि रूप की दृष्टि से लोकोक्ति या कहावतें पूर्ण वाक्य होती है। ये स्वतंत्र होती है और सम्पूर्ण सत्य अथवा विचार को व्यक्त करती है। उदाहरण के लिए ''तेते पॉव पसारिये, जेती लाम्बी सौर-' खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है, अंधा क्या चाहे दो ऑखे, अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत- ये सभी लोकोक्तियाँ है जो स्वतंत्र रूप से पूर्ण को एक वाक्य के साथ प्रकट करती है। इसी तरह दाँत खट्टे करना, दिन फिरना, हवा लगना, चिकना घड़ा- ये सब क्रियापद मुहावरे है जो वाक्य में प्रसंग के अनुसार अर्थ में विलक्षणता या चमत्कार उत्पन्न करते है। लोकोक्ति को हम वाक्य के अंश के रूप में प्रयोग में नहीं लाते है। मुहावरे का विशिष्ट अर्थ ही उपयोगी होता है।

8.5 महत्व

मुहावरे एवं लोकोक्तियों की दृष्टि से हिन्दी बहुत समृद्ध भाषा है। दोनों की अपनी उपयोगिता है। मुहावरो के प्रयोग से अभिव्यक्ति में लाक्षणिकता और भाषा में सुन्दरता आ जाती है। मुहावरे में प्रयुक्त शब्दावली ने कुछ ऐसा जादू सा होता है जो सर चढ़कर बोलता है। जैसे एक मुहावरा है- 'आग लगा देना'। यदि यह कहा जाए कि - लुटेरोंने गॉव को लूटने के बाद वहां आग लगा दी, तो इस वाक्य में 'आग लगा दी'। क्रिया का प्रयोग सामान्य अर्थ में माना जाएगा किन्तु इस पद का मुहावरे दार प्रयोग इस प्रकार है -

राम का तो यही काम रह गया है कि वह घर-घर में आग लगाता फिरे। यहॉ आग लगाने का अर्थ ऐसे व्यक्ति की हरकतों के लिए आया है जो झूठी सच्ची बाते बनाकर लोगों में फूट पैदा करता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि इस मुहावरे के प्रयोग से अधिव्यक्ति में लाक्षणिकता और रोचकता आ गई है।

8.6 सारांश

भाषा को सुन्दर, रोचक और प्रभावपूर्ण बनाने के लिए मुहावरे और लोकोक्तियां अथवा कहावतो का प्रयोग किया जाता है। सौभाग्य से हमारी हिन्दी भाषा लोकोक्तियों और मुहावरों से सम्पन्न है और प्राय: अनचाहे ही आदतन लोग इनका उपयुक्त प्रयोग कर दिया करते है और ऐसे प्रयोग से उनकी वाणी में स्पष्टता रोचकता और सार्थकता तो झलकती ही है, उसके सौन्दर्य में चार चांद भी लग जाते है। मुहावरों व लोकोक्ति का ठीक-ठाक अर्थ समझ कर वाक्यों में उनका प्रयोग इस तरह करना चाहिए कि उनका अर्थ उनके प्रयोग से ही स्पष्ट हो जाए।

8.7 अभ्यासार्थ प्रश्न

1. मुहावरे और लोकोक्ति में क्या अन्तर है?
2. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ एवं वाक्य प्रयोग लिखिए?

   (क) सीने पर सांप लौटना (ख) दाँतो तले अंगुली दबाना

(ग) नाक कटना (घ) कमर कसना

3. निम्नलिखित लोकोक्तियां का अर्थ बताते हुए वाक्य में प्रयोग कीजिए-

(क) आम के आम गुठली के दाम (ख) अधजल गगरी छलकत जाय

(ग) अब पछताये होत क्या जब चिड़ियां चुग गई खेत

(घ) कंगाली में आटा गीला।

4. निम्नलिखित लोकोक्तियों तथा मुहावरों का उनके अर्थ के साथ सही मिलान कीजिए-

1. अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता - सच्चा न्याय करना।

2. घड़ो पानी पड़ना - एक प्रयत्न से दोहरा फल मिलना।

3. अधजल गगरी छलकत जाए - लज्जित होना

4. एक पंथ दो काज - एक आदमी कुछ नहीं कर सकता

5. दूध का दूध और पानी का पानी - ओछा व्यक्ति इतराता अधिक है।

8.8 संदर्भ ग्रंथ

1 डॉ. धीरेन्द्र वर्मा: नवीन हिन्दी व्याकरण, हिन्दी मंदिर, इलाहाबाद

2 कामता प्रसाद गुरू: हिन्दी व्याकरण, काशी नागरी प्रचारिणी वाराणसी

3 पण्डित श्रीलाल, भाषा चन्द्रोदय (भारतवर्षीय हिन्दी भाषा का व्याकरण)

4 धीरेन्द्र वर्मा: हिन्दी भाषा का इतिहास, हिन्दुस्तान अकादमी इलाहाबाद।

5. किशोरीदास वाजपेयी: हिन्दी शब्दानुशासन, नागरी प्रचारिणी सभा. वाराणसी 1958

6. किशोरीदास वाजपेयी: भारतीय भाषा विज्ञान, चौखम्भा विद्या भवन वाराणसी 1959

7. किशोरीदास वाजपेयी: हिन्दी की वर्तनी एवं शब्द विश्लेषण, नागरी प्रचारिणी सभा. वाराणसी 1968

इकाई -9

संक्षेपण

इकाई की रूपरेखा

9.0 उद्देश्य
9.1 प्रस्तावना
9.2 संक्षेपण का अर्थ और प्रक्रिया
9.3 संक्षेपण के आदर्श उदाहरण
9.4 सारांश
9.5 अभ्यासार्थ प्रश्न
9.6 संदर्भ ग्रंथ

9.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप –

- संक्षेपण का अर्थ एवं प्रक्रिया समझ सकेंगे।
- संक्षेपण की आवश्यकता को जान सकेंगे।
- संक्षेपण के गुणों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- संक्षेपण के कुछ उदाहरण पढ़कर संक्षेपण करना सीख सकेंगे।

9.1 प्रस्तावना

जीवन में बढ़ती आपाधापी और समय के दबाव के कारण हमें अपने व्यवहार व कार्य को अधिक सारवान, सार्थक और संक्षिप्त करने की आवश्यकता है और इसके लिए अपने भाव –विचारों को कम से कम शब्दों में अधिकाधिक स्पष्टता और पूर्णता के साथ व्यक्त करने की कला हमें आनी चाहिए। इस इकाई में आप इसी कला का अर्थात संक्षेपण की प्रक्रिया का अध्ययन करेंगे। संक्षेपण में मूल विषय या कथनको पकड़ना होता है और उसके अनुसार उसका शीर्षक देना होता है। दिए गए अवतरण का एक तिहाई शब्दों में सार लिखना होता है।

9.2 संक्षेपण का अर्थ और प्रक्रिया

अर्थ – संक्षेपण अपने आप में एक मौलिक रचना होती है जिसमें मूल पाठ को लगभग एक तिहाई शब्दों में इस प्रकार लिखा जाता है कि उसका मूल (केन्द्रीय) विषय या भाव स्पष्ट हो सके।
प्रक्रिया – संक्षेपण की प्रक्रिया से परिचित होना आज के युग में विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त आवश्यक

है। संक्षिप्तीकरण मूल अंश का लगभग एक तिहाई रखना होता है और शीर्षक देना होता है। अत: इस कार्य को करने के लिए निम्न प्रक्रिया से गुजरना चाहिए।

1 **वाचन** – वाचन का अर्थ है जिस गद्यांश का संक्षिप्तीक्रण करना है, उसे पढ़ना। सर्वप्रथम विद्यार्थी गद्यांश को दो-तीन बार पढे और उसके मूल कथन को समझे जिससे आगे महत्वपूर्ण कम महत्वपूर्ण और कम महत्वपूर्ण तथ्यों (पंक्तियों) को छांटने में सहायता मिलेगी। इस प्रक्रिया में शीर्षक भी मिल जाता है। इस प्रथम स्तर पर ही गद्यांश के शब्दों की मोटे रूप में गिनती कर लेनी चाहिए जिससे एक तिहाई शब्दों का अंदाज हो सके।

2 **रेखांकन** – मूल अवतरण (गद्यांश) को दो तीन बार वाचन के बाद केन्द्रीय भाव से जुड़े वाक्यों और शब्दों को रेखांकित कर देना चाहिए। इस प्रक्रिया में महत्वपूर्ण तथ्य ही बच जाते है।

3 **रूपरेखा और भाषा संरचना** – रेखांकित वाक्यों और शब्दों के आधार पर लगभग एक तिहाई शब्दों में संक्षेपण को लिखने की प्रक्रिया रूपरेखा होती है। यदि यह एक तिहाई से अधिक हो गई तो कम महत्वपूर्ण वाक्य वाक्यांश या शब्दों को कम कर देना चाहिए। इस कार्य के लिए भाषा संरचना की कुछ विशेष बातों का ध्यान रखने की आवश्यकता है जैसे -

   1 मूल पाठ के केन्द्रीय भाव को बताने वाले शब्द का अवश्य उल्लेख हो।

   2 एक ही अर्थ बार बार बताने वाले वाक्य छोड़ दिए जाए।

   3 लोकोक्ति, मुहावरे, कोई उदाहरण, उद्धरण दिए गए हो तो उन्हें यथासंभव छोड़ दिए जाए।

   4 वाक्यांश सूचक शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए जैसे जो ईश्वर में विश्वास नहीं करता (नास्तिक) उसके लिए नास्तिक शब्द लिखा जाए। इसी पुस्तक की इकाई (वाक्यांश सूचक शब्द) में विद्यार्थियों के लिए ऐसे शब्दों की सूची दी गई हैं, जो संक्षेपण में सहायता करेगी।

   5 शब्द चयन महत्वपूर्ण होता है अत: ऐसे शब्दों का चयन करना चाहिए जो व्यापक अर्थ को समझते हो। सहायक क्रिया, सर्वनामों और विशेषण के प्रयोग को सीमित कर शब्दों की बचन की जा सकती है

      उदाहरण -
      इस स्थान पर वे लोग रहते हैं, जो न तो पढ़ सकते हैं, न लिख सकते हैं।
      उपर्युक्त वाक्य का संक्षेपण इस प्रकार होगा

      संक्षेपण – इस स्थान पर अनपढ़ रहते हैं।

   6 संक्षेपण में अपनी तरफ से कोई विचार, मत या स्पष्टीकरण हो कि कोई आवश्यकता नहीं होती।

   7 दो पात्रों की यदि वार्तालाप हो तो संक्षेपण में उसे वार्तालाप शैली में न लिखकर

विवरणात्मक शैली में लिखे।

4 **शीर्षक** – मूल पाठ के केन्द्रीय भाव से संबंधित रेखांकित सामग्री व भाषा संरचना को ध्यान में रखते हुए गद्यांश का शीर्षक रखना चाहिए।
संक्षेपण प्रक्रिया के इस चरण में शीर्षक का चयन मूल अवतरण के किसी अत्यन्त महत्वपूर्ण शब्द या शब्दों से एवं नवीन शब्दों के द्वारा भी दिया जा सकता है। संक्षेपण का शीर्षक छोटा, सारगर्भित, उपयुक्त और सार्थक हो, जिसमें संक्षेपण का सार समाया हो।

9.3 संक्षेपण के आदर्श उदाहरण

विद्यार्थियों के लिए उदाहरण के रूप में कपितय अवतरणों के संक्षेपण के उदाहरण प्रस्तुत करने के साथ साथ उनके कठिन शब्दों के अर्थ भी प्रस्तुत कर रहे हैं। पूर्व में लिखी गई संक्षेपण प्रक्रिया के विभिन्न चरणों को ध्यान में रखते हुए इनका अभ्यास किया जा सकता है।
विद्यार्थियों को चाहिए कि निम्नांकित अवतरणों के संक्षेपण के अभ्यास के बाद स्वयं अन्य अवतरणों के संक्षेपण का अभ्यास करें '

उदाहरण -1

मेरा मित्र राम बाजार गया। मेरा पडौसी कैलाश भी उसके साथ बाजार गया। वहॉ उन्होने ट्रक और रिक्शा की टक्कर देखी, जिससे नौ आदमी घटनास्थल पर ही पंचत्व को प्राप्त हुए और दयनीय स्थिति में अस्पताल भेजे गये। राम ने मुझे बताया कि ऐसी घटना पहले कभी उसके सामने घटित नहीं हुई थी।

संक्षेपण -

शीर्षक - दुर्घटना

मेरा मित्र राम और पडोसी कैलाश बाजार गये जहॉ उन्होने एक अभूतपूर्व घटना देखी जिसमें नौ आदमी मरे और चार चिन्ताजनक स्थिति में अस्पताल भेजे गये।

कठिन शब्दों के अर्थ - पंचत्व को प्राप्त हुए=मर गये। दयनीय=चिंताजनक। ऐसी घटना जो पहले कभी घटिक नहीं हुई = अभूतपूर्व घटना।

उदाहरण - 2

स्वावलम्बन का गुण सभी को सरलता से प्राप्त हो सकता है। यह किसी एक विशेष जाति, विशेष धर्म तथा विशेष देश के निवासी की सम्पत्ति नहीं है। स्वावलम्बन सभी के लिए चाहे वे पूंजीपति हो या मजदूर, पुरूष हो या स्त्री, वृद्ध हो या बालक, काला हो या गौरा, शिक्षित या अशिक्षित, प्रत्येक समय, प्रत्येक स्थान पर सुलभ है। इतिहास साक्षी है कि अत्यन्त दीन तथा निर्धन व्यक्तियों ने स्वालम्बन के अलौकिक गुण द्वारा महान् उन्नति की है। समाचार-पत्र बेचने वाला एडिसन एक दिन महान् उपन्यासकार

हुआ। चन्द्रगुप्त नामक एक निर्धन और साधारण सैनिक भारत का चक्रवर्ती सम्राट हुआ। हैदरअली आरम्भ में एक सिपाही था। स्वावलम्बन के कारण ही उसने दक्षिणी भारत में अपना राज्य स्थापित किया। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर हमारे भारत के ख्याति प्राप्त नर-रत्न है। कहा जाता है कि उन्होने अंग्रेजी अक्षरों का ज्ञान सड़क के किनारे गड़े हुए मील के पत्थरों से प्राप्त किया था।

संक्षेपण–

शीर्षक - स्वावलम्बन का महत्व -

स्वावलम्बन किसी वर्ग विशेष की सम्पत्ति नहीं हैं। उस पर सभी वर्गो के लोगो का समान अधिकार है। यह वह गुण है जिसके सहारे से निर्धन व्यक्ति भी उन्नति कर सकता है। एडिसन, चन्द्रगुप्त, हैदरअली, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर जैसे स्वावलम्बी व्यक्ति इसके ज्वलंत उदाहरण है।

कठिन शब्दों के अर्थ - सम्पत्ति = धन। वृद्ध = बूढ़ा। सुलभ = सरलता से प्राप्त। साक्षी = गवाह। निर्धन = गरीब। ख्यातिप्राप्त- प्रसिद्ध।

उदाहरण - 3

आत्म विश्वास आत्म शक्ति की दृढ़ता और सफलता का द्योतक है। जिस व्यक्ति में यह होता है, वह अवश्य ऊँचा उठता है और सफलता प्राप्त करता है। बिना दृढ़ आत्मविश्वास के स्वावलम्बन की प्रवृत्ति नहीं उठती और स्वावलम्बन के बिना कोई भी अपना उत्थान नहीं कर सकता । जिनको अपनी कार्य सम्पादन शक्ति में ही विश्वास नहीं, वह सफलता का मुंह देख सकेगा- सन्देह से खाली नहीं। याद रखिए आप अपनी योग्यता पर जितना अविश्वास करेंगे, जितना ही आप भय और शंका को अपने ह्रदय में स्थान देगे, उतने ही आप विजय से - सफलता से- दूर रहेगे। चाहे आपका पथ कितना ही कंटकाकीर्ण और अन्धकारमय क्यों न हो पर आपको चाहिए कि आप अपने आत्म विश्वास को - मानसिक धैर्ये को - तिलांजलि ने दे। आपकी शंकाये और भय दूसरों के विश्वास को अधिक नष्ट करते है। यदि आप अपने-आपको पतित समझेगे, यदि आप समझेगें कि आप सामर्थ्यहीन है, आपका कोई महत्व नही तो दुनिया भी आपको वैसा ही समझेगी। वह आपकी बात की, आपकी आवाज की कुछ भी कीमत न आंकेगी। आपको संसार में ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलेगा, जिसने आपने आपको तुच्छ, हीन और बेकाम समझा हो और कोई महान् कार्य किया हो। जितनी योग्यता का आप अपने अपने समझेगे, उतना ही महत्वपूर्ण कार्य भी आप कर सकेगें। जब आप अविचल साहस द्वारा सम्पादित हुए बड़े-बड़े कार्यो और उनके कर्ताओं का विश्लेषण करेगे, तो उनका प्रधान गुण आत्म विश्वास ही सिद्ध होगा।

संक्षेपण -

शीर्षक - आत्म विश्वास ही सफलता की कुंजी -

आत्म विश्वास मनुष्य को रूस्वालम्बी बना कर उसे ऊँचा उठाता है और सफलता प्रदान करता है। जिसको अपनी कार्य-क्षमता में विश्वास नहीं, जो अपने-आपको अयोग्य समझे वह क्या खाक उन्नति करेगा? दुनियां उसकी आवाज की क्या कीमत आंकेगी? इसलिए मार्ग चाहे कितना ही कठिन हो, मनुष्य को आत्म विश्वास नहीं खोना चाहिए। संसार के सब महान् कार्य आत्मविश्वास के बल पर ही हुए है।

कठिन शब्दों के अर्थ - उत्थान = उन्नति। भय =डर। पथ = रास्ता। कंटकाकीर्ण = काँटो से भरा। तिलांजलि देना = छोड़ देना। पतित = गिरा हुआ। सामर्थ्यहीन = शक्तिहीन। अविचल = कभी विचलित न होने वाला।

उदाहरण - 4

मूड बिगड़ना एक स्वाभाविक घटना है जो हर व्यक्ति को होती है और हो सकती है। विपरीत परिस्थितियों में का शान्त रहना संभव नहीं है। बड़े-बड़े धीरे-वीर और शांत प्रकृति वाले व्यक्ति भी प्रतिकूल घटनाओं में कभी-कभी मानसिक संतुलन खो बैठते है। यह नैसर्गिक है कि किसी भी अप्रिय य अरूचिकर परिस्थिति में हमारा मन न लगे, मिजाज नाशाद हो जावे या मूड बिगड़ जावे। किन्तु आजकल युवक-युवतियों का मूड बात-बात में बिगड़ जाता है। आज का युवक समाज तुनक मिजाजी या अस्थिर-चितता से भयंकर रूप से ग्रसित है। बात-बात पर तुनक उठना उनका स्वभाव सा बन गया हैं। इस तुनक मिजाजी या क्षणिक बुद्धि के कई कारण है जिनमें प्रमुख हैं शारीरिक दुर्बलता तथा अंहकार की अनावश्यक वृद्धि। झूठे प्रदर्शनों और व्यसनों ने भी हमारे देश का स्वास्थ्य गिरा दिया है। आज आपको ऐसे कितने युवक मिलंगे जिनके मुख से तेज बरस रहा हो, जो सुस्वास्थ्य के उदाहरण कहे जा सकते हो? कमर-तोड़ महंगाई, गिरता हुआ जीवन स्तर, चाय तथा अन्य उत्तेजक पदार्थो का सेवन, धूम्रपान की वृद्धि एवं अन्य आत्मघाती कुटेवों के कारण हमारा वर्तमान युवक समाज शारीरिक एवं मानसिक दुर्बलता से ग्रसित है। परिणामस्वरूप हम दुर्बल और अशक्त व्यक्तियों से शान्ति तथा धैर्य की आशा नहीं रख सकते है। बात-बात में उनका तुनक उठना और उनके मूड का बिगड़ जाना स्वाभाविक है।

संक्षेपण -

शीर्षक -मूड बिगड़ना -

विपरीत परिस्थितियों में मानसिक संतुलन का न रहना स्वाभाविक है। किन्तु आजकल युवक-युवतियों का बात-बात में मूड बिगड़ जाना एक रोग हो गया है। उनकी तुनक मिजाजी उनकी दुर्बलता तथा अहंकार की अनावश्यक वृद्धि प्रकट करती है। झूटे प्रदर्शनी , चाय, धूम्रपान आदि की कुटेवों ने उनको शरीर और धैर्य रख ही नही सकते है। ऐसी स्थिति में बात-बात पर उनका मूड बिगड़ जाना कोई आश्चर्स की बात नहीं।

कठिन शब्दों के अर्थ - प्रतिकूल - विपरीत। नाशाद-अप्रसन्न। कुटेवा = बुरी आदतों । वृद्धि =बढ़ना।

संक्षेपण के लिए अवतरण

9.4 सारांश

वस्तुत: संक्षेपण (गद्य अवतरण का संक्षिप्तीकरण) इस प्रकार की कला है जो दिए गए अवतरण के सभी आवश्यक बिन्दुओं को घेर कर सारांश लिखने के कोशल का विकास करती है। इसके अभ्यास से विचार एवं भावों को ग्रहण करने की संतुलित शक्ति विकसित होती है। अपनी बात को संक्षिपत ओर प्रभावी रूप से बोलने और लिखने की शैली का अभ्यास होता है।

9.5 अभ्यासार्थ प्रश्न

1 संक्षेपण का अर्थ और प्रक्रिया का उल्लेख कीजिए।

2 संक्षेपण क्यों आवश्यक है?

3 संक्षेपण का शीर्षक कैसा होना चाहिए।

4 निम्न अवतरणों को पढ़कर संक्षेपण लिखिए।

(क) कहते है मौन में अजेय शक्ति है। मौन से समस्त शक्तियों का केन्द्रीयकरण होता है। जीवन के बाह्य पटल पर यत्र-तत्र बिखेरी हुई जीवन-शक्ति मौन के बाँध में जब एकत्रित कर ली जाती है तो वह उसी तरह शक्तिशाली, घनीभूत हो जाती है बांध में रोकी गई नदी। शक्ति और क्षमताएं सदा मौन की गोद में ही पतली है। संसार के महपुरूषों ने जो भी महत्वपूर्ण काम किये है, वे सब ठंडे दिल और ठंडे दिमाग से ही सम्पन्न हुए है। किसी भी महान् कार्य के सम्पादन के लिए समस्त आन्तरिक एवं बाह्य प्रवृत्तियों को एकत्रित करके उन्हे लक्ष्य पर लगाना पड़ता है। महत्वपूर्ण कार्य मौन से ही संभव होता है। मौन मनुष्य के जीवन में समरसता प्रदान कर, उसे अधिक टिकाऊ, प्रभावशाली और महत्वपूर्ण बना देता है। मौन से मस्तिष्क सदा व्यवस्थित और संतुलित रहता है। स्वास्थ्य के लिए भी मौन एक महत्वपूर्ण वरदान है, क्योंकि यह शक्ति के अपव्यय को रोक कर मानव को कार्य क्षमता प्रदान करता है। आध्यात्मिक विकास के लिए तो मौन से बढ़कर अन्य कोई साधन ही नहीं है।

(3)

(ख) प्रतिभा एक दैवी शक्ति है और जिस लेखक में यह हो, वह अपनी रचनाओं, द्वारा भूत, भविष्य और वर्तमान का सुस्पष्ट और सजीव चित्र उतार सकता है। प्रतिभा के बल पर वह भूत के गहनतम में प्रवेश कर, वहॉ से प्रकाश की किरणों को बटोर कर ला सकता है और वह उन किरणों के प्रकाश से भविष्य का मार्ग-दर्शन कर, उसे समुज्ज्वल बना सकता है। वर्तमान की समस्त परिस्थितियों का अध्ययन एवं मनन कर, वह उन्हे सही दिशा में मोड़ सकता है। प्रतिभा के बल पर वह देश की सुषुप्त चेतना को जगाकर उसमें प्राण फूंक सकता है। वह अपनी प्रतिभापूर्ण रचना के द्वारा दर्शक या पाठक का केवल अनुरंजन ही नही करता, वह उसे अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक भी बना देता है।

(3)

(ग) श्री अरविन्द के अनुसार संगीत मूलतः एक आध्यात्मिक कला है, जिसमें गहन संवेदनाओं द्वारा आत्मा को छू लेने की शक्ति है। संगीत एक आध्यात्मिक कला होने के साथ-साथ लोकोपयोगी भी है। आत्म दर्शन तथा आत्म चिन्तन के साथ-साथ लोक-रंजन इसका प्रमुख उद्देश्य रहा है। संगीत विश्रन्तिदायक है तथा ज्ञानात्मक प्रवृतियों को सजग करता है। मानवीय भावनाओं को उदीप्त करने का संगीत सर्वश्रेष्ठ साधन समझा जाता है। आरोग्यशास्त्रियों ने भी संगीत को आरोग्यदाता एवं स्वास्थ्य वर्द्धक बताया है। इतिहास इस ध्रुव सत्य का साक्षी है। पोपन ने लिखा है कि मेघ रोग क्षयरोगियों के लिए लाभदायक है। संगीत के सम्मोहन से तो हिंसक एवं विषधर जन्तु भी अपना क्रूर स्वभाव छोड़ बैठते है। अभी हाल ही में किये गये परीक्षणों से इस तथ्य की पुष्टि हुई है कि संगीत उत्पादन बढ़ाने से भी पर्याप्त योगदान दे सकता है। अन्ततः यह कहा जा सकता है कि संगीत न केवल एक सर्वश्रेष्ठ कला या विद्या है, वरन् व्यावहारिक दृष्टि से भी यह अत्यन्त उपयोगी है। जहॉ एक और यह लोकोपयोगी कला है, वहीं दूसरी और इसका अध्यात्मिक महत्व भी है।

9.6 संदर्भ ग्रंथ

1 डॉ. धीरेन्द्र वर्मा: नवीन हिन्दी व्याकरण, हिन्दी मंदिर, इलाहाबाद

2 कामता प्रसाद गुरू: हिन्दी व्याकरण, काशी नागरी प्रचारिणी वाराणसी

3 पण्डित श्रीलाल, भाषा चन्द्रोदय (भारतवर्षीय हिन्दी भाषा का व्याकरण)

4 धीरेन्द्र वर्मा: हिन्दी भाषा का इतिहास, हिन्दुस्तान अकादमी इलाहाबाद।

5. किशोरीदास वाजपेयी: हिन्दी शब्दानुशासन, नागरी प्रचारिणी सभा. वाराणसी 1958

6. किशोरीदास वाजपेयी: भारतीय भाषा विज्ञान, चौखम्भा विद्या भवन वाराणसी 1959

7. किशोरीदास वाजपेयी: हिन्दी की वर्तनी एवं शब्द विश्लेषण, नागरी प्रचारिणी सभा. वाराणसी 1968

8. डॉ. राघव प्रकाश : व्यावहारिक सामान्य हिन्दी, पिंक सिटी पब्लिशर्स, जयपुर

9. डॉ. वेकट शर्मा : व्यावहारिक हिन्दी व्याकरण, सूर्यनगरी प्रकाशन, जोधपुर

इकाई - 10

अपठित गद्यांश

इकाई की रूपरेखा

10.0 उद्देश्य

10.1 प्रस्तावना

10.2 आवश्यक सुझाव

10.3 अपठित गद्यांश (अभ्यास के लिए)

10.4 सारांश

10.5 अभ्यासार्थ प्रश्न

10.6 संदर्भ ग्रंथ

10.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात -

- सामान्य हिन्दी पढ़ने वाले विद्यार्थी अपठित गद्यांश को पढ़कर उसका भाव और अर्थ ग्रहण करना सीख सकेंगे।
- तत्पश्चात पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देने के ज्ञान में वृद्धि कर सकेंगे।
- गद्यांश सम्बन्धित विषय का ज्ञान और भाषा-बोध में अभिवृद्धि कर सकेंगे।

10.1 प्रस्तावना

अपठित गद्य के अंश अथवा अवतरण का ज्ञान और अभ्यास करना भी सामान्य हिन्दी पढ़ने वाले विद्यार्थी को आना चाहिए। यह भी हिन्दी रचना का एक प्रमुख अंग है। यदि अवतरण में विद्यमान प्रमुख विषय और भाव विचार या प्रयोजन को समझ लिया जाए तो उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर देने में किसी भी प्रकार की समस्या नहीं आती। बार बार अभ्यास से अपठित । (जो पूर्व में नहीं पढ़ा गया।) गद्यांश को समझा जा सकता है।

10.2 आवश्यक सूझाव

सामान्यतः अपठित गद्यांश से पूछे गए प्रश्नों के उत्तर गद्यांश के वाक्यों में छिपे रहते है, जिन्हें ढूंढने में सामान्य बुद्धि चातुर्य चाहिए। संभव है, परीक्षक अवतरण में समाविष्ट विचारों से संबंधित विषय की कुछ विशेष जानकारी भी परीक्षार्थी से चाहता है। अतः प्रश्नों में कुछ घुमाव भी ला सकता है।

उनसे घबराए बिना उनके उत्तर निकाल पाना कोई बड़ा काम नहीं है। प्रश्नों के उत्तर देते समय अधिक विस्तार करने की आवश्यकता नहीं है। विद्यार्थी को अपनी भाषा शैली में अत्यन्त शुद्धता, स्पष्टता से पूर्णता प्रश्नों का उत्तर देना चाहिए। पूछे गए प्रश्न विषय ज्ञान और भाषा बोध दोनों से संबंधित हो सकते है।

10.3 अपठित गद्यांश (अभ्यास के लिए)

1. महर्षि अरविंद लिखते है - शिक्षा का कार्य आत्मा को विकसित करने में सहायता देना है।' अर्थात् शिक्षा से हमारा संपूर्ण व्यक्तिगत प्रभावित होता है। गांधी जी के अनुसार- शिक्षा से मेरा अभिप्राय है बच्चे की संपूर्ण शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक व्यक्तियों का सर्वांगीण विकास। साक्षरता न तो शिक्षा का अंत है और न आरंभ। शिक्षा मनुष्य को मस्तिष्क और शरीर का उचित प्रयोग करना सिखाती है। वह शिक्षा जो मनुष्य की पाठ्य पुस्तकों के अतिरिक्त कुछ गंभीर चितंन न दे व्यर्थ है। यदि हमारी शिक्षा सुसंस्कृत, सभ्य, सच्चरित्र एवं अच्छे नागरिकक नहीं बना सकती इससे इयये क्या लाभ ? सहृदय सच्च परन्तु अनपढ़ मजदूर उस स्नातक से कहीं अच्छा है, जो निर्दयी और चरित्रहीन है। हमारे कुछ अधिकार एवं उत्तरदायित्व भी है। शिक्षित व्यक्ति को उत्तरदायित्वों का भी उतना ध्यान रखना चाहिए जितना अधिकारों का।

उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

1. महर्षि अरविंद के अनुसार शिक्षा का कार्य है ?

   (क) मस्तिष्क का विकास (ख) भावना का विकास

   (ग) आत्मा का विकास (घ) सर्वागीण विकास

2. आत्यात्मिक शक्तियों का सर्वागीण विकास शिक्षा है यह कथन है -

   (क) गाँधीजी (ख) महर्षि अरविन्द

   (ग) दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं

3. जो चरित्रहीन स्नातक है उससे अच्छा कैसा व्यक्ति है -

   (क) पढ़ा लिखा किसान (ख) अनपढ़ मजदूर

   (ग) रईस व्यक्ति (घ) स्वार्थी व्यक्ति

4. मनुष्य को मस्तिष्क और शरीर का उचित प्रयोग करना कौन सिखाती है?

(क) ऊर्जा (ख) प्रकृति

(ग) शिक्षा (घ) इनमें से कोई नहीं।

5. शिक्षित व्यक्ति अधिकारों के साथ - सथ किसके प्रति सजगक रहना चाहिए-

(क) समाज (ख) चरित्र

(ग) समय (घ) उत्तरदायितव

उत्तर 1 ग, 2 क, 3 ख, 4 ग, 5 घ

2. समय की अपेक्षा करने वालो को समय नष्ट कर देता हैं महात्मा गांधी सभी कार्य निर्धारित समय पर करते थे। इसलिए अत्यंत व्यस्त होते हुए भी निरंतर प्रगति करतेहुए सफलतम महान् व्यक्तियों की श्रेणी में पहुंचे जेक्स वॉट, मेडम क्यूरी और एडिसन ने समय के प्रत्येक पल का सही प्रयोग कर संसार को महान आविष्कार प्रदान किए। समय का सदुपयोग भाग्य-निर्माण की आधारशिला है। असमय कार्य। करने वाले कायर और निरूधमी बन जाते है। अपने कर्तव्य कर्म को यथाशीघ्र बिना विलंब से करना ही समय का सदुपयोग है और वहीं समय का पारखी भी है। जो समय का सदुपयोग करना जान जाए, वहीं जीवन को सही ढंग से जीना सीख जाता है। हर व्यक्ति को पैसों की अपेक्षा समय का अधिक हिसाब रखना होगा, तभी वह अपने क्षेत्र में सफल हो पाएगा।

उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

1. कौन महापुरूष निर्धारित समय पर कार्य करता था-

(अ) नेहरू जी (ब) लाल बहादुर शास्त्रीजी

(स) गाँधीजी (द) इनमें से कोई नहीं।

2. संसार को महान आविष्कार प्रदान किया है-

(अ) जेक्सवॉट, मेडम क्यूरी (ब) विवेकानन्द, रामकृश्ण परमहंस

(स) लाल बहादुर शास्त्रीजी, सरदार वल्लभ भाई पटेल

(द) उपर्युक्त सभी।

3. भाग्य के निर्माण की आधारशिला हैं?

(अ) समय सदुपयोग (ब) आराम

(स) लेटलतीफी (द) इनमें से कोई नहीं

4. हर व्यक्ति को पैसों से अधिक किसका हिसाब रखना चाहिए -

(अ) दुनियादारी का (ब) समाज

(स) व्यवहार का (द) समय का

5. कायर और निरूधमी कौन है -

(अ) जो अनुशासित है (ब) समय का पाबंद है

(स) असमय कार्य करने वाले (द) उपर्युक्त सभी

उत्तर – 1 स, 2 क, 3 अ, 4 द, 5 स

3 परेशानियों के बावजूद रोजाना थोड़ा हंसने-हंसाने का अभ्यास करते रहने से आत्मविश्वास और सुरक्षा की भावना बढ़ती है। इससे न केवल खुद को खुशी महसूस होती है , बल्कि आपस में जुड़े सब लोगो में खुशी फैलती है। हंसना हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभकारी है। इससे हमारा इम्यून सिस्टम मजबूत रहता है और बहुत सी बीमारियों से बचाव हो सकता है लेकिन जरूरत से ज्यादा और अनुचित तरीके से हंसना दूसरों को परेशान कर सकता है। हंसी मजाक में टेंशन रिलीज होता है। मन हल्का होता है। हंसते रहने से जीवन की कड़ी वास्तविकताओं, लगातार थकावट का एहसास, अज्ञात डर, तरह तरह की झुंझलाहट से राहत मिलती है। मन की खुशी और शांति से कार्य शक्ति व सृजनात्मकता बढ़ती है। क्यों न हम आपसी भेदभाव मिटाकर अपने संबंधों को मधुर बनाने की कोशिश करें, ताकि एक दूसरे से अपने दुख दर्द, खुशी अपनी सफलताओं के सुखद अनुभव बांट सकें और आपसी मेलजोल और आत्मविश्वास के साथ हंसी खुशी से जी पाएं।

1 आत्मविश्वास और सुरक्षा की भावना कब बढ़ती है -

(अ) खेलकूद करने से (ब) हंसी-मजाक करने से

(स) चुगली करने से (द) अपमानित करने से

2 हंसने हंसाने से क्या लाभ होता है -

(अ) शरीर में कमजोरी होती है (ब) भूख कम लगती है।

(स) इम्यून सिस्टम मजबूत होता है (द) इसमें से कोई नहीं

3 तनाव को दूर किया जा सकता है -

(अ) कम बोलने से (ब) दवाई लेने से

(स) रोने से (द) हंसी मजाक करने से

4 मन की खुशी और शांति किससे बढ़ती है -

(अ) अहंकार करने से (ब) हंसने से

(स) बातें करने से (द) रोने से

5 हंसी मजाक के क्या फायदे है? संक्षेप में लिखिए

उत्तर 1ब, 2 स, 3 द, 4 ब

4 महात्मा गांधी अपना काम अपने हाथ से करने पर बल देते थे। वे प्रत्येक आश्रमवासी से आशा करते थे कि वह अपने शरीर से संबंधित प्रत्येक कार्य, सफाई तक स्वयं करेगा। उनका कहना था कि जो श्रम नहीं करता है, वह पाप करता है और पाप का अन्न खाता है। ऋषि-मुनियों ने कहा है बिना श्रम किए जो भोजन करता है वह वस्तुतः चोर है। महात्मा गांधी का समस्त जीवन दर्शन श्रम सापेक्ष था। उनका समस्त अर्थशास्त्र यही बताता था कि प्रत्येक उपभोक्ता को उत्पादनकर्ता होना चाहिए। उनकी नीतियों की अपेक्षा करने से परिणाम हम आज भी भोग रहे हैं। न गरीबी कम होने से आती है, न बेरोजगारी पर नियंत्रण हो पा रहा है और न अपराधों की वृद्धि हमारे वश की बात हो रही है। दक्षिण कोरिया वासियों ने श्रमदान करके ऐसे श्रेष्ठ भवनों का निर्माण किया है जिनसे किसी को भी ईर्ष्या हो सकती है।

1 श्रमदान कर श्रेष्ठ भवनों का निर्माण किस देश ने किया?

(अ) अमेरिका (ब) जर्मनी (स) फ्रांस (द) दक्षिण कोरिया

2 गद्यांश में किस महापुरूष की बात कहीं गई है?

(अ) नेहरू (ब) गांधीजी (स) वल्लभ भाई पटेल (द) इन्द्रिरा गांधी

3 श्रम नहीं करने वाला क्या करता है -

(अ) पाप (ब) पुण्य (स) समझौता (द) इनमें से कोई नहीं

4 गांधी का जीवन दर्शन था -

(अ) कर्महीन (ब) अनुशासनहीन (स) श्रम सापेक्ष (द) उपर्युक्त सभी

5 बिना श्रम किए जो भोजन करता है वह वस्तुतः चोर है

(अ) ऋषि मुनि (ब) गांधीजी (स) लाल बहादुर शास्त्री (द) इनमें से कोई नहीं

नोट – (विद्यार्थी स्वयं उत्तर ढूंढने का अभ्यास कर अपने विषय का ज्ञान बढ़ाऐं।

5 संसार के सभी देशों में शिक्षित व्यक्ति की सबसे पहली पहचान यह होती है कि वह अपनी मातृभाषा में दक्षता से काम कर सकता है । केवल भारत ही एक देश है जिसमें शिक्षित व्यक्ति वह समझा जाता है जो अपनी मातृभाषा में दक्ष हो या नहीं किन्तु अंग्रेजों में जिसकी दक्षता असंदिग्ध हो। संसार के अन्य देशों में सुसंस्कृत व्यक्ति वह समझा जाता है। जिसके घर में अपनी भाषा की पुस्तकों का संग्रह हो और जिसे बराबर यह पता रहे कि उसकी भाषा की अच्छे लेखक और कवि कौन हैं तथा समय समय पर उनकी कौन सी कृतियाँ प्रकाशित हो रही है। भारत में स्थिति दूसरी है। यहां प्रायः घर में साज-सज्जा के आधुनिक उपकरण तो होते हैं किन्तु अपनी दुरावस्था भले ही किसी ऐतिहासिक प्रक्रिया का परिणाम है किन्तु वह सुदशा नहीं, दुरावस्था ही है और जब तक वह दुखवस्था कायम है हमें अपने आप को सही अर्थों में शिक्षित और सुंस्कृत मानने का ठीक ठीक न्यायसंगत अधिकार नहीं है।

1 'सुसंस्कृत' उदाहरण है -

(अ) प्रत्यय का (ब) उपसर्ग का (ग) संधिका (द) समास का

2 संसार के सभी देशों में शिक्षित होने की पहचान है -

(अ) अंगेजी में दक्षता (ब) मातृभाषा में दक्षता

(ग) साज-सज्जा में दक्षता (द) पाककला में दक्षता

3 भारत में जो अंग्रेजी जानता है उसे क्या माना गया है -

(अ) शिक्षित (ब) बेरोजगार (ग) अनपढ़ (द) इनमें से कोई नहीं

4 भारतीयों के घरों में किसका अभाव है -

(अ) साज सज्जा का (ब) आधुनिक उपकरणों का

(ग) अंग्रेजी पुस्तकों का (द) मातृभाषा की पत्र पत्रिकाओं का

उत्तर 1 ब 2 ब 3 अ 4 द

6 दैनिक जीवन में हम अनेक लोगों से मिलते है जो विभिन्न प्रकार के काम करते हैं - सड़क पर ठेला लगाने वाला, दूधवाला, अगर नगर निगम का सफाईकर्मी, बस कंडक्टर, स्कूल अध्यापक, हमारा सहपाठी और ऐसे ही कई अन्य लोग। शिक्षा, वेतन, परंपरागत चलन और व्यवसाय के

स्तर पर कुछ लोग निम्न स्तर के माना जाते हैं। किन्तु यदि यही अपने कोर्स की कुशलता पूर्वक करते हैं और उत्कृष्ट सेवाएं प्रदान करते हैं तो उनका कार्य उस सचिव के कार्य से कहीं बेहतर है जो अपने काम में ढिलाई बरतता है तथा अपने उत्तरदायित्वों का निर्वाह नहीं करता। वास्तव में पद महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि महत्वपूर्ण होता है कार्य के प्रति समर्पण भाव और कार्यप्रणाली में पारदर्शिता।

उपयुक्त गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

1 कार्य प्रणाली कैसी होनी चाहिए ?

(अ) तटस्थ (ब) कमजोर (ग) अनुशासित (द) पारदर्शी

2 कार्य के प्रति कैसा भाव होना चाहिए?

(अ) तिरस्कार का (ब) अहंकार का (ग) अपमान का (द) समर्पण का

3 उक्त गद्यांश में किसकी चर्चा की गई है -

(अ) समय की (ब) आराम की (ग) कार्य की (द) इनमें से कोई नहीं

4 उक्त गद्यांश में दैनिक जीवन में हमें कौन कौन लोग मिलते है? लिखिए

उत्तर 1 द 2 द 3 स

उत्तर 4 दैनिक जीवन में हम सड़क पर ठेला लगाने वाले, दूध वाले, नगर निगम का सफाईकर्मी, बस कंडक्टर, स्कूल अध्यापक, हमारे सहपाठी और ऐसे ही कई अन्य लोगों से मिलते है।

7 भारत में गुरू शिष्य संबंध का वह भव्य रूप आज साधुओं, पहलवानों और संगीतकारों में ही थोड़ा बहुत ही सही, पाया जाता हैं। भगवान रामकृष्ण बरसों योग्य शिष्य को पाने के लिए प्रार्थना करते रहे। उनके जैसे व्यक्ति को भी उत्तम शिष्य के लिए रो-रोकर प्रार्थना करनी पड़ी थी। इसी से समझा जा सकता है कि एक गुरू के लिए उत्तम शिष्य कितना मंहगा और महत्वपूर्ण है। संतानहीन रहना उन्हें दुःख नहीं है। इस संबंध में भगवान ईसा का एक कथन सदा स्मरीण हैं। उन्होंने कहा था, 'मेरे अनुयायी लोग मुझसे कही अधिक महान् है और उनकी जूतियाँ होने की योग्यता भी मुझे नहीं। सही बात है, गांधी जी बनने की क्षमता जिनमें हैं उन्हें गांधीजी अच्छे लगते हैं और वे ही उनके पीछे चलते भी है। विवेकानन्द की रचना सिर्फ उन्हें पसंद आएगी जिनमें विवेकानन्द बनने की अदभुत शक्ति निहित होगी।

उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

1 उत्तम शिष्य के लिए रो-रोकर प्रार्थना किसने की थी?

(अ) रामकृष्ण परमहंस (ब) विवेकानन्द (ग) गांधीजी (द) सुभाष चन्द्र बोस

2 अपने अनुयायियों के समक्ष स्वयं को जूतियों के योग्य भी नहीं समझा?

(अ) जवाहरलाल नेहरू (ब) ईसा मसीह ने (ग) राजीव गांधी ने (द) इनमें से कोई नहीं

3 भारत में गुरू-शिष्य संबंध आजकल किन लोगों में पाया जाता है?

(अ) साधुओं में (ब) पहलवानों में (ग) संगीतकारों में (द) उपर्युक्त सभी

4 विवेकानन्द की रचना किन्हें पसन्द आएगी -

(अ) जो अनेक मित्र होगे (ब) रिश्तेदार होगे

(ग) सभी देशवासियों को (द) उनके समान गुणों वाले को

उत्तर - 1 अ 2 ब 3 स 4 द

10.4 सारांश

प्रस्तुत इकाई में आपने अपठित गद्यांशों को पढ़कर उनमें पूछे गए प्रश्नों के उत्तर ढ़ढना सीखा है। वस्तुत: अपठित गद्यांश को समझना एक प्रकार की कला है। गद्यांश को सर्वप्रथम दो से तीन बार पढ़ना चाहिए तभी उसका मूल विषय या भाव समझ में आता है। यह इकाई आपकी विषय बोध की जांच और भाषा से संबंध रखती है।

10.11 अभ्यासार्थ प्रश्न

1 निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर उनके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर गद्यांश में से दीजिए-

क स्त्रियों के पास एक महान शक्ति सोई हुई पडी है। दुनिया की आधी से बडी ताकत उनके पास है। आधी से बडी ताकत इसलिए कहता हूं कि स्त्रियां आधी तो है ही दुनिया में, आधी बड़ी इसलिए कि बच्चे बच्चियाँ उनकी छाया में पलते हैं और वे जैसा चाहें उन बच्चे और बच्चियों को परिवर्तित कर सकती है। पुरूषों के हाथ में कितनी ही ताकत हो, लेकिन पुरूष एक दिन स्त्री की गोद में होता है, वहीं से वह अपनी यात्रा शुरू करता है।

एक बार स्त्री की पूरी शक्ति जाग्रत हो जाए और वे निर्णय कर लें कि किसी प्रेम की दुनिया को निर्मित करेंगी जहां युद्ध नहीं होगें, जहां हिंसा नहीं होगी जहां राजनीति नहीं होगी, जहां पॉलीटिशियन नहीं होंगे जहां जीवन में कोई बीमारियां नहीं होगी।

जहां भी प्रेम है, जहां भी करूणा है, जहां भी दया है वहां स्त्री मौजूद है। स्त्री के पास आधी से भी ज्यादा बड़ी ताकत है और वह पांच हजार वर्षों से बिल्कुल सोवे हुई पड़ी है। नारी की शक्ति का कोई उपयोग नहीं हो सका है। भविष्य में यह उपयोग हो सकता है। उपयोग होने का एक सूत्र यही है कि स्त्री यह तय कर ले कि उन्हें पुरूषों जैसा नहीं हो जाना है।

1 स्त्री में कौन कौन से गुण प्रबल है -

(अ) संघर्ष और साहस का (ब) नैतिकता और समझदारी

(ग) प्रेम और करूणा (द) शांति और उन्नति

2 इस गद्यांश में किसकी शक्ति को जाग्रत करने की बात हो रही है?

(अ) पुरूष (ब) बच्चे (ग) स्त्री (द) इनमें से कोई नहीं

3 जहां प्रेम है वहां क्या है?

(अ) करूणा (ब) घृणा (ग) क्रोध (द) सम्मान

5 पुरूष की यात्रा शुरू होती है -

(अ) बचपन से (ब) स्त्री की गोद से (ग) दुनिया में आने से (द) उपर्युक्त सभी

ख समस्याएं वस्तुतः जीवन का पयार्य है। यदि समस्याएं न हो, तो आदमी प्रायः अपने को निष्क्रिय समझने लगेगा। ये समस्याऐं वस्तुतः जीवन को प्रगति का मार्ग प्रशस्त करती है। समस्या को सुलझाते समय, उसका समाधान करते समय व्यक्ति का श्रेष्ठतम तत्व उभरकर आता है। धर्म, दर्शन, ज्ञान, मनोविज्ञान इन्हीं प्रयत्नों की देन हैं। पुरानों में अनेक कथाएं यह शिक्षा देती है कि मनुष्य जीवन की हर स्थिति में समाधान के उपाय सोचे। जो व्यक्ति जितना उत्तरदायित्व पूर्ण कार्य करेगा, उतना ही उसके समक्ष समस्याएं आएंगी और उनके परिप्रेक्ष्य में ही उसकी महानता का निर्धारण किया जाएगा।

दो महत्वपूर्ण तथ्य स्मरणीय हैं - प्रत्येक समस्या अपने साथ संघर्ष लेकर आती है। प्रत्येक संघर्ष के गर्भ में विजय निहित रहती है। समस्त ग्रंथों और महापुरूषों के अनुभवों का निष्कर्ष यह है कि संघर्ष से डरना अथवा उससे विमुख होना लौकिक व पारलौकिक सभी दृष्टियों से अहितकर है। मानव धर्म के प्रतिकूल है और अपने विकास को अनावश्यक रूप से बाधित करना है। आप जागिए, उठिए दृढ़ संकल्प और उत्साह एवं साहस के साथ संघर्ष रूपी विजय रथ पर चढ़ जाएं और अपने जीवन के विकास की बाधाओं रूपी शत्रुओं पर विजय प्राप्त कीजिए।

1 विजय का निवास कहां होता है?

(अ) आकांक्षा में (ब) लक्ष्य में (ग) उत्साह में (द) संघर्ष में

2 मनुष्य का श्रेष्ठतम कब उभर कर सामने आता है?

(अ) समस्या में पड़कर (ब) संघर्ष में पिसकर (ग) समस्या को सुलझाते हुए (द) कर्म करते हुए

3 'निष्क्रिय' का विलोम शब्द बताइये

(अ) अक्रिय (ब) प्रक्रिया (ग) निष्काम (द) सक्रिय

4 मानव धर्म के प्रतिकूल क्या है?

10.6 संदर्भ ग्रंथ

1 डॉ. धीरेन्द्र वर्मा: नवीन हिन्दी व्याकरण, हिन्दी मंदिर, इलाहाबाद

2 कामता प्रसाद गुरू: हिन्दी व्याकरण, काशी नागरी प्रचारिणी वाराणसी

3 पण्डित श्रीलाल, भाषा चन्द्रोदय (भारतवर्षीय हिन्दी भाषा का व्याकरण)

4 धीरेन्द्र वर्मा: हिन्दी भाषा का इतिहास, हिन्दुस्तान अकादमी इलाहाबाद।

5. किशोरीदास वाजपेयी: हिन्दी शब्दानुशासन, नागरी प्रचारिणी सभा. वाराणसी 1958

6. किशोरीदास वाजपेयी: भारतीय भाषा विज्ञान, चौखम्भा विद्या भवन वाराणसी 1959

7. किशोरीदास वाजपेयी: हिन्दी की वर्तनी एवं शब्द विश्लेषण, नागरी प्रचारिणी सभा. वाराणसी 1968

8. डॉ. राघव प्रकाश : व्यावहारिक सामान्य हिन्दी, पिंक सिटी पब्लिशर्स, जयपुर

9. डॉ. वेकट शर्मा : व्यावहारिक हिन्दी व्याकरण, सूर्यनगरी प्रकाशन, जोधपुर

इकाई - 11

पत्र लेखन

इकाई की रूपरेखा

11.0 उद्देश्य

11.1 प्रस्तावना

11.2 पत्र-लेखन ढांचा

11.3 पत्र लेखन के विविध प्रकार

11.4 पत्र में सम्बोधन, अभिवादन और स्वनिर्देश

11.5 कतिपय पत्र (अभ्यास हेतु)

11.6 सारांश

11.7 अभ्यासार्थ प्रश्न

11-8 संदर्भ ग्रंथ

11.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप -

- पत्र लेखन की विधा की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे
- पत्र लेखन के विविध स्वरूप प्रकार, सम्बोधन, अभिवादन व स्वनिर्देश के तरीके को समझ सकेंगे
- अभ्यास हेतु दिए गये पत्रों को पढ़कर स्वयं पत्र लिखना सीख सकेंगे।
- पत्र लेखन का महत्व समझ सकेंगे।

11.1 प्रस्तावना

भाषा के माध्यम से जो मानव व्यवहार होता है, उसमें पत्र एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

किसी भी राष्ट्र अथवा राज्यों से संबंधित मंत्रालयों, मुख्यालयों, संबंद्ध कार्यालयों, सरकारी कार्यालयों, स्वयंसेवी संस्थाओं, सामाजिक दायरों, विविध व्यवसायों सभी क्षेत्रों में आज पत्र लेखन अनिवार्यत: होता है। प्रत्येक कार्यालय में ऐसे व्यक्तियों की आवश्यकता अनुभव की जाती है और उस व्यक्ति को महत्व दिया जाता है जो स्वयं पत्र व्यवहार की योग्यता रखता हो। पत्र लेखन एक रचनात्मक कौशल है।

जो आपके व्यक्तित्व को भी उजागर करता है। पत्र लेखन एक कला है। इसको लिखने के कुछ चरण होते है जिनका अनुसरण करते हुए प्रयोग में लाना विद्यार्थियों को आना चाहिए।

आज पत्र हमारी रोजमर्रा की जिन्दगी का अनिवार्य हिस्सा बन गया है। प्रतिदिन हम औपचारिक या अनौपचारिक अनेक प्रकार के पत्र लिखते हैं। घर में परिवार के सदस्यों और मित्रों का आदान प्रदान होता है तो घर से बाहर निकलकर कहीं सामाजिक कमियों को उजागर करने के लिए शिकायती पत्र लिखते हैं, कहीं नौकरी के लिए आवेदन पत्र लिखते है, कहीं प्रार्थना पत्र तो कहीं बधाई पत्र या कही शोक संदेश। इसी तरह विज्ञप्ति, विज्ञापन, अधिसूचना, विज्ञापित टेंडर जैसे अनेक प्रकार के अनौपचारिक सरकारी पत्राचार भी आज समाज के संवाद करने का एक माध्यम बन चुके हैं।

प्रस्तुत इकाई में पत्र लेखन के अन्तर्गत व्यक्तिगत और सामाजिक पत्रों का लेखन अध्ययन करना सिखाया जाएगा।

11.2 पत्र-लेखन ढांचा

पत्र लेखन एक कला है, विचार अभिव्यक्ति का एक माध्यम है। व्यावहारिक व्याकरण के रचना खण्ड का यह एक महत्वपूर्ण भाग है।

पत्र लेखन का ढांचा (अंग) पत्र लेखन को सामान्यत सात भागों में विभाजित किया है। कुछ विशेष नियमों को छोड़कर सभी पत्रों में प्रायः एकरूपता रहती है।

1 पता व तारीख - पत्र लिखने वाले को सर्वप्रथम पत्र के दाहिने और सबसे ऊपर अपना पता व पत्र लिखने की तारीख लिखनी चाहिए। (व्यक्तिगत और पारिवारिक पत्रों के लिए) इससे पत्र का उत्तर देने वाले को पत्ते के लिए भटकना नहीं पड़ता।

2 सम्बोधन - तिथि की बाई और तथा अगली पंक्ति में अवस्था, संबंध तथा ओहदे का ध्यान रखते हुए सम्बोधन लिखा जाता है।

3 अभिवादन - सम्बोधन के नीचे अगली पंक्ति में समुचित अभिवादन लिखा जाता है जैसे नमस्कार, प्रणाम, सादर दण्डवत , प्यार, आशीर्वाद आदि शब्द अभिवादन वाले भाग में आते हैं।

4 मुख्य भाग - उपर्युक्त चरणों के बाद पत्र के मुख्य भाग में पत्र की पावती कुशल समाचार संदेश आदि आते है।

6 समापन - पत्र की समाप्ति पत्र सम्बोधन एवं अभिवादन के अनुरूप पत्र का समापन किया जाता है। जैसे भवदीय, विनीत, आपका आज्ञाकारी शिष्य, प्रिय पुत्र, शुभैषी, कृपाकांसी आपका ही आदि शब्दों में समापन होता है। अन्त में पत्र लेखक का नाम और उसके हस्ताक्षर होने भी जरूरी है।

7 पता - लिफाफे /पोस्टकार्ड/अतर्देशीय पत्र के बाहर बायी तरफ पत्र भेजने वाले को अपना स्पष्ट पता लिखना चाहिए।

8 पत्र प्राप्त करने वाले का पता - पत्र प्राप्त करने वाले का पता स्पष्ट शब्दों में लिफाफे/पोस्टकार्ड/अन्तर्देशीय पत्र पर लिख देना चाहिए।

11.3 पत्र लेखन के विविध प्रकार

पत्रलेखन भी हिन्दी रचना का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। उसके माध्यम से हम डाक अथवा संचार के भिन्न-भिन्न साधनों द्वारा अपनी कुशलता आदि के व्यक्तिगत और पारिवारिक समाचार अपने परिजनों अथवा मित्रों को भेज सकते हैं। सामाजिक प्राणी होने के कारण हमें अपने जीवन में अनेक लोगों और संस्थाओं से संपर्क भी साधने पड़ते हैं, जिनमें पत्रलेखन अत्यंत उपयोगी भूमिका निभाता है।

पत्रलेखन के भी अनेक रूप और प्रकार होते हैं जिनकी लिखने की अलग अलग विधियां अथवा तरीके- है 1 सामान्य रूप से पत्र निम्नलिखित प्रकार के होते है -

1 वैयक्तिक अथवा व्यक्तिगत पत्र

2 पारिवारिक तथा सामाजिक पत्र

3 व्यावसायिक अथवा लेनदेन सम्बन्धी पत्र

4 सरकारी तथा प्रशासनिक पत्र

5 पदाधिकारियों के नाम पर अर्द्धसरकारी पत्र 1

6 नौकरी अथवा अन्य किन्हीं कारणों से लिखे जाने वाले प्रार्थनापत्र।

7 किसी प्रकार के चयन अथवा कार्य विशेष के लिए भेजे जाने वाले आवेदन पत्र है

8 समाचार पत्रों के सम्पादकों तथा सार्वजनिक कार्यकर्ताओं को लिखे जाने वाले शिकायती अथवा अन्य अनावश्यकताओं से संबंधितपत्र।

9 अभिनंदन अथवा सम्मानसूचक पत्र 1

10 विदाई पत्र।

11 विवाह अथवा अन्य शुभ अवसरों पर भेजे जाने वाले निमंत्रण पत्र।

12 संवदेना सूचक शोक पत्र।

13 किसी की सफलता अथवा पदोन्नति पर भेजे जाने वाले बधाई पत्र आदि।

1 . **परिवारिक पत्र -** परिवारिक पत्रलेखन का ढाँचा तो प्राय: व्यक्तिगत पत्रों जैसा ही होता है, किन्तु रिश्तों को निकटता के कारण उनका कलेवर (समाचार लेखन) अधिक औपचारिक नहीं होता । वैसे तो सभी पत्रों के लिए है खुलापन' जरूरी है, किन्तु उस खुलेपन की कुछ सीमाएँ और मर्यादाएँ भी रहती हैं।

2 व्यावसायिक और कार्यालीय **पत्र -** व्यावसायिक और कार्यालीय पत्रों में लेखक को इस बात का ध्यान रखना पड़ता है कि उनमें वे ही बाते एक सलीके के साथ लिखी जाएँ, जिनमें अनुशासन तथा ' डेकोरम' बना रहे। व्यावसायिक और राजकीय कार्यों से संबंधित पत्रों में उन पत्रों के संदर्भ देने भी जरूरी हैं, जिनके उत्तर में पत्र लिखा जा रहा है 1 ऐसा करने से पत्राचार में सुविधा रहती है तथा आगे की कार्यवाही सुचारू रूप से की जा सकती हैा यह पत्र एक प्रकार से आवेदन पत्र जैसे ही होते हैं।

उदाहरण के लिए यदि किसी व्यवसाय कारण से पत्र लिखा रहा है, तो उसमें वे सभी मुद्दे आने चाहिए जिनमें पत्र लेखन से अभिन्न संभव हैा इसी प्रकार किसी कर्मचारी को अपने कार्यवश अवकाश छुट्टी लेना होता हैं, तो उसे सम्बद्ध अधिकारी को कार्यालीय सम्बोधन करते हुए अपने पत्र का ढाँचा पारिवारिक पत्रों से कुछ भिन्न रखना पड़ता है और अपने आवेदन पत्र मेँ उन कारणों का भी उल्लेख करना होता है, जिनके आधार पर वह छुट्टी लेने का आवेदन करता है, यदि नौकरी आदि के लिए आवेदन करना होता है, तो पत्र के कलेवर में अपनी शैक्षणिक योग्यता तथा कार्यानुभन आदि के उल्लेख करने भी जरूरी हैं।

ऐसे आवेदन पत्रों केप्रारम्भ में संदर्भ के अंतर्गत उस विज्ञप्ति का उल्लेख करना भी आवश्यक है जिसके उत्तर में आवेदन किया जा रहा है 1 प्रमाण पत्रों और अनुभवों ककी सत्यापित प्रतिलिपियाँ भी संलग्न करना आवश्यक है, जिनके बिना प्रार्थी का आवेदन पत्र निरस्त भी किया जा सकता है। अभिप्राय यह है कि ऐसे पत्र सभी दृष्टियों से के पूर्ण होने चाहिए ताकि उनमें किसी भी प्रकार की कमी न रहे है।

3. अभिनन्दन पत्र - अभिनन्दन पत्रों का रूप परिवारिक पत्रों से सर्वथा भिन्न, होता है । उनमें अभिनंदन (सम्मान) किए जाने वाले व्यक्ति के नाम, पद और उसकी उपाधियों आदि का प्रारभिक उल्लेख करने के पश्चात् भिन्न भिन्न अनुच्छेदों में समुचित सम्बोधन करते हुए उसके व्यक्ति और कृतित्व से सम्बन्धित उन उपलब्धियों का भी संक्षिप्त विवरण दिया जाता हैं।

. उसके अंत में उसके दीर्घ और सुखी जीवन की कामना करते हुए उस संस्थान अथवा उन व्यक्तियों और पदाधिकारियों के नाम लिखे जाते हैं, जिनकी और से अभिनंदन किया गया है। अंत में बाई तरफ स्थान और 'दिनांक' अंकित किए जाते हैं , जिनसे अभिनंदन-समारोह का स्थल और अवसर सूचित हो सके।

4. **निमन्त्रण-पत्र -** ऐसे पत्र किसी के शुभ-विवाह, जन्मदिन, नवीन गुह प्रवेश, सामाजिक उत्सव और धार्मिक तथा सांस्कृतिक समारोहों पर लिखे जाते हैं, जिनके लिखने की दो विधियाँ हैं--1 . औपचारिक और 2- अनौपचारिक।

ऐसे पत्रों का प्रारूप प्राय **:** विश्वजनीन सा बन गया है, जिसमें निमंत्रण देने वाले व्यक्ति अथवा व्यक्तियों का प्रारम्भिक उल्लेख और निमंत्रण का प्रमुख प्रयोजन निर्दिष्ट करने हुए आयोज्य समारोह का स्थान, समय तथा निर्धारित कार्यक्रम की सूचना रहती है । यदि वह कार्यक्रम प्रीतिभोज, आशीर्वाद समारोह, धार्मिक अनुष्ठान, सांस्कृतिक आयोजन तथा अन्य जिन किन्ही कारणों से प्रायोजित है, त्तो उनका उल्लेख करना भी आवश्यक है, ताकि निमंत्रित व्यक्ति तथा उसके परिवार संबंधितअन्य परिजन उसमें निर्धारित स्थान पर यथासमय भाग ले सकें।

अत: वे अत्यंत संक्षिप्त और सारगार्भित होने चाहिए।

5 . **शिकायती पत्र -** ऐसे पत्र भी आज के पत्र लेखन से अनिवार्यत जुडे हुए हैं 1 वस्तुत: आज का युग शिकायतों से हुए वातावरण का ही युग हो गया है, जिसमें शिकायत करना एक सामान्य धर्म सा बन गया है । ये शिकायतें 'बेबुनियाद' और ' सप्रयोजन भी हो सकती हैं। जहाँ तक शिकायती पत्रों का सम्बंध वे सही अधिकारी 'को सही समय पर ऐसे प्रमाणों के साथ ऐसी विधि लिखे जाने चहिए जिनसे शिकायतों को दूर करने के लिए वह बाध्य ही जाये अन्यथा कोरी कागजी कार्यवाही से कोई बात नहीं बन सकती । बिजली, पानी, सफाई है चिकित्सा, शिक्षा आदि की आपूर्ति में ढील, लापरवाही, पक्षपात, भ्रष्टाचार आदि के जो काले कारनामे आज के लोकतंत्र में दृष्टिगोचर हो रहे हैं, उन्हें रोकने में शिकायती पत्र बहुत अधिक उपयोगी सकते हैं।

6. **बधाई पत्र -** किसी की उल्लेखनीय सफलता, पदोन्नति, वर्षगांठ, विशिष्ट क्रेडिट पुरस्कार-प्राति तथा अन्य हर्षवर्द्धक कारणों से अपनी खुशी का इजहार करने के लिए जो पत्र लिखे जाते हैं, उन्हें बधाई पत्र कहते है । ये बधाइयों तार, दूरभाष, फैक्स , संदेशवाहक तथा अन्य संचार साधनों के माध्यम से भी भेजी जाती है जिन्हें विभिन्न साधनों के अनुरूप संक्षिप्त भी किया जाता है । प्रस्तुत: बधाईपत्र एक प्रकार से आत्मीयता के ही प्रदर्शन है जिनसे को खुशियाँ परस्पर बाँटी जाती हैं।

7. **शोक अथवा संवेदनासूचक पत्र** - विशेष कारणों से किसी की जुदाई आदि के अवसर यर उनसे बिछुड़ने का दुख प्रकट करने के लिए जो पत्र (आयोजित विदाई समारोहों पर प्रेमपूर्ण उपहारों सहित) भेंट किए जाते हैं , उन्हें विदाई पत्र कहते है। इन पत्रों में बिछुड़ने वाले व्यक्ति के कार्यों और योग्यता की प्रशंसा तो की ही जाती है, साथ ही पथ उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभ कामनाएँ भी निहित रहती हैं। ऐसे पत्र एक प्रकार के स्मृति-चिह्न के ही प्रतिरूप कहे जा सकते हैं

8 . **सरकारी पत्र -** सरकारी पत्रों का रूप तो सरकारी पत्रों का एक अन्य रूप अर्द्ध सरकारी अथवा अर्द्ध - शासकीय पत्र हैं , जो किसी अधिकारी विशेष के उसके नाम पर लिखा जाता है।

उसको विषय सामग्री को प्राय: वहीं होती है, जो औपचारिक प्रणाली से लिखे गए कार्यालीय पत्र की होती है, किन्तु उसे अधिकारी के नाम पर लिखने का मूल उद्देश्य केवल इतना ही होता है ताकि वह अधिकारी प्रार्थी के आवेदन को प्राथमिकता देकर उसकी आवश्यकता और कठिनाइयों में व्यक्तिगत रुचि ले और उन्हें दूर करने में अधिक तत्परता दिखावे।

11.4 पत्र में सम्बोधन, अभिवादन और स्वनिर्देश

पत्रों के संबोधन और अभिवादन आदि के और भी रूप हो सकते है से जिनका चयन करने का आधार पत्र-लेखक और पत्र पाने वले के पारस्परिक सम्बन्ध होते हैं । भाई बहिन, पति-पत्नी, अधिकारी-कर्मचारी, गुरु-शिष्य, सखा-सहेली, पिता-पुत्र, माँ'- बेटी, सास-बहू तथा परिवारिक रिश्तों वाले 'छोटे-बड़े और समवयस्क व्यक्ति अपनी अभिरुचि, पसंद तथा संबंधों क्री प्रगाढ़ता तथा अभिन्नता के अनुरूप जैसा उचितसमझें, पत्र लिखते समय संबोधन आदि कर सकते हैं । नई प्रणाली के अनुसार अभिवादन का उल्लेख अब अनिवार्य न रहकर वैकल्पिक मात्र हो गया है।

इसके लिए निम्नलिखित तालिका दी जा रही है –

पत्र का प्रकार	संबंध	सम्बोधन	अभिवादन	समापन
व्यक्तिगत पत्र	माता-पिता, बड़े भाई अथवा बड़ी बहन तथा अन्य सगे और आदरणीय संबंधियों को	पूज्यवर, माननीय, आदरणीय, श्रद्धेय, पूज्य, पूज्या, परम आदरणीय	सादर नमस्कार, सादर प्रणाम, चरण - स्पर्श, नमस्कार	आपका आज्ञाकारी, स्नेह पात्र, स्नेह भाजक सेवक, कृपा पात्र, स्नेहाकांक्षी, स्नेहाधीन, भवदीय, कृपाकांक्षी, विनित, आपका
	प्रिय अथवा सहपाठी को	प्रिय पुत्र, मित्रवर, प्रिय, बंधु बंधुवर, प्रिय	नमस्ते, सप्रेम, नमस्कार	तुम्हारा, अपना ही, अभिन्न प्राण, अभिन्न हृदय, तुम्हारा वहीं, चिर स्नेही, चिरशुभाकांक्षी, अभिन्न मित्र
	पत्नी अथवा पति को	प्रिय प्राण, प्रियतमे, प्राण वल्लभे, चिर, सहचरी, प्राणेश्वरी, प्रिय, प्राणचर, प्रियवर, प्रियतम	सस्नेह, नमस्कार, प्यार	तुम्हारी आपकी, अभिन्न हृदया, आपकी चिरसंगिनी, तुम्हारा ही तुम्हारी ही।
	अपने से छोटी को	प्रिय परम प्रिय, प्रियवर, चिरंजीव	सुखी रहो, आशीर्वाद, चिरंजीव रहो।	तुम्हारा शुभ चिंतक, हितैषी, शुभाकांक्षी, शुभेच्छु, शुभच्छुक ।
व्यावहारिक पत्र	पुस्तक विक्रेता, बैंक मैनेजर, अथवा अन्य व्यापारी आदि	श्रीमान जी, महोदय, प्रिय महोदय, माननीय महोदय, प्रबंधक महोदय		भवदीय, आपका निवेदक।
	प्राधानाचार्य	श्रीमान जी, महोदय, मान्यवर, माननीय महोदय, आदरणीय, प्रधानाचार्य जी		विनीत प्रार्थी, भवदीय, आपका आज्ञाकारी, आपका स्नेह भाजक, कृपाकांक्षी, ।
	संबद्ध अधिकारी	मान्य, महोदय, मान्य		भवदीय, विनीत, आपका स्नेह

		माननीय, महोदय		भाजक/ कृपाकांक्षी,
कार्यालयी पत्र	संपादक, नगर निगम, अधिकारी, केन्द्रीय मंत्री, रेलवे अधीक्षक, पोस्टमास्टर	मान्यवर, आदरणीय, संपादक महोदय, मान्यवर, महोदय, मान्य महोदय		कृपाकांक्षी,, निवेदक, भवदीय, उत्तराकांक्षी, प्राथी विनीत।

11.5 कतिपय पत्र (अभ्यास हेतु)

कुछ प्रमुख पत्रों के नमूने
पारिवारिक पत्र
(माता के नाम पुत्रो का पत्र)

कानोडिया महाविद्यालय

कन्या छात्रावास, कमरा नं. - 9
जयपर – 302015
दिनांक 20 जनवरी, 2014

परम पूजनीय माताजी,

सादर प्रणाम।

आपका पत्र अभी दोपहर की डाक से मिला आप सबकी कुशलता और स्वस्थता के समाचार जानकार हार्दिक प्रसन्नता हुई।

मै आपको पिछले दो सप्ताह से एक भी पत्र नहीं लिख सकी, मुझे हार्दिक खेद है। इसका मूल कारण मेरी लापरवाही तथा आलस्य न होकर मेरी कार्यव्यस्तत्ता है। प्राय: पन्द्रह दिनों से हमारे महाविद्यालय में खेलकूद प्रतियोगिताएँ, साहित्यिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि चल रहे हैं, जिनमें मैं कक्षा की प्रतिनिधि छात्रा की हैसियत से भाग ले रही हूँ। '

आपको यह जानकर प्रसन्नत्ता होगी कि मैं उन बैंडमिटन प्रतियोगिता में निरंतर प्रथम स्थान प्राप्त कर रही हूं।
जिसका पुरस्कार 23 तारीख को आयोज्य वार्षिक समारोह के अवसर पर मुझे दिया जाएगा।

मेरा अध्ययन नियमित रूप से चल रहा है। मुझे विश्वास है कि आपके आर्शीवाद से मेरा परीक्षाफल भी श्रेष्ठ और अत्यंत संतोषप्रद रहेगा 1

प्रिय छोटी बहिन भारती को सस्नेह प्यार 1 आशा है, वह भी पढ़ने में खूब मन लगा रही होगीं। अब तो छुट्टियों में ही मै मुंबई आ सकूँगी। पूज्य पिताजी को प्रणाम । पत्रोत्तर शीघ्र देने की कृपा करें
आपकी प्यारी पुत्री

महिमा

कार्यालयी पत्र
(आकस्मिक अवकाश के लिए)

सेवा में,
श्री प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
ओसियां (मारवाड़)

विषय – तीन दिन के आकास्मिक अवकाश हेतु

मान्यवर,

निवेदन है कि मुझे अपने भतीजे के विवाह में सम्मिलित होने के लिए कल की गाडी से जयपुर जाना है। विवाह के कार्यक्रम दिनांक 17 मार्च से 19 मार्च 2014 तक चलेगे। जिसमें मेरी सहपरिवार उपस्थिति अनिवार्य है।

कृपया मुझे दिनांक 17 मार्च से 19 मार्च तक तीन दिन का आकस्मिक अवकाश तथा ओसियां से बाहर रहने की अनुमति प्रदान करने का कष्ट करें।

ओसियां (मारवाड़)

दिनांक 20.1.2014

आपका विश्वासपात्र
कमलेश कुमार, व्याख्याता (भौतिकी)

छात्रवृत्ति के लिए आवेदन – पत्र

सेवा में,
श्रीमान प्रधानाचार्य जी,
राजकीय नवीन उ.मा. विद्यालय
जयपुर।

विषय - छात्रवृत्ति प्राप्त करने हेतु

मान्यवर,
निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय में विगत पाँच वर्षो से निरंतर अध्ययन कर रहा हूँ। मुझे प्रतिवर्ष कक्षा में प्रथम स्थान और प्रथम श्रेणी में भी सर्वाधिक अंक मिले हैं, जिनके कारण मुझे विद्यालय को ओर से निरन्तर छात्रवृत्ति दी जा रही है।

इस सत्र में मैं नवम कक्षा में पढ़ रहा हूँ। हम चार भाई बहिन हैं जिनकी पढाई का भार मेरे माता-पिता पर वहुत अधिक पड़ रहा है। चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी होने के कारण उन्हें अपने परिवार का खर्च चलाने में भी बहुत कठिनाइयाँ होती हैं।

कृपया मेरी कठिनाइयों पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करते हुए मुझे कक्षा नवम् की छात्रवृत्ति देकर कृतार्थ करें, जिससे मैं अपना अध्ययन सुचारू रूप से चला सकूँ।

अपने इस आवेदन पत्र के साथ मैं अपने गत वर्ष के परीक्षाफल के प्राप्तांक तथा छात्रवृत्ति प्राप्त करने के मूल प्रमाण पत्र संलग्न कर रहा हूँ, जिनके आधार पर आप मुझें इस वर्ष भी छात्रवृत्ति देने का प्रदान करने की कृपा करें।

मुझे विश्वास है कि मेरी प्रार्थना अवश्य स्वीकृत होगी। मैं आपका आभारी रहूँगा 1

संलग्न : दो प्रमाण पत्र

आपका आज्ञाकारी शिष्य

बसन्त कुमार

दिनांक : 12 जुलाई, 2013

प्रार्थना पत्र

किसी अधिकारी को प्रार्थना करने हेतु लिखा गया पत्र प्रार्थना पत्र कहलाता है।

प्रार्थना पत्र का नमूना:

(1) सेवा में,

श्रीमान प्रधानाचार्य

राजकीय महाराणा प्रताप विद्यालय,

चित्तोड़गढ़

(3) विषय: छात्रवृत्ति प्राप्त करने हेतु।

(4) महोदय,

(5) नम्र निवेदन है कि.....

....

....

(6) दिनांक 13.05.2014

(7) आपका आज्ञाकारी शिष्य

मोहनलाल

कक्षा - सीनियर –सैकण्डरी

'अ' वर्ग

मोहल्ले की सफाई के लिए स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र

सेवा में,

श्रीमान् स्वास्थ्य अधिकारी जी,

अशोक विहार, फैज नं-- 1 ,
दिल्ली नगर निगम, दिल्ली
मान्यवर,

निवेदन है कि प्राय: तीन सप्ताहों से हमारे मोहल्ले में गंदगी का ढेर लगा हुआ है, जिसे हटाने के लिए इस मोहल्ले के प्रतिनिधि आपकी सेवा में तीन बार अपने प्रार्थना पत्र प्रेषित कर चुके हैं, किन्तु आज तक उन पर कोई कार्रवाही नहीं की गई।

गंदगी के कारण सारे मोहल्ले में मच्छरों का प्रकोप बढ़ गया है, जिससे घर - घर में मलेरिया बुखार फैल रहा है। इसकी रोकथाम तथा उपचार के लिए चिकित्सा विभाग से कोई कदम नहीं उठाया जा रहा है, जो अत्यंत खेद और लज्जा की बात है।

कृपया शीघ्र ही गंदगी हटवाने तथा मोहल्ले को समुचित सफाई कराने की व्यवस्था करें, अन्यथा विवश होकर हमें मंत्री महोदय के द्वार खटखटाने पड़ेगे, जिसका सम्पूर्ण दायित्व आपका होगा 1

हम है आपके विश्वासपात्र
प्रतिनिधि

अ,ब,स,द तक नाम
पत्ते

दिनांक 12 जनवरी 2014

परीक्षा में प्रथम स्थान पाने पर अपने मित्र को बधाई पत्र

प्रिय मित्र मनोज,
जय हिन्द 1

आज, प्रात: कल 'नवभारत टाइम्स ' दिनांक 27.5-2013 में प्रकाशित केन्दीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली का परीक्षा फल पढा 1

प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण अभ्यार्थियों की सूची में तुम्हारा अनुक्रमांक और नाम देखकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई है

तुम्हारी इस प्रशंसनीय सफलता पर मैं अपनी तथा अपनी मित्रमण्डत्ती की ओंर से तुम्हें हार्दिक बधाई देता है।

तुम अपने शैक्षणिक जीवन में उत्तरोत्तर उन्नति करते रहो -यही हमारी मंगलकामना- है।

छुट्टियों में यदि दिल्ली आयो तो कुछ दिन तक मेरे साथ रहने का कार्यक्रम अवश्य बनाना।

तुम्हारा अभिन्न मित्र
सुरेश

पुस्तकें माँगने के लिए पुस्तक विक्रेता को पत्र

गायत्री भवन
बडे डाकखाने के पास,
पाली (राजस्थान)

दिनांक 12.12.2013

सेवामें,

मान व्यवस्थापक जी
पत्रिका प्रकाशन
409, लक्ष्मी कॉम्पलेक्स,एम.आई. रोड, जयपुर

महोदय,
आपके द्वारा प्रकाशित निम्नलिखित पुस्तकों क्री दस - दस प्रतियाँ बी.पी.पी. द्वारा मेरे उपर्युक्त पते मर शीघ्र भेजते की कृपा करें। आपके नियमानुसार मैंने बीस रुपये आज की धनादेश द्वारा आपके पते पर भेज दिये है जिन्हें पुस्तकों के कुल मूल्य से घटाकर उचित कमीशन देते हुए पुस्तकों का पार्सल भेजें

पुस्तकों के नाम और लेखक
1 लिखावट और आपका व्यक्तिव

2 सफलता के सार्थक सूत्र
3 वैदिक कथाऐं

11.6 सारांश

पत्र लेखन अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। यह एक रोचक कला है जिसमें प्रेषक और पाठक दोनों समीपता और आत्मीयता का अनुभव करते है। लिखित भाषा का उद्देश्य सबसे अधिक पत्र लेखन द्वारा ही प्राप्त होता है। भारतीय डाक व्यवस्था द्वारा भी इसमें दूर स्थित लोगों तक अपनी बात अत्यन्त सरल एवं रोचक ढंग से पहुँचाई जाती है। पत्र लेखन द्वारा व्यक्तित्व का प्रभाव भी पड़ता है। प्रार्थनापत्र, विभिन्न विभागों के नाम पत्र, व्यावसायिक पत्र, सरकारी पत्र, बधाई पत्र, कार्यालयी पत्र आदि अनेक प्रकार के पत्र होते है। पत्र लेखन में सरलता, संक्षिप्तता, प्रभावोत्पादकता, शिष्टता और उद्देश्यपूर्णता होनी चाहिए।

11.7 अभ्यासार्थ प्रश्न

1 अपनी गली/मुहल्ले की समुचित सफाई के लिए नगर निगम के स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखिए।

2 मान लिजिए आपका नाम मुकेश है और आप कक्षा 10वीं के विद्यार्थी है। अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को दो दिन का अवकाश प्रदान करने के लिए पत्र लिखिए।

3 नगरों में कल करखाने से हो रहे प्रदूषण को रोकने हेतु प्रयास करने के लिए किसी समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

4 पिताजी को पत्र लिखिए जिसमें बाहरवीं के बाद आपकी भावी योजनाओं का उल्लेख हो।

5 आपके मित्र को परीक्षा में पास होने के लिए बधाई पत्र लिखिए।

11.8 संदर्भ ग्रंथ

1 डॉ. धीरेन्द्र वर्मा: नवीन हिन्दी व्याकरण, हिन्दी मंदिर, इलाहाबाद

2 कामता प्रसाद गुरू: हिन्दी व्याकरण, काशी नागरी प्रचारिणी वाराणसी

3 पण्डित श्रीलाल, भाषा चन्द्रोदय (भारतवर्षीय हिन्दी भाषा का व्याकरण)

4 धीरेन्द्र वर्मा: हिन्दी भाषा का इतिहास, हिन्दुस्तान अकादमी इलाहाबाद।

5. किशोरीदास वाजपेयी: हिन्दी शब्दानुशासन, नागरी प्रचारिणी सभा. वाराणसी 1958

6. किशोरीदास वाजपेयी: भारतीय भाषा विज्ञान, चौखम्भा विद्या भवन वाराणसी 1959

7. किशोरीदास वाजपेयी: हिन्दी की वर्तनी एवं शब्द विश्लेषण, नागरी प्रचारिणी सभा. वाराणसी 1968

8. डॉ. राघव प्रकाश : व्यावहारिक सामान्य हिन्दी, पिंक सिटी पब्लिशर्स, जयपुर

9. डॉ. वेकट शर्मा : व्यावहारिक हिन्दी व्याकरण, सूर्यनगरी प्रकाशन, जोधपुर

इकाई – 12

अनुच्छेद लेखन

इकाई की रूपरेखा

12.0 उद्देश्य

12.1 प्रस्तावना

12.2 अनुच्छेद लेखन

12.3 अनुच्छेद लेखन हेतु आवश्यक बिन्दु

12.4 कृतिपय अनुच्छेद (शीर्षक आधारित)

12.5 सारांश

12.6 अभ्यासार्थ प्रश्न

12.7 संदर्भ ग्रंथ

12.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद

- विद्यार्थी अनुच्छेद लेखन की जानकारी कर सकेगें
- अनुच्छेद लेखन की शैली का विकास कर सकेगें
- अनुच्छेद लिखने की सृजनात्मक दक्षता प्राप्त कर सकेगें।
- ईकाई में दिए गए अनुच्छेद को पढ़कर स्वयं भी अभ्यास करेंगे और अपनी दक्षता बढ़ाऐगे।

12.1 प्रस्तावना

बी.ए.पी. के इस पाठ्यक्रम का प्रयोजन आपको हिन्दी भाषा में सृजनात्मक दक्षता प्रदान करना है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए अनुच्छेद लेखन का पाठ्यक्रम में निर्धारित किया गया ै। अब तक आप हिन्दी की वर्तमान स्थिति तथा उसके व्यावहारिक व्याकरण को पढ़ चुके है। आप पत्र लेखन कला से भी भली भांति परिचित हो चके है। इसी क्रम में इस इकाई में आपको अनुच्छेद लेखन के बारे में बतलाया जा रहा है। इसे पढ़कर आप अनुच्छेद लेखन के विषय में आवश्यक जानकारी प्राप्त करेगें तथा हिन्दी में एक अच्छा अनुच्छेद लिखना सीख सकेंगें।

12-2 अनुच्छेदन लेखन

किसी भी विषय से सम्बन्धित अपने विचारों को लगभग 80-100 शब्दों में व्यक्त करना अनुच्छेदन की श्रेणी में आता है। किसी एक विचार] भाव] सूक्ति अथवा विषय पर लिखे गए वाक्यों के समूह को अनुच्छेन कहते है। प्रायः एक अनुच्छेन में लगभग 10-15 वाक्य होते है। अनुच्छेदन का विषय कोई भी हो सकता है। रोचक भाषा द्वारा प्रभावशाली अनुच्छेन लिखा जा सकता है।

12.3 अनुच्छेद लेखन हेतु आवश्यक बिन्दु

भाव पल्लवन या अनुच्छेद लेखन एक कला है। किसी विषय से संबंधित सभी महत्वपूर्ण बातों को कम शब्दों में लिखने के लिए बुद्धि कौशल की आवश्यकता है, जो निम्न है:-

1. अनुच्छेद लेखन एक प्रकार की संक्षिप्त लेखन शैली है अतः इसमें मुख्य विषय पर ही केंन्द्रित रहना चाहिए।
2. अनुच्छेद लेखन में उदाहरण अथवा दृष्टान्त के लिए कोई स्थान नहीं है। आवश्यकता होने पर उसकी और संकेत कर देना ही पर्याप्त है।
3. अनुच्छेद में व्यर्थ की बातें उसके प्रभाव को शिथिल बनाती हैं।
4. अनुच्छेद के सभी वाक्यों का परस्पर घनिष्ठ संबंध होना चाहिए।
5. अनुच्छेद में इस बात की और विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है कि उसका प्रथम और अंतिम वाक्य अर्थगर्भित तथा प्रभावोत्पादक होना चाहिए।
6. प्रथम वाक्य की विशिष्टता इसमं है कि वह अनुच्छेद के संबंध में पाठक का कौतूहल जाग्रत करने में किस सीमा तक समर्थ हे। अंतिम वाक्य की विशिष्ठता इस तथ्य पर निर्भर करती है कि पाठक की जिज्ञासा किस सीमा तक शांत हुई है।
7. अनुच्छेद में भाषा के शुद्धता तथा शब्दों के चयन पर विशेष रूप में ध्यान देना अपेक्षित हैं मुहावरों तथा लोकोक्तियों का प्रयोग अनुच्छेद को शक्ति प्रदान करता है तथा भावाभिव्यक्ति को प्रभावशाली बना देता है।
8. अनुच्छेद- लेखन में अनुभूति पक्ष की प्रधानता होती है।
9. अनुच्छेद लेखन में परीक्षार्थी को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह अपनी बात को उतने ही शब्दों में बांधने का प्रयत्न करे जितने शब्द पत्र में कहे गये है।
10. सामान्यत: 80-100 शब्दों में अनुच्छेद लिखा जाता है।

12.4 कृतिपय अनुच्छेद (शीर्षक आधारित)

अनुच्छेद लेखन

1 विद्यार्थी

(विचार बिन्दु - सुरक्षित राष्ट्र की कामना, विद्यार्थी का कर्त्तव्य, कर्त्तव्यनिष्ठा, संकटों में सहायक राष्ट्रप्रेमी)

राष्ट्र सभी राष्ट्रवासियों को जन्म, अन्न, धन-धान्य, आवास तथा सुरक्षा प्रदान करता है। इसलिए प्रत्येक राष्ट्रवासी का कर्त्तव्य बनता है कि वह राष्ट्रहित का ध्यान रखे। राष्ट्र सुरक्षित होगा तो उसके निवासी भी सुरक्षित होंगे। 'विद्यार्थी' का कार्य 'विद्या अध्ययन' करना है। उसे शिक्षा के साथ-साथ ऐसी विद्या भी ग्रहण करनी चाहिए। जिससे राष्ट्रीय भावनाओं का विकास हो। विद्यालयों में एन.एस.ए., एन.सी.सी. स्काउट्स आदि। संस्थाएँ इन भावनाओं में योगदान देने के लिए बनी हैं। छात्रों को इनमें बढ़ चढ़कर भाग लेना चाहिए। विद्यार्थी को एक कर्तव्यनिष्ठ नागरिक की भाँति व्यवहार करना चाहिए। जब देश पर किसी प्रकार का संकट हो, तो उसे राष्ट्रवाणी से अपनी वाणी मिला देनी चाहिए। राष्ट्र के सामने अनेक प्रकार के संकट आते है - कभी बाढ़, कभी सूखा, कभी युद्ध, कभी महामारी तो कभी दुर्घटनाएं। विद्यार्थियों को प्रत्येक संकट में कमर कसे तैयार रहना चाहिए। किसी भी देश की क्रांति में नवयुवकों को का महत्वपूर्ण योगदान होता है। जो छात्र पढ़ते समय राष्ट्र-विकास का स्वप्न अपनी आँखों में भर लेगा, वह जिस भी क्षेत्र में जाएगा, वहीं राष्ट्रहित का कार्य करेगा।

2. देशप्रेम विचारबिन्दु -

देश स्वाभाविक लगाव, मातृभूमि 'माँ' के समान बलिदान की उच्च भावना, राष्ट्रीय एकता के लिए आवश्यक देश प्रेम का अर्थ - देश के कण-कण से प्रेम होना, उसके पेड़-पौधे पत्थर, जीव-जन्तु, और सभी मानवों से प्रेम होना। सच्च देश-प्रेमी वहीं है जो स्वदेश हित के लिए जीता है और आवश्यकता पड़ने पर जान भी दे देता है। जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान हैं। बिना स्वदेश के जीवन धारण करना ही कठिन है। इसीलिए देश को मॉ की संज्ञा दी जाती है। जिस प्रकार हमारे अपनी माँ के प्रति कुछ कर्तव्य होते है, वैसे ही अपने देश के प्रति भी कुछ दायित्व होते है। देशप्रेम की भावना बड़ी उच्च भावना हैं उसी भावना से प्रेरित होकर देशभक्त देश के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर देते है। स्वतंत्रता - संग्राम के समय कितने ही देश-भक्तो को जेल की यातनाएं भोगी, हंसते-हंसते लाठियां खाई, दिन का चैन और रात की नींद गंवाई और सहर्ष फांसी के तख्तों को चूम लिया। संसार के अन्य देशों के इतिहास भी देशप्रेम की गाथाओं से रंगे पड़े है। देश प्रेम की भावना समय में देशभक्ति की भावना इस सारे देश को एकजुट करती है।

3.'राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता'

एकता में कई खूबियां है। एकता से सारी शक्तियां केन्द्रित होती है और एक शक्ति -स्त्रोत का जन्म होता है। जिस भी क्षेत्र में एकता होती है वह क्षेत्र तीव्र गति से लक्ष्य प्राप्त करता है। अतः राष्ट्रीय एकता किसी भी राष्ट्र की उन्नति और सुरक्षा के लिए अनिवार्य है। भारत में अनेक विभिन्नताएं है। वे विभिन्नताएं इनती प्रखर हो गई है कि एकता समाप्त हो गई है। कहीं उतर-दक्षिण का भेद है, कहीं ग्रामीण शहरी का, कहीं अमीर-गरीब की खाई हे तो कहीं ब्राह्मण -अब्राह्मण की, इन्हीं से देश में अस्थिरत आती है और राष्ट्र कमजोर होता है। भारत की संस्कृति एक है। इसके महापुरूष एक है। उत्तर-दक्षिण पूर्व-पश्चिम कहीं भी

चले जाएं-एक ही प्रकार के धार्मिक स्थान एक ही प्रकार के लोग, एक से लोग मिलेंगे। सभी की भारत में आस्था है। हिन्दुस्थान के सभी तीर्थ सारे हिन्दुस्थान में फैले हुए है। ये हमारी राष्ट्रीय एकता के प्रमाण हैं। देश की किसी भी भाषा या क्षेत्र का साहित्यकार हो, वह सारे भारत की वदंना करता है। आज भारत की पहली आवश्यकता है - अपनी इस एकता को बनाए रखने की। एकता से ही देश की उन्नति और शांति बनी रह सकती है।

4. हमारे त्यौहार और उनका महत्व

(विचारबिन्दु - भारत उत्सवों का देश, दशहरा, दीपावली, होली, राष्ट्रीय उत्सव, ईद-क्रिसमस, अन्य उत्सव)

भारत उत्सवों का देश है। यहॉ ऐतिहासिक, सामाजिक पौराणिक, धार्मिक, राजनीतिक उत्सव बड़ें धूमधाम से मनाए जाते है। भारत के सबसे प्रसिद्ध और लोकप्रिय त्यौहार-दशहरा, दीपावली, होली, स्वतंत्रता दिवस, और गणतंत्र दिवस है। दशहरा रावण पर राम की विजय के आनंद में मनाया जाता है। इस दिन राम ने रावण का संहार किया था। अतः इस दिन हिन्दुओं में रावण का पुतला बनाकर जलाया जाता है। दशहरे के ठीक बीस दिन बाद दीपावली आती है। इस रात लोग अपने-अपने घरों- दुकानों-बाजारों को रोशनी से जगमगाते है। बच्चें आतिशबाजी का खेल करते हैं। इस अवसर पर लोग अपने घरों को साफ-स्वच्छ करते हैं। होली हिन्दुओं का अति मस्त उत्सव है इस दिन रंगो की वर्षा करके आनंद मनाया जाता है। स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस हमारे देश की मुक्ति के उत्सव हैं। इन अवसरों पर सरकारी कार्यालयों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराए जाते है। विभिन्न सांस्कृतिक, कार्यक्रम आयोजित किए जाते है। ईद और मुहर्रम मुसलमानों के धार्मिक त्यौहार हैं। ईद आत्मबुद्धि और बलिदान भावना की प्रतीक है। ईसाई लोग ईसा-मसीह के बलिदान उत्सव को बड़े धूमधाम से मनाते है। इसके अतिरिक्त भी भारत में अनेक त्यौहार मनाए जाते है।

5.गणतंत्र दिवस 26 जनवरी

(विचारबिन्दु - गणतंत्र दिवस का महत्व, सरकार कार्यक्रम, राजधानी में कार्यक्रम, परेड का भव्य दृश्य, राष्ट्रीय भावना का संचार।)

गणतंत्र-दिवस भारत का सर्वाधिक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय पर्व है। इस दिन भारत का संविधान लागू हुआ था। 26 जनवरी का दिन समूचे भारतवर्ष में बड़े उत्साह तथा हर्षोल्लास से मनाया जाता है। समूचे देश में अनेकानेक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। प्रदेशों की सरकारें सरकारी स्तर पर अपनी-अपनी राजधानियों में तथा जिला स्तर पर राष्ट्रीय ध्वज फहराने तथा अन्य अनेक कार्यक्रमों का आयोजन करती है। राजधानी दिल्ली में इस राष्ट्रीय पर्व के लिए विशेष समारोह आयोजित किया जाता है। नई दिल्ली के विजयचौक से प्रातः परेड का प्रारंभ होता है। इंडिया गेट के निकट राष्ट्रपति राष्ट्रीय धुन के साथ ध्वजारोहण करते हैं। उन्हे तोपों की सलामी दी जाती है। हवाई जहाजों द्वारा पुष्पवर्षा की जाती है।

सैनिकों का सीना तान कर अपनी साफ-सुथरी वेशभूषा में कदम से कदम मिलाकर चलने का दृश्य बड़ा मनोहारी होता है। इस भव्य दृश्य को देखकर मन में राष्ट्र भक्ति तथा उत्साह का संचार होने लगता है। मिलिट्री तथा स्कूलों के अनेक बैंड सारे वातावरण को देश भक्ति तथा राष्ट्र प्रेम की भावना से गुंजायमान कर देते है। विभिन्न झांकियों की कला तथा शोभा को देखकर दर्शक मंत्रमुग्ध हो जाते है। यह पर्व अत्यन्त प्रेरणादायी है।

6.भारतीय समाज में नारी का स्थान

(विचारबिन्दु - श्रद्वामयी नारी, पुरूष की सहयोगिनी, मध्यकाल की नारी, वर्तमान नारी।)

भारत की नारी दया, ममता, मधुरता और गहरे विश्वास से युक्त है। उसका हृदय सुंदर गुणों का खजाना है। वह स्वभाव से ही देती है। किसी ने कहा है - 'जिस देश में नारी की पूजा होती है, वहॉ देवता निवास करते हैं।' आज भारत की नारी प्रगति की दौड़ में पुरूष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर गति कर रही है। वह पुरानी नारी के समान 'लाज की गुड़िया' नहीं बल्कि पुरूष की सहयोगिनी, जीव संगिनी और सहधर्मिणी है। वह घर और समाज के लिए समर्पण करने को तैयार रहती हैं दुर्भाग्य से मध्यकाल मे नारी का रूप विकृत हो गया। उसे भोग्या के रूप में देखा गया था। पुरूष के पाप के कारण उसे पर्दे में छिपना पड़ा, घर की चारदीवारी में बंद होना पड़ा। पुरूष के मनमाने अत्याचारों के कारण उसे शिक्षा से वंचित होना पड़ा। इसलिए वह जीवन की दौड़ में पिछड़ गई। वर्तमान काल में भारतीय नारी सभी क्षेत्रों में पुरूष को चुनौती दे रही है। चिकित्सा शिक्षा और सेवा में इनका कोई सानी नहीं है। प्रशासन और पुलिस जैसे कठोर कर्मो में भी उसने अपनी श्रेष्ठता सिद्ध कर दी है। वह कुशल वायुयान, चालिका, सैनिक, वक्ता, प्रवक्ता और व्यावसायिका भी सिद्ध हो चुकी है। उसने स्वयं कर्म कुशलता से अपने लिए सम्मान अर्जित कर लिया है।

7. दीपावली का पर्व

(विचारबिन्दु - भूमिका, दीपाली मनाने का समय, मनाने का कारण, व्यापार में वृद्धि।)

दीपावली हिन्दुओं का महत्वपूर्ण उत्सव है। यह कार्तिक मास की अमावस्या की रात्रि में मनाया जाता है। इस रात को घर-घर में दीपक जलाए जाते है। इसलिए इसे 'दीपावली' कहा गया। इस दिन श्री रामचन्द्र जी रावण का संहार करने के पश्चात् वापस अयोध्या लौटे थे। उनकी खुशी में लोगों ने घी के दीपक जलाए थे। भगवान महावीर ने तथा स्वामी दयानंद ने इसी तिथि को निर्वाण प्राप्त किया था। इसलिए जैन सम्प्रदाय तथा आर्य समाज में भी इस दिन का विशेष महत्व है। सिक्खों के छठे गुरू हरगोविन्द जी भी इसी दिन कारावास से मुक्त हुए थे। इसलिए गुरूद्वारों की शोभा इस दिन दर्शनीय होती है। व्यापारी वर्ग विशेष उत्साह से इस उत्सव को मानता है। इस दिन व्यापारी वर्ग अपनी-अपनी दुकानों का कायाकल्प तो करते ही है। प्रसन्नता से अपने प्रियजनों में मिठाई आदि का वितरण करते है। घर-घर में लक्ष्मी का पूजन होता है। ऐसी मान्यता है कि उस रात लक्ष्मी घर में प्रवेश करती है। बाजार मिठाई से लद जाते है। लोग आतिशबाजी चलाकर भी अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते है। गृहिणयां इस दिन कोई-कोई बर्तन खरीदना शकुन समझती है।

8.कम्प्यूटर: आज की जरूरत

(विचारबिन्दु - कम्प्यूटर क्या है, भारत में कम्प्यूटर- इसका उपयोग तथा इसके लाभ, दैनिक जीवन में कम्प्यूटर।)

वर्तमान युग कम्प्यूटर-युग है। कम्प्यूटर एक ऐसी स्वचालित प्रणाली है जो कैसी भी अव्यवस्था को व्यवस्था में बदल सकती है। क्रिकेट के मैदान में अंपायर की निर्णायक भूमिका हो, या लाखो-करोड़ों अरबों की लंबी-लंगी गणनाएं, कम्प्यूटर पलक झपकते ही आपकी समस्या हल कर सकता है। आज जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों में कम्प्यूटर का प्रवेश हो गया। बैक, रेल्वे-स्टेशन, हवाई-अड्डे, डाकखाने, बड़े-बड़े उद्योग, कारखाने, व्यवसाय हिसाब-किताब, रूपये गिनने की मशीने तक कम्प्यूटरीकरण हो गई हैं आज मनुष्य जीवन जटिल हो गया है। परिणामस्वरूप सब जगह आपाधापी चल रही है। इस पागल गति को सुव्यवस्था देने की समस्या आज की प्रमुख समस्या है। कम्प्यूटर ने फाइलों की आवश्यकता कम कर दी है। विश्व के किसी कोने में छपी पुस्तक, फिल्म, घटना की जानकारी इंटरनेट पर ही उपलब्ध हो जाती है। एक समय था, जब कहते थे कि विज्ञान ने संसार को कुटुंब बना दिया है। कम्प्यूटर ने तो मानों उस कुटुंब को आपके कमरे में उपलब्ध करा दिया है। इस प्रकार कम्प्यूटर ने मानव-जीवन को सुविधा, सरलता, सुव्यवस्था और सटीकता प्रदान की है।

9 अनुशासन

अनुशासन किसी वर्ग या आयु विशेष के लोगों के लिए ही नहीं अपितु सभी के लिए ही परमावश्यक होता है। जिस जाति, देष और राष्ट्र में अनुशासन का अभाव होता है वह अधिक समय तक अपना अस्तित्व बना नहीं रख सकता है। जो विद्यार्थी अपनी दिनचर्या निश्चित व्यवस्था में नही ढाल पाता है, वह निरर्थक है क्योंकि विद्या ग्रहण करने में व्यवस्था ही सर्वोपरि है। अनुशासन का पालन करते हुए जो विद्यार्थी योगी की तरह विद्या अध्ययन में जुट जाता है वहीं सफलता पाता है। अनुशासन के अभाव में विद्यार्थी का जीवन शून्य बन जाता है। कुछ व्यवधानों के कारण विद्यार्थी अनुशासित नहीं रह पाता और अपना जीवन नष्ट कर लेता है। सर्वप्रथम बाधा है- उसके मन की चंचलता। उसे अनुभव नहीं होता है इसलिए गुरूजनों की आज्ञाएँ तथा विद्यालयों के नियम, अभिभावकों की सलाह उसे कारागार के समान प्रतीत होते है। वह उनसे मुक्ति का मार्ग तलाशता है रहता है। कर्तव्यों को तिलांजलि देकर केवल अधिकारों की मांग करता है। हर प्रकार से केवल अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए संघर्ष पर उतारू हो जाता है और यहीं से उच्छृंखलता और अनुशासनहीनता का जन्म होता है।

10. ग्लोबल वार्मिंग के खतरे

(विचारबिन्दु - ग्लोबल वार्मिंग का अर्थ, ग्लोबल वार्मिंग के खतरे, उनके प्रभाव बचाव हेतु उपाय।)

ग्लोबल वार्मिंग इक्कीसवीं शताब्दी का सबसे बड़ा खतरा है। इसका अर्थ है -पृथ्वी तप रही है। धरती पर गर्मी खतरनाक गति से बढ़ रही है। इसके कारण शताब्दियों से जमें हिमखंड पिघल रहे है। आकाश की

छाती में छेद होने जा रहे है। इसके कारण सूर्य की जहरीली किरणे ओजोन गैस की परत को भेद कर धरती पर आएंगी। जो भी मनुष्य, पशु या वनस्पति उसके संपर्क में आएगी वह स्वाहा हो जाएगी। धरती पर रोग बढ़ेगें। मौत असमय ही वस्तक देने लगेगी। ग्लोबल वार्मिंग का मुख्य कारण है - मनुष्य द्वारा ऊर्जा का असीमित उपयोग। परमाणु भट्टियां औद्योगिक ऊर्जा, फ्रिज, ए.सी. का खुला उपयोग आदि ऐसे बड़े कारण है। जिनसे वातावरण में उष्मा बढ़ रही है। निरंतर कटते पेड़ और वन, पेट्रोल की अत्यधिक खपत भी इस गर्मी को बढ़ा रहे है। ये सब मानवीय कार्य है जो प्रकृति के चक्र में खलल डाल रहे है। इन्हें रोकने का उपाय भी मनुष्य के हाथों में है। उत्पादन के लिए मानवीय श्रम का अधिक उपयोग किया जाए। मशीनों पर निर्भरता घटाई जाए। पेड़ों और वनों को संरक्षित किया जाए। लकड़ी और आवास के लिए नए विकल्प खोजे जाएं तो यह खतरा कुछ सीमा तक कम हो सकता है। परमाणु ऊर्जा से होने वाले खतरों को देखते हुए इस पर प्रतिबंध लगाना चाहिए।

12.5 सारांश

इस इकाई में अनुच्छेद लेखन के माध्यम से आप में ज्ञानात्मक तथा सर्जनात्मक परिवर्तन अवश्य आयेगा। अनुच्छेद में किसी एक विषय पर हमें अपने पूर्ण विचार व्यक्त करने होते है। अनुच्छेद में विचारों की एक संक्षिप्त श्रृंखला होती है। जिसमें विषय में पक्ष और विपक्ष सभी को सन्तुलित ढंग से प्रकट किया जाता हे। प्रारम्भ में विद्यार्थियों को चाहिए कि संकेत बिन्दुओं के भाव को समझे। भावों में सम्बन्ध बनाते हुए मन ही मन क्रम बनाकर उपर्युक्त बातों का ध्यान रखकर अनुच्छेद लेखन करें।

प्रस्तुत इकाई में आपने अनुच्छेद लिखने की कला सीखी है। वस्तुतः इसके बार बार अभ्यास से ही इस कला को निखारा जा सकता है। अनुच्छेद लेखन से आपको मौलिक कल्पना की जानकारी परीक्षक को प्राप्त होती है। मौलिक शैली में लिखा गया संक्षिप्त और उद्देश्यपरक अनुच्छेद विद्यार्थियों की विचार अभिव्यक्ति को और अधिक प्रभावी बना देता है।

12.6 अभ्यासार्थ प्रश्न

1) निम्नलिखित अनुच्छेदों को अपनी भाषा में प्रभावशाली ढंग से 80-100 शब्दों में लिखिए -

   1. एकता में बल है।
   2. होली
   3. मेरा देश महान
   4. भ्रष्टाचार: एक समस्या
   5. इंटरनेट: एक संचार क्रांति
   6. शिक्षक दिवस

7. मेला मनपंसद रियल्टी शो
8. जीवन में व्यायाम का महत्व
9. मन के हारे हार है, मन के जीते जीत
10. मधुरवाणी

12.7 संदर्भ ग्रंथ

1 डॉ. धीरेन्द्र वर्मा: नवीन हिन्दी व्याकरण, हिन्दी मंदिर, इलाहाबाद

2 कामता प्रसाद गुरू: हिन्दी व्याकरण, काशी नागरी प्रचारिणी वाराणसी

3 पण्डित श्रीलाल, भाषा चन्द्रोदय (भारतवर्षीय हिन्दी भाषा का व्याकरण)

4 धीरेन्द्र वर्मा: हिन्दी भाषा का इतिहास, हिन्दुस्तान अकादमी इलाहाबाद।

5. किशोरीदास वाजपेयी: हिन्दी शब्दानुशासन, नागरी प्रचारिणी सभा. वाराणसी 1958

6. किशोरीदास वाजपेयी: भारतीय भाषा विज्ञान, चौखम्भा विद्या भवन वाराणसी 1959

7. किशोरीदास वाजपेयी: हिन्दी की वर्तनी एवं शब्द विश्लेषण, नागरी प्रचारिणी सभा. वाराणसी 1968

8. डॉ. राघव प्रकाश : व्यावहारिक सामान्य हिन्दी, पिंक सिटी पब्लिशर्स, जयपुर

9. डॉ. वेकट शर्मा : व्यावहारिक हिन्दी व्याकरण, सूर्यनगरी प्रकाशन, जोधपुर

इकाई – 13

कहानी : बूढ़ी काकी (प्रेमचन्द)

इकाई की रूपेरखा

13.0 उद्देश्य

13.1 प्रस्तावना

13.2 प्रेमचन्द - परिचय

13.3 कहानी - वाचन

13.4 शब्दार्थ

13.5 कहानी का अर्थ ग्रहण

13.6 सारांश

13.7 अभ्यास प्रश्न

13.8 संदर्भग्रंथ

13.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप -

- 'बूढ़ी काकी' कहानी के रचनाकार प्रेमचन्द का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- कहानी का वाचन कर कठिन शब्दों का अर्थ ग्रहण कर सकेंगे।
- कहानी की कथावस्तु,चरित्र चित्रण,वातावरण एवं प्रतिपाद्य का जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

13.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में आप ऐसे कहानीकार और उनकी रचना से परिचित होने जा रहे हैं जिनके बारे में कहा जाता है कि उन्होंने वही लिखा है जो स्वयं उन्होंने अपनी आंखो से देखा है और अनुभव किया। प्रस्तुत कहानी बूढ़ी काकी में इन्होंने सामाजिक और पारिवारिक विसंगतियों पर प्रकाश डाला है।

13.2 प्रेमचन्द - परिचय

मुंशी प्रेमचन्द का नाम हिन्दी के सफल कहानीकारों की गणना में सर्वप्रथम आता है। इनका वास्तविक नाम धनपतराय था। इनका जन्म सन् 1880 ई. में उत्तर प्रदेश के वाराणसी जिले में हुआ था और

प्रारम्भिक शिक्षा भी वाराणसी में ही हुई। पिता की मृत्यु के कारण बचपन आर्थिक संकटों में गुजरा। जीवन की सभी चुनौतियों का समाना करते हुए बी.ए. की परीक्षा पास की और शिक्षा विभाग में पदोन्नत होते हुए डिप्टी - इंस्पेक्टर ऑफ स्कूल्स हो गए। महात्मा गांधी के द्वारा चलाए गए असहयोग आन्दोलन में भाग लेने के कारण इन्हें त्यागपत्र भी देना पड़ा। सन् 1936 में महान कथाकार प्रेमचन्द का स्वर्गवास हो गया।

13.3 कहानी - वाचन

बुढापा बहुधा बचपन का पुनरागमन हुआ करता है। बूढी काकी में जीह्वा स्वाद के सिवाय और कोई चेष्टा न थी और न अपने कष्टों की ओर आकर्षित करने का रोना रोने के अतिरिक्त दूसरा सहारा ही। समस्त इन्द्रियां और हाथ पैर जवाब दे चुके थे। पृथ्वी पर पडी रहती और जब घर वाले कोई बात उनकी इच्छा के प्रतिकूल करते या भोजन का समय टल जाता उसका परिणाम पूर्ण ना होता अथवा बाजार से कोई वस्तु आती तो उन्हें ना मिलती तो रोने लगती थी उनका रोना सीसकना साधारण रोना ना था वह गला फांड़फांड़कर रोती थी।

उनके पतिदेव को स्वर्ग सिधारे कालान्तर हो चुका था बैठे तरूण ही होकर चल बसे थे बस एक भतीजे के सिवाय ओर कोई न था। उसी भतीजे का नाम उन्होंने सारी सम्पति लिख दी थी भतीजे ने सम्पति लिखाते समय खूब लम्बे चौडे वादे किये थे किन्तु सब वादे केवल दलालों के दिखाये सब्जबाब के समान थे यद्यपि उस सत्पति की वार्षिक आय डेढ दो सो रूपये से कम न थी तथापि बूढी काकी को पेट भर भोजन भी कठिनाई से मिलता था। इसमें उनके भतीजे पंडित बुद्धिराम का अपराध था अथवा उनकी अर्द्धांगिनी श्रीमती रूपा का इसका निर्णय करना सहज नहीं। बुद्धिराम स्वभाव के सज्जन थे किन्तु उसी समय तक जब तक कि उनके कोष पर कोई आंच ना आये, रूपा स्वभाव से तीव्र थी सही पर ईश्वर से डरती थी अत: 'बूढी काकी' को उसकी तीव्रता उतनी ना खलती थी जितनी बुद्धिराम की भलमन साहत।

बुद्धिराम को कभी कभी अपने अत्याचार पर खेद होता था विचारते थे कि इसी सम्पति के कारण में इस समय भला मानस बना बैठा हूं। यदि मौखिक आश्वासन और सूखी सहानुभूति से स्थिति में सुधार हो सकता तो उन्हें कदाचित कोई आपति ना होती परन्तु विशेष व्यय का भय उनकी सचेष्टाओं को दबाय रखता। यहां तक कि यदि द्वार पर कोई भला आदमी बैठा होता और बूढी काकी उस समय राग अलापने लगती तो वह आग बबूला हो जाते और घर में आकर उन्हें जोर से डाटते । लडकों को बुड्ढ़ों से स्वाभाविक द्वेष होता ही है और फिर माता पिता का यह राग देखते तो बूढी काकी को ओर भी सताया करते कोई चुटकी काटकर भागता कोई उनपर पानी की कुल्ली कर देता। काकी चीख मारकर रोती परन्तु यह बात प्रसिद्ध थी। कि वे केवल खाने के लिए रोती है अतएवं संताप और आर्तनाद पर कोई ध्यान न देता था। काकी कभी क्रोधातुर होकर बच्चों को गालियां देने लगती तो रूपा घटनास्थल पर अवश्य जा पहुंचती इस भय से काकी अपनी जिह्वा रूपी कृपान का कदाचित भी प्रयोग करती थी यद्यपि उपद्रव शांति का यह उपाय रोने से कही अधिक उपयुक्त था ।

सम्पूर्ण परिवार में यदि काकी को किसी से अनुराग था तो वह बुद्धिराम की छोटी बेटी लाडली थी। लाडली अपने दोनो भाईयों की भये से अपने हिस्से की मिठाई चबेना बूढी काकी के पास खाया करती थी। यही उसका रक्षागार था। और यद्यपि काकी की शरण उनकी लोलुपता के कारण बहुत मंहगी पड़ती थी । भाइयों के अन्याय से कहीं सुलभ थी इसी स्वार्थनुकूलता ने उन दोनों में प्रेम और सहानुभूति का आरोपन कर दिया। रात का समय था बुद्धिराम के द्वार पर सहनाई बज रही थी। गांव के बच्चों का झूडं विस्मयपूर्णनेत्रों से गानों का रसास्वादन कर रहा था। चारपाहियों पर मेहमान विश्राम करते हुए नाईयों से मुक्कियां लगवा रहे थे। समीप ही खडा हुआ भाट विरूदावली सुना रहा था और कुछ भावुक महमानों के वाह वाह पर ऐसा खुश हो रहा था। मानो इस वाह वाह का यर्थाथ में वही अधिकारी है। दो एक अंग्रेजी पढे हुए नवयुवक इन व्यवहारों से उदासीन थे। वह इस ग्वार मंडरी में बोलना अथवा सम्मिलित होना अपनी प्रतिष्ठा के प्रतिकूल समझते थे। आज बुद्धिराम के बडे लडके खुशराम का तिलक आया था। यह उसी का उत्सव था। घर के भीतर स्त्रियां गा रही थी और रूपा मेहमानों के लिए भोजन के प्रबंध में व्यस्त थी । भट्टियों पर कडाहे चढे थे 1 एक में पूडियाँ कचौडियाँ निकल रही थीं, घी और मसाले की क्षुधावर्ध सुगंधि चारों ओर फैली हुई थी ।

बूढी काकी अपनी कोठरी में शोकमग्न विचारों में डूबी हुई बैठी थीं । वह स्वाद मिश्रित सुगंधि उन्हें बेचैन कर रही थी । वे मन ही मन विचार कर रही थी सम्भवत: मुझे पूडियाँ न मिलेगी- । इतनी देर हो गई, कोई भोजन लेकर नहीं आया, मालूम होता' है, सब लोग भोजन कर चुके । मेरे लिए कुछ न बचा " यह सोच कर उन्हें रोना आया, परंतु अपशकुन के भय से वह रो न सकीं ।

"अहा । कैसी सुगंधि है । अब मुझे कौन पूछता है? जब रोटियों के ही लाले पडे हैं तब ऐसे भाग्य कहॉ किं भरपेट पूडियाँ मिलें । " यह बिचार कर उन्हें रोना आया, कलेजे में एक हूक-सी उटने लगी । परंतु रूपा के भय से उन्होंने फिर भी मौन धारण कर लिया ।

बूढी काकी देर तक इन्हीं दुखदायक विचारों में डूबी रही । घी और मसालों की सुगंधि रह...रह कर मन को आपे से बाहर किए देती थी । मुँह भर-भर आता था । पूडियाँ का स्वाद स्मरण करके हृदय में गुदगुदी होने लगती थी । किसे पुकारू आज लाडली बेटी भी नहीं आई । दोनों छोकरे सुदा दिक किया करते हैं 1 आज उनका भी कही पता नहीं । कुछ तो मालूम होता कि क्या बन रहा है ?

बूढी काकी की कल्पना में पुडियों की तस्वीर नाचने लगी । खूब लाल लाल फूली फूली नरम नरम होगी

रूपा ने भली-भांति मोयन दिया होगा ।- कचौडियों में अजवायन और इलायची की महक आ रही होगी । एक पूडी मिलती तो हाथ में है लेकर देखती । क्यो न चलकर कड़ाहे के सामने ही बैठु। पूडियाँ छन छन कर तैरती होंगी 1 फूल हम घर में भी सुंघ सकते है परतुं वाटिका में और कुछ बात होती हैं-; । इस प्रकार निर्णय करके बूढी काकी उकडूं बैठकर हाथों के बल सरकती हुई कठिनाई से चौखट के उतरीं और धीरे धीरे रेंगती हुई कड़ाहे के पास जा बैठी । यहाँ आने पर उन्हें उतना धैर्य हुआ जितना भूखें कुत्ते को खाने वाले के सम्मुख बैठने में होता है ।

रूपा उस समय कार्यभार रसे उद्विग्न हो रही थी। कभी इस छत में जाती, कभी उस छत में कभी कडाहे के पास जाती तो कभी भण्डार में जाती। किसी ने बाहर से आकर कहा, ‘’महाराज ठण्डई मांग रहे है" ठंडई देने लगी। इतने में फिर किसी ने आकर कहा. "भाट आया उसे कुछ है दो।" भाट के लिए सीधा निकाल रही थी कि एक तीसरे आदमी ने आकर पूछा, "भोजन तैयार होने में कितना विलंब हैं? ज़रा ढोल, मंजीरा उतार दो 1" बेचारी अकेली स्त्री दौडती दौडती व्याकुल ही रही थी, झुंझलाती थी, कुंढ़ती थी परन्तु, क्रोध प्रकट करने का अवसर न पाती थी। भय होता कहीं पड़ोसी ने यह न कहने लगे कि इतने में ही उबल पडी। प्यास से स्वयं उसका कंठ सूख रहा था। गर्मी के मारे फूँकी जाती थी, परंतु इतना अवकाश भी न था कि जरा जानी- पीले अथवा पंखा हैं जल ले। यह भी खटका था कि ज़रा आंख हटी और चीजो की लूट मची। इस अवस्था में उसने बूढ़ी काकी को कड़ाहे के पास बैठी देखा तो जल गई। क्रोध न रुक सका इतना भी ध्यान न रहा कि पडोसिने बैठी हुई है, मन में क्या कहेंगी? पुरुषों में लोग सुनेंगे तो क्या कहेंगे?

जिस प्रकार मेढक केंचुए पर झपटता है, उसी प्रकार रूपा बूढी काकी पर झपटी और उन्हें दोनों हाथों से झिंझोड़ कर बोली, "ऐसे पेट में आग लगे, पेट है या भाड़? कोठरी में बैठते क्या दम घुटता था? अभी मेहमानों- ने नहीं खाया, भगवान को भोग नहीं लगा। इतना भी धैर्य न हो सका।आकर छाती पर सवार हो गई। जल जाए ऐसी जीभ। दिनभर खाती न होती तो न जाने किसकी हाँडी में मुँह डालती गांव देखेगा तो कहेगा... बुढिया भरपेट खाने नहीं पाती, तभी तो इस तरह मुँह बनाए फिरती है। डाइन न मरें, न पीछा छोडे, नाम बेचने पर लगी है। नाक कटवा कर दम लगीं। इतना ठूंसे है न जाने कहां भस्म हो जाता है? लो ! भला चाहती हो तो कोठरी में जाकर बैठो, जब घर के लोग खाने लगेंगे तब तुम्हें भी मिलेगा। तुम कोई देवी नहीं हो कि चाहे किसी के मुँह में पानी न जाए, परंतु तुम्हारी पूजा पहले हो जाए।

बूढी काकी ने सिर उठाया, न रोई, न बोली। चुपचाप रेंगती हुई अपनी कोठरी में चलीं गई। आघात इतना कठोर था कि हृदय और मस्तिष्क की संपूर्ण शक्तियां, संपूर्ण विचार और संपूर्ण भाव उसी और आकर्षित हो गए थे। नदी जब कगार का कोई वृहत खंड फटकर गिरता है तोआस पास का जलसमूह चारों ओर से उसी स्थान को पूरा करने के लिए दौड़ता हैं।

भोजन तैयार हो गया। आँगन में पत्तल पड़ गए। मेहमान खाने लगे। स्त्रियों ने जेवनार गीत गाना आरंभ कर दिया। मेहमानों के नाई और सेवकगण उसी मंडली के साथ, किंतु कुछ हटकर भोजन करने बैठे थे, परंतु सभ्यता के अनुसार जब तक सब खा न चुके, कोई उठ नहीं सकता था। ' . दो...एक मेहमान जो कुछ पढे-लिखे थे, सेवकों के दीर्घाहार पर झुंझला रहे थे। वे इस बंधन को व्यर्थ और बेसिर-पैर का समझते थे। ,

बूढी काकी अपनी कोठरी में जाकर पश्चाताप कर रही थीं कि में कहां-से-कहां गई? उन्हें रूपा पर क्रोध नहीं था। अपनी जल्दबाजी पर दुख था। "सच ही तो है जब तक मेहमान लोग भोजन न कर चुकेंगे, घरवाले कैसे खाएँगे? मुझेसे इतनी देर भी न रहा गया। सबके सामने पानी उतर गया।

अब जब तक कोई बुलाने न आयेगा न जाउंगी।
मन ही-मन इसी प्रकार विचार कर वह बुलावे की प्रतीक्षा करने लगी। परंतु घी की रुचिकर सुवास पडी ही धैर्यपरीक्षक प्रतीत हो रही थी। उन्हें एक एक पल एक एक युग के समान मालूम होता था। अब पत्तल बिछ गए होंगे। अब मेहमान खा गए होंगे। लोग हाथ पैर धो रहे हैं, नाई पानी दे रहा है।

मालूम होता है, लोग खाने बैठ गए हैं। जेवनार गाया जा रहा है यह विचार कर मन को बहलाने के लिए लेट गई। धीर धीरे एक गीत गुनगुनाते लगी। उन्हें मालूम हुआ कि उन्हें गाते देर हो गई। 'क्या इतनी देर तक लोग भोजन कर रहे होंगे? किसी को आवाज नहीं सुनाई देती थी। अवश्य ही खा- - पीकर चले गए। मुझे कोई बुलाने नहीं आया। रूपा चिढ़ गई है। क्या जाने न बुलाए, सोचती होगी कि आप आएगी, अब कोई मेहमान तो नहीं जो उन्हें बुलाऊँ"। बूढी काकी चलने के लिए तैयार हुई। वह विश्वास कि एक मिनट में पूडियाँ और मसालेदार तरकारियों सामने आएँगी, उनकी स्वादेंद्रियों को को गुदगुदाने लगा। उन्होंने मन में तरह-तरह के मनसूवे बॉधे। पहले तरकारी से पूडियाँ खांउगी, फिर दही और शक्कर से, कचोडियाँ रायते के साथ मजेदार मालूम होंगी। चाहे कोई बुरा माने या भला, में तो मांग मांग करखाऊँगी।'' यहीं न लोग कहेंगे कि इन्हें विचार नहीं? क्या करें, इतने दिनों के बाद इतने दिनों के बाद पूडियाँ मिल रही हैं तो मुँह जूठा करके थोडे ही उठ जाऊँगी।

वह उकडूं बैठकर हाथों के बल खिसकती आंगन में आयी परन्तु हाय दुर्भाग्य अभिलाषा ने अपने पुराने स्वभाग के अनुसार मिथ्या कल्पन की थी। मेहमान मंडली अभी बैठी हुई थी कोई खा कर अंगूलियां चाटता था कोई तिरछे नेत्रों से देखता था कि और लोग अभी खां रहे है या नहीं कोई इस चिन्ता में था पतल पर पूडियां छूटी जाती है। किसी तरह उन्हें भीतर रख लेता कोई दही खाकर जीभ चटखारता था परन्तु दूसरा दोना मांगते संकोच करता था। इतने में बूढी काकी रेंगती हुई उनके बीच जा पहुंची। कई आदमी चौंककर उठ खडे हुए पुकारने लगे अरे यह बुढियां कोन है कहां से आई है देखों किसी को छू ना दे। पंडित बुद्धिराम काकी को देखते ही क्रोध से तिलमिला गये। पुडियों का थाल लिये खडे थे। थाल को जमीन पर पटक दिया जिस प्रकार निर्दयी महाजन अपने किसी बईमान और भगोड आदमी को देखते ही झपटकर उसका टेटुआ पकड़ लेता है, उसी तरह तरह लपककर काकी के दोनों हाथ पकडे और घसीटते हुए लाकर उन्हें अंधेरी कोठरी में धम से पटक दिया। आशारूपी वाटिका लू के एक झौंके से नष्ट विनष्ट हो गई। मेहमानों ने भोजन किया1 घर वालों ने भोजन किया। बाजेवाले, धोबी, चमार भी भोजन कर चुके,
परन्तु बूढी काकी को किसी ने न पूछा। बुद्धिराम और रूपा दोनों ही बूढी को उसकी निर्लज्जता के लिए दंड देने का निश्चय कर चुके है। उनके बुढापे पर दीनता पर, हतज्ञान पर किसी को - करुणा न आती थी। अकेली लाडली उनके लिए कुढ़ रही थी। लाडली को काकी से अत्यंत प्रेम था। बेचारी भोली लड़की थी। बाल-विनोद और चंचलता की। उसमें गंध तक न थी। दोनों बार जब उसके माता-पिता ने काकी को निर्दयता से घसीटा तो लाडली का हदय ऐंठकर रह गया। वह झुंझला रही थी कि ये लोग काकी को क्यों बहुत-सी पूडियाँ नहीं देते? क्या मेहमान सबकी सब खा जाएँगे? और यदि काकी ने मेहमानों के पहले खा लिया तो क्या' बिगड़ जाएगा? वह काकी के पास

जाकर उन्हें धैर्य देना चाहती थी. परंतु माता के भय से न जाती थी 1 उसने अपने हिस्से की पूडियाँ बिलकुल न खाई थीं 1 अपनी गुडियां की पिटारी में बंद कर रखी थी। वह उन पूडियो को न काकी के पास ले जाना चाहती थी 1उसका हदय अधीर हो रहा था। . बूढी काकी मेरी बात सुनते ही उठ बैठेगी। पूडियाँ देखकर कैसी प्रसन्न होंगी। मुझे खूब प्यार करेंगी रात के ग्यारह बज गए। रूपा आँगन में पडी सो रही थी 1 लाडली की आंखों में नहीं नींद ना आती थी।

काकी को पूडिया खिलाने की खुशी उसे सोने ना देती थी। उसने गुडियां की पिटारी सामने ही रखी थी। जब विश्वास हो गया कि अम्मा सो रही है तों वह चुपके से उठी और विचारने लगी कि कैसे चलू चारों और अंधेरा था केवल चूल्हें में आग चमक रही थी और चूल्हें के पास एक कुत्ता लेटा हुआ था। लाडली की दृष्टिद्वार के सामने नीम की ओर गयी मारे भय के उसने आंखें बंद कर ली इतने में कुत्ता उठ बैठा। लाडली को ढांढस हुआ कि कही सोये हुये मनुष्य के बदले एक जागता हुआ कुत्ता उसके लिए अधिक धैर्य का कारण हुआ। इसने पिटारी उठाई और बूढी काकी की कोठरी की ओर चल दी बूढी काकी को केवल इतना स्मरण था कि किसी ने उनके हाथ पकड़कर घसीटे, फिर ऐसा मालूम हुआ कि कोई पहाड़ पर उठाए लिए जाता है। उनके पैर बार-बार पत्थरों से टकराए तब किसी ने उन्हें पहाड़ से पटका और वे मूच्छित्त हो गई।

जब वे सचेत हुई तो किसी की जरा भी आहट न मिलती थी। समझा कि लोग खा पीकर सो गए और उनके साथ उनकी तकदीर भी सो गई। रात कैसे कटेगी? हे राम ! क्या खाऊँ? पेट में अग्नि धधक रही है। किसी ने मेरी सुधी न ली। क्या मेरा ही पेट काटने से धन जुड जाएगा? इन लोगों कॉ इतनी भी दया नहीं आती कि न जाने बुढिया कब मर जाए? "उसका जी क्यों दुखाये में पेट की रोटियों ही खाती हूँ कि और कुछ? इस पर यह हाल में अन्धी अपाहिज ठहरी न कुछ सुनूँ न बूझू। यदि आँगन में चली गई तो क्या बुद्धिराम से इतना कहते न बनता था कि काकी अभी लोग खा रहे, फिर आना। मुझे घसीटा, पटका। उन्हों पूडियों के लिए रूपा ने सबके सामने गालियाँ दीं। उन्हीं पूडियाँ के लिए इतनी दुर्गती करने पर भी उनका पत्थर का कलेजा न पसीजा। सब खिलाया, मेरी बात तक न पूछी। जब तक ही न दीं तो अब क्या देंगे?"

यह विचारकर काकी निराशामय संतोष क साथ लेट गई। ग्लानि से गला भर भर आता परंतु मेहमानों के भय से रोती न थी।

सहसा उसके कानो में आवाज आई, काकी। उठो, मैं पूडियाँ लाई हूँ। काकी ने लाडली की बोलीं पहचानी। चटपट उठ बैठी। दोनों हाथो से लाडली को टटोला और गोद में बैठा लिया।

लाडली ने पूडियाँ निकालकर दीं। काकी ने पूछा, क्या तुम्हारी अम्मा ने दी हैं?" लाडली ने कहा, "नहीं वे मेरे हिस्से की है 1" काकी पुडियों पर टूट पड़ा। पाँच मिनट में पिटारी खाली हो गई।

लाड़ली ने पूछा, "काकी। पेट भर गया? " जैसे थोडी...सी वर्षा ठण्डक के स्थान पर और भी गर्मी पैदा कर देती है, उसी भाँति इन थोडी...सी पूडियों ने काकी की क्षुधा और इच्छा को उत्तेजित कर

दिया था। बोलीं, नहीं बेटी। जाकर अम्मा से और माँग लाओ। लाडली ने कहा, "अम्मा सोती हैं. जगाऊँगी तो मारेंगी।

काकी ने पिटारी को फिर टटोला। उसमें कुछ खूरचन गिरी थी। उन्हें निकालकर वे खा गई। बार-बार होठ चाटती थीं। चटखारे मारती थी। हृदयं मसोस रहा था कि पूडियाँ कैसे पाऊँ। संतोष सेतु जब टूट जाताहै तब इच्छा का बहाव अपरिमित हो जाता है। मतवालों को मद का स्मरण कराना उन्हें मदांध बनाना है।

काकी का अधीर मन इच्छा के प्रबल प्रवाह में बह गया। उचित और अनुचित का विचार जाता रहा। बे कुछ देर तक इस इच्छा को रोकती रहीं। सहसा लाडली से बोलीं, मेरा हाथ पकड़कर वहा ले चलो, जहाँ मेहमानों ने बैठकर भोजन किया है 1लाडली उनका अभिप्राय समझ न सकी1 उसने काकी का हाथ पकड़ा और ले जाकर जूठे पतलों के पास बिठा दिया। दीन, क्षुधातुर, हतज्ञान बुढिया पतलों से पूडियों के टुकडे चुन-चुनकर भक्षण करने लगी। ओह, दही कितना स्वादिष्ट था. कचौडियोंं कितनी सलोनी. खस्ता, कितनी सुकोमल। काको बुद्धिहीन होते हुए भी इतना जानती थीं कि मैं वह काम कर रही हूँ जो मुझे कदापि न करना चाहिए। मैं दूसरों के जूठे पत्तल चाट रही हूँ। परंतु बुढापा तृष्णा रोग का अंतिम समय है, जब संपूर्ण इच्छाएं एक ही केंद्र पर आ रुकती हैं। बूढी काकी में यह केन्द्र उनकी स्वादेन्द्रिया थी।

ठीक उसी समय रूपा की आंखें खुली। उसे मालूम हुआ कि लाडली उसके पास नहीं है। वह चौंकी, चारपाई के इधर-उधर ताकने लगी कि कहीं नीचे तो नहीं गिर पडी। उसे वहॉं न पाकर वह उठ बैठी तो क्या देखती है कि लाडली जूठे पतलों के पास खडी है और बूढी काकी पत्तलों पर से पूडियाँ के टुकड़े उठा-उठाकर खा रही है। रूपा का हृदय सन्न हो गया। किसी गाय की गर्दन पर छूरी चलते देखते जो अवस्था हाती है, वही उस समय उसकी हुई। एक ब्राहमणी दूसरो: के जूठे पत्तल टटोले, इससे अधिक शोकमय दृश्य असंभव है। पूडियों के कुछ ग्रासों के लिए उसकी चचेरी सास ऐसा पतित और निकृष्ट कर्म कर रही है। यह वह दृश्य था जिसे देखकर देखने वालों के हदय काँप उठते। ऐसा प्रतीत होता है मानो जमीन रुक गई, आसमान चक्कर खा रहा है, संसार पर कोई नयी विपत्ति आने वाली है। रूपा को क्रोध न आया। शोक के सम्मुख क्रोध कहा? करुणा और भय से उसकी छाती भर आई। इस अधर्म के पाप का भागी कौन हैं? उसने सच्चे हृदय से गगनमंडल की ओर हाथ कर कहा हे, परमात्मा! मेरे बच्चों पर दया करो, इस अधर्म का दंडमुझे मत दो, नहीं तो हमारा सत्यानाश हो जाएगा।"

रूपा को अपनी स्वार्थपरता और अन्याय इस प्रकार प्रत्यक्ष रूप में कभी न दीख पडा था। वह सोचने लगी हाय मैं कितनी निदयी हूं जिसकी सम्पति से मुझे दो सौ रूपये वार्षिक आय हो रही है उसकी यह दुर्गति और मेरे कारण हे दयामय भगवान मुझसे बडी भारी भूल हुई है। मुझे क्षमा करो, आज मेरे बेटे का तिलक था सैकडों मनुष्यों ने भोजन पाया मैं उनकी इशारों की दासी बनी रही। अपने नाम के लिए सैकडों रूपय व्यय कर दिए परन्तु जिसकी बदोलत हजारों रूपये खाए उसे इस उत्सव में भी भरपेट भोजन ना दे

सकी केवल इसी कारण तो वह वृद्धा है , असहाय है। रूपा ने दिया जलाया अपने भंडार का द्वार खोला ओर एक थाली में सम्पूर्ण सामग्रियां सजा कर काकी की ओर चली। आंधी रात हो चुकी थी आकाश पर तारों के थाल सजे हुए थे परन्तु उनमें से किसी को परमाननद प्राप्त हो न सकता था। जो बूढी काकी को अपने सम्मुख थाल देखकर प्राप्त हुआ रूपा ने कंठारूध स्वर से कहा काकी उठो भोजन कर लो। मुझे से आज बडी भूल हुई उसका बुरा ना मानना परमात्मा से प्रार्थना कर दो कि वह मेरा अपराध क्षमा कर दें। भोले भाले बच्चों की भांति जो मिठाईयॉ पाकर मार और तिरस्कार सब भूल जाते है बूढी काकी बैठी हुई खाना खा रही थी। उनके एक एक रोये से सच्ची सदिच्छाएं निकल रही थी और रूपा पास में खडी हुई इस स्वर्गीय दृश्य का आनन्द लूटने में निमग्न थी।

13.4 शब्दार्थ

- दीर्घाहार - अधिक समयतक भोजन करना;
- अपना राग अलापना (मुहावरा) - अपनी बात कहना;
- धैर्य परीक्षक - धैर्यं की परीक्षा लेने वाला,
- सच्चेष्टा - सच्चा प्रयास,
- हृदय ऐंठ कर रह जाना (मुहावरा) - मन में बहुत दुखी होना,ग्लानि – दु:ख
- दु:ख; छाती पर सवार होना (मुहावरा) - बिना इच्छा केपास आना,
- पुनरागमन - दुबारा लौटा आना,
- सुधी - खबर,
- तरूण - युवा,जवान,
- सब्जबाग - झूठे वादे,
- भलमनसाहत - सज्जनता,
- आर्तनाद - दुखभरी आवाज,
- क्रोधातर - क्रोध से आतुर, बेचैन
- लोलुपता - इच्छा,
- रक्षागार - रक्षा का घर,
- लाते पड़ता (मुहावरा) - दुर्लभ होना;
- आघात - चोट,
- मिथ्या – झूठा
- मुंह में पानी आना (मुहावरा) - खाने को ललचाना,

- जेवनार गीत - भोजन के समय गाए जाने वाला गीत,
- उद्विग्न - बैचेन,
- वृहत्खंड - बड़ा टुकड़ा,
- बैसिर पैर की बात (मुहावरा) - बैतुकी बात,
- स्वादेन्द्रिय - स्वाद लेने वाली इंद्रिय (जीभ),
- मदांध - मद (घमण्ड) से अंधा,
- उबल पड़ना (मुहावरा) - क्रोध मेंआना ;
- नाक कटवानी (मुहावरा) - बेइज्जती करना,
- तिलमिला जान (मुहावरा) - व्याकुल हो जाना,
- क्षुधातुर - भूख से आतुर (व्याकुल),
- हतज्ञात - ज्ञान नष्ट होना,
- सुवास - सुगंध,
- सेतु - पुल,
- अभिप्राय - तात्पर्य,
- भक्षण करना - खाना,
- कंठावरूद्ध - रूंधे हुए गले से,
- निमग्न - डुबी हुई।

13.5 कहानी का अर्थ ग्रहण (विवेचना)

कथावस्तु - 'बूढ़ी काकी' प्रेमचन्द की उन कहानियों में से है जहां आदर्श की स्थापना अंत में लेखक द्वारा की जाती है। 'बूढ़ी काकी' को भी नमक का दारोगा, पंच परमेश्वर तथा ईदगाह के समानान्तर ही माना जा सकता है जहां कहानी के अन्तिम दृश्यों में पात्र का हृदय परिवर्तन हो जाता है और कथाकार प्रेमचन्द एक आदर्श स्थापित करते है। 'बूढ़ी काकी' के कथानक को प्रेमचन्द ने इस प्रकार संजोया है कि वृद्धावस्था से जुड़ाव रखने वाले यथार्थ पक्ष हमारे सामने चित्रित हो जाते हैं।

बूढ़ी स्त्री का न पति है और न पुत्र। उनका एकमात्र आधार उसका भतीजा बुद्धिराम है। अपनी सारी सम्पति वह अपने भतीजे के नाम कर देती है। संपति लेते समय भतीजा अपनी बूढ़ी काकी से बड़े-बड़े वायदे करता है। पर अब उसे भरपेट भोजन भी नहीं मिलता। एक रात बूढ़ी काकी के भतीजे बुद्धिराम के बड़े लड़के का तिलोकोत्सव था। घर के भीतर स्त्रियां गा रही थीं और घर के सदस्य भोजन के प्रबन्ध में व्यस्त थे। बूढ़ी काकी में अब जिव्हा स्वाद के सिवा और कोई इच्छा शेष न रह गई थी। पूड़ियों -

कचौड़ियों की खूशबू मसालेदार तरकारी की महक उन्हें बैचैन कर रही थी। उससे रहा न गया फलत: वह कड़ाह के पास पहुंच जाती है, जहां भोजन पक रहा था। बूढ़ी काकी को वहां देखकर बुद्धिराम की पत्नी रूपा अत्यन्त क्रोधित होती है। बूढ़ी काकी चुपचाप रेंगती हुई अपनी कोठरी में चली जाती है। परन्तु भोजन का लोभ उनके मन से निकल नहीं पाता। वह म नही मन कल्पना करने लगती है कि अब तक लोग भोजन कर चुके हांगे, काफी समय हो गया है। यह सोचते हुए वह पुन: अपनी कोठरी से बाहर निकलती है। तब बुद्धिराम उसे निर्दयतापूर्वक घसीट कर उसकी कोठरी में पहुंचा देता है। बूढ़ी काकी भूखे-प्यासे मन मसोस कर रह जाती है।

बुद्धिराम की छोटी बेटी रूपा रात में सबके सो जाने के बाद अपने हिस्से की पुड़ियां लेकर बूढ़ी काकी के पास पहुंचती है। उन पुड़ियों को खाकर वह बहुत खुश होती है। पर इससे उसकी भूख नहीं मिटती है, बल्कि भूख और बढ़ जाती है। काकी पिटारी को पुन: टटोलती है, जिसमें खश्चन पड़े हैं। उसे निकाल कर वह बार बार होंठों से चाटती है, चटखारे भरती है। फिर अपनी लाडली से कहती है कि मुझे वहां ले चलो जहां मेहमानों ने भोजन किया है। उस स्थान पर बूढ़ी काकी जूठी पतल से भोजन ग्रहण करती है। रूपा जब उक्त स्थान पर आती है तो यह दृश्य देख द्रवीभूत हो जाती है। वह अपराधग्रस्त होती है तथा ईश्वर से इस कुकृत्य के लिए क्षमा याचना करती है और अन्त अपनी गलतियों के लिए माफी मांगती हुई बूढ़ी काकी को सादर भोजन परोसती है।

इस प्रकार हम देखते है कि 'बूढ़ी काकी' कहानी की कथावस्तु में बुजुर्गों की दुर्दशा का चित्रण है। यह समस्या वर्तमान समय में तो विद्रूपरूप धारण कर ही चुकी है परन्तु जिस समय प्रेमचन्द ने इस कहानी को लिखा था उस समय भी समाज के वृद्ध जनों के प्रति हो रहे वहशीपन को सटीक लेखनी उपन्यास सम्राट ने प्रस्तुत किया है। गर्भावस्था से लेकर प्रौढ़ावस्था के बाद तक सभी अवस्थाओं में परिवर्तन होता है। परन्तु प्रौढ़ावस्था के बाद आने वाली वृद्धावस्था के आगे कोई ओर या अन्य चरण नहीं आता है। इस अवस्था में मनुष्य पुन: बालपन में जीना प्रारम्भ हो जाता है। जिह्वा का गुलाम बन जाता है। बाल सुलभ मन के चलते किस प्रकार वृद्धावस्था में अपनों से ही अपमान झेलना पड़ता है, इस त्रासद को संवदेना की पृष्ठभूमि पर प्रेमचन्द ने रचा है।

शीर्षक की उपयुक्तता - किसी रचना के कथानक या उसकी कथावस्तु की समुचित विशेषताओं के अध्ययन के लिए उसके शीर्षक का औचित्य भी आवश्यक होता है। जैसे किसी रचना का शीर्षक उसके प्रमुख पात्र उसकी प्रमुख घटना या सीन के आधार पर प्राय: रखा जाता है। इसके साथ ही उसका संक्षिप्त और आकर्षक होना भी जरूरी माना जाता है। प्रस्तुत कहानी बूढ़ी काकी पर ही केन्द्रित है अत: इस कहानी का शीर्षक पूर्णत: उपयुक्त है। कहानी का केन्द्र बिन्दू बूढ़ी काकी है। कहानी की समूची आंतरिक और ब्राह्य संवदेना बूढ़ी काकी से जुड़ी हुई है। अत: इस कहानी का शीर्षक सर्वथा उचित और सार्थक माना जा सकता है।

वातावरण परिवेश

बूढ़ी काकी ग्रामीण वातावरण की एक गद्यात्मक हल्की झलक अवश्य मिलती है। लेकिन इसका वास्तविक परिवेश परोक्ष रूप से प्रेमचन्द के सम्पूर्ण कथा साहित्य का अभिन्न हिस्सा है। जहां तक वातावरण का प्रश्न है, प्रेमचन्द ने संवेदना के उच्चस्तर पर बूढ़ी काकी का ताना बाना बुना है। बूढी काकी में बचपन का पुनरागनु बुर्जुग अवस्था, जिह्वा रसा स्वादन की आदी हो जाना, रिश्तेदारों द्वारा वृद्धावस्था में अपमान होना, जरूरत से अधिक सामान के समान समझना जो एक कोने से पड़ा रहता है। जिसे परिवार के लोग महत्वहीन मानते है। पारिवारिक पृष्ठभूमि को आधार बनाते हुए प्रेमचन्द ने सामाजिक समस्या के कटु यथार्थ को प्रस्तुत किया है।

चरित्र चित्रण - बूढी काकी कहानी में चूंकि मुख्य पात्र बूढी काकी है तथा बुद्धिराम रूपा, लाडली ये सभी सहायक पात्रों के रूप में है। प्रेमचन्द मध्यवर्गीय पात्रों को कैनवास पर इस प्रकार प्रस्तुत करते थे कि पाठक पूर्णरूप से उस पात्र के साथ आत्मीय हो जाता था।

बूढ़ी काकी - सम्पूर्ण कहानी को अपने बुर्जआ कंधों पर लेकर चलने का श्रेय बूढी काकी को ही है। बूढ़ी काकी कहानी की प्रारम्भिक पंक्तियां बूढ़ी काकी के संदर्भ में है। हास्य भाव को प्रस्तुत करती हुई पंक्तियॉं उस हास्य के रहस्य में छूपी हुई वेदना, तिरस्कार, यथार्थ अंत में पाठक को झकझोर देते है। घर का वो सदस्य जिसने सदैव अपने परिवार को सर्वोपरि समझा और आज जब उस सदस्य को अपने अपनों की आवश्यकता हुई है तो सभी उसे सिर से नकार देते है। किस प्रकार बताया गया है कि बूढ़ी काकी को पेटभर भोजन भी कठिनाई से मिलता है। प्रेमचन्द ने प्रारम्भिक में पंक्तियों बुर्जुग अवस्था में परिवारिक प्रताड़ना को प्रस्तुत कियाहै। '.....लड़कों को बुडढ़ों से स्वभाविक द्वेष होता ही है और फिर जब माता पिता का रंग देखते तो बूढी काकी को .....कोई चुटकी काटकर भगता, कोई उन पर पानी की कुल्ली कर देता।

बूढ़ी काकी जिसने अपने संपति अपने भतीजे को दे दी थी उसके पश्चात भी घर में उसकी दुर्दशा थी तो यह विचारणीय है कि जो बुर्जुग इस अवस्था में किसी प्रकार का कोई सहयोग न कर सके तो उसे कितना सुनने को मिलता होगा और दुर्व्यवहार का अतिक्रमण हो जाता होगा।

बूढ़ी काकी में बुद्धिराम बूढ़ी काकी के प्रति जो व्यवहार करता है वह आधुनिक मध्यवर्गीय परिवारों का कच्चा चिट्ठा हमारे समक्ष करता है -

उदाहरण - '.....थाल को जमीन पर पटक दिया जिस प्रकार निर्दयी महाजन अपने किसी बेईमान और भेगोड़े आदमी को देखते ही झपटकर उसका टेंटुआ पकड़ लेता है.....।''

2 बुद्धिराम - बुद्धिराम के व्यक्तित्व का पता प्रारम्भिक पंक्तियों में लग बुद्धि राम स्वभाव से जो सज्जन थे, किन्तु उसी समय तक जब तक कि कोई उनके कोश पर कोई आंच न आए। कई बार बुद्धिराम को अपने द्वारा किये गये कार्य पर आत्मग्लानि भी होती परन्तु यह आत्मग्लानि क्षणिक होती थी। बूढी काकी को गालियां देना, घसीटना यह सभी बुद्धिराम के दैनिक दिनचर्या के कार्य थे। प्रेमचंद बुद्धिराम जैसे पात्रों

के माध्यम से आधुनिक समाज में अनगिनत रूप् से व्याप्त इस प्रकार के बहुसंख्यक लोगों पर कटाक्ष किया है।

3 रूपा - रूपा एक बहु के किरदार में है जो स्वभाव से बहुत तेज है परन्तु ईश्वर के भय से वह सदैव डरती है। यद्यपि रूपा भी जबान से आग उगलती है -

''जिस प्रकार मेढ़क केंचुए पर झपटता है, उसी प्रकार रूपा काकी पर झपटी और उससे बोली - ऐसे पेंट में आग लगे पेट या भाड़?.....डाइन न मरे, न पीछा छोड़े। नाक कटवाकर दम लेगी।''

अंत मैं बूढ़ी काकी को जब झूठी पत्तल खाते हुए तो आत्मग्लानि के भाव से भर जाती है। ईश्वर से और बूढ़ी काकी से अपने अपराधों की क्षमा याचना करती है। उसे अपने किये पर पछतावा होता है।

लाडली - पूरे परिवार में लाडली एक ऐसा पात्र है जो काकी से अत्यन्त प्रेम करती है। भोली लडकी है। बाल - विनोद और चंचलता की इसमें न था। लाडली काकी को बिना किसी शर्त के स्नेह करती थी।

लाडली काकी से अनुराग के कारण अपने हिस्से की मिठाई, बिनादेना बूढ़ी काकी के लिए बचा के रखती थी। कहानी के अंतिम पडाव में भी बालसुलभ हृदय का परिचय देते हुए लाडली ने कहा - ''.....काकी! उठो, मैं पुड़ियां लाई हूं।...काकी ने पूछा ''क्या तुम्हारी अम्मा ने दी है? लाडली ने कहा नहीं ये मेरे हिस्से की हैं।''

लाडली का काकी के प्रति लगाव आत्मीय था बिना किसी स्वार्थ के।

प्रतिपाद्य - प्रेमचन्द ने साहित्य को बौद्धिक सामाजिक गंभीर कर्म मानने के कारण उसकी सोद्देश्ता को हमेशा केन्द्र में रखा है। प्रेमचन्द ने एक सामाजिक समस्या को उजागर किया है। जो वर्तमान समय में बहुयातायत देखने को मिलते है। बुढापा मानव जीवन का अंतिम पड़ाव है। बुढापा तथा बचपन दोनों ही स्थितियों में मानव को दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है और यदि ऐसी स्थिति में कोई सहारा न मिले तो उस स्थिति से दयनीय और दुखदायक और कुछ नहीं होता। खासतौर पर बूढ़े मनुष्य कोइस बात से अधिक कष्ट का अनुभव होता है कि कोई उसका निरादर करे। बूढ़ी काकी के माध्यम से प्रेमचन्द ने इसी समस्या की ओर ध्यान केन्द्रित किया है। ऐसे परिवार में जहां मां बाप ही अपने बुर्जुगों का निरादर करते हों, वहां उनके बच्चे भी वृद्धों को कुछ नहीं समझते। ऐसे घरों में वृद्धजनों को भार समझा जाता है और उनका निरादर किया जाता है। ऐसे मां बाप को यह भी सोचना चाहिए कि कभी वे भी बूढ़े होंगे और यदि उनके बच्चे उनका उसी प्रकार निरादर करेंगे तो उन्हें कैसा लगेगा।

13.6 सारांश

प्रस्तुत इकाई में प्रेमचन्द द्वारा लिखित कहानी 'बूढ़ी काकी' के माध्यम से लेखक ने भारतीय समाज में विद्यमान वृद्धजनों को सम्मान और सहानुभूति प्रदान करने की सीख दी है। वृद्धावस्था में होने वाले भाव संवेगों को बूढ़ी काकी के माध्यम से दर्शाया है। घर के बुजुर्ग की देखभाल और उन्हे समुचित परिवेश प्रदान करने की हमारी जिम्मेदारी से हम स्वयं को अलग नहीं रख सकते।

13.7 अभ्यास प्रश्न

1 बूढ़ी काकी की समपत्ति की वार्षिक आय कितनी थी?

2 बुद्धिराम काकी के रिश्ते में क्या लगता था?

3 रूपा और लाडली के स्वभाव का संक्षेप में उल्लेख कीजिए।

4 काकी कौन थी और उसे क्या खलता था।

5 बुद्धिराम के घर में किस उतसव का आयोजन हुआ?

6 जेवनार गीत से क्या अभिप्राय है?

7 कड़ाहे के पास बैठकर बूढ़ी काकी को कैसा लगा और रूपा ने क्या कहा?

8 बूढ़ी काकी को पश्चाताप क्यूं हुआ?

9 काकी को खाना क्यों नीं दिया गया?

10 बूढ़ी काकी द्वारा झूठन खाते देख रूपा की जो प्रतिक्रिया हुई,उसका वर्णन कीजिए।

11 खाना खाते समय बूढ़ी काकी की क्या मनोदशा थी।

12 बूढ़ी काकी कहानी के प्रतिपाद्य को स्पष्ट कीजिए।

13 कहानी में विद्यमान पात्र बुद्धिराम और रूपा का चरित्र चित्रण कीजिए।

14 कहानी में आए मुहावरों को छांटकर उनका अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग का अभ्यास कीजिए।

13.8 संदर्भ ग्रंथ

1 डॉ. इन्द्रनाथ मदान : प्रेमचन्द एक विवेचन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

2 डॉ. सत्यकाम : प्रेमचन्द्र की कहानियों का पुनरावलोकन, अनुपम प्रकाशन, पटना

3 प्रकाशचन्द गुप्त : प्रेमचन्द्र साहित्य अकादमी, नई दिल्ली

4 डॉ. रामविलास शर्मा : प्रेमचन्द और उनका युग, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

इकाई – 14

पत्र विधा : चरित्र निर्माण (महात्मा गांधी)

इकाई की रूपरेखा

14.0 उद्देश्य

14.1 प्रस्तावना

14.2 महात्मा गांधी : एक परिचय

14.3 पाठ - वाचन

14.4 शब्दार्थ

14.5 सारांश

14.6 अभ्यास प्रश्न

14.7 संदर्भग्रंथ

14.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप -

- महात्मा गांधी के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- व्यक्तिगत पत्र लिखने की विधि भी समझ सकेंगे।
- चरित्र - निर्माण पाठ के आधार पर महात्मा गांधी की व्यक्तित्व की विशेषताओं को समझ सकेंगे।

14.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में पुत्र के नाम एक पिता के पत्र का उल्लेख है। यह पत्र भारत के राष्ट्रपिता और हमारे प्रिय 'बापू' महात्मा गांधी ने अपने पुत्र मणि लाल को अपने जेल - प्रवास के समय लिखा था। इस पाठ में गांधीजी अपने पुत्र को सादा जीवन और उच्च विचार अपनाने की सीख देते हैं।

14.2 महात्मा गांधी : एक परिचय

महात्मा गांधी महान स्वाधीनता सेनानी, सत्य और अहिंसा के पुजारी थे। महात्मा गांधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को गुजरात के पोरबन्दर नगर में हुआ। इनके पिता का नाम करमचन्द गांधी और मां का नाम पुतली बाई था। इनकी पत्नी कस्तूरबा भारतीय संस्कृति की प्रतिरूप थी। गांधीजी ने दक्षिण अफ्रीका

से अपने व्यक्तित्व का विकास शुरू किया। भारत लौटकर वे असहयोग आन्दोलन के प्रणेता बने। अहिंसा और सत्याग्रह के सहारे उन्होंने देश को आजादी दिलवाई। उनके अद्वितीय योगदान के कारण ही देश ने उन्हें 'राष्ट्रपिता' की उपाधि प्रदान की है। महात्मा गांधी ने सारा जीवन सत्य और अहिंसा के प्रयोग करने में बिता दिया। हम उन्हें बापू कहकर पुकारते है।

14.3 पाठ वाचन

महात्मा गांधी का अपने पुत्र मणिलाल को जेल से लिखा गया पत्र

प्रिय पुत्र

हर महीने एक पत्र लिखने और एक पत्र आने का अधिकार मुझे मिला है। अब मैं पत्र लिखूं किसे । मिस्टर रिच का मिस्टर पोलक का और तुम्हारा खयाल मुझे बारी बारी से आता था लेकिन इस समय तुम्हारा ही ध्यान मुझे बराबर आ रहा है। मेरे बारे में तुम जरा भी चिन्ता मत करना। विशेष कुछ कहने का अधिकार मुझे नहीं है। मैं पूर्णरूप से शांति में हूं।

आशा है कि बा अच्छी हो गयी होगी। मुझे मालूम है कि तुम्हारें कुछ पत्र यहां आये हैं, लेकिन वह मुझे नहीं दिये गये। फिर भी डिप्टी गर्वनर की उदारता से मुझे मालूम हुआ कि बा का स्वास्थ्य सुधर रहा है। क्या वे फिर से चलने फिरने लगी बा? और तुम लोग सवेरे दूध के साथ साबुदाना बराबर ले रहे होंगे और अब कुछ तुम्हारे बारे में कहना चाहूंगा, तुम कैसे हो, तुम पर जो जिम्मेदारी मैने डाली है, तुम उसके पूरी तरह योग्य हो और तुम खुशी खुशी निभा रहे होंगे , मुझे ऐसी आशा है।

मैं यह जानता हूं कि तुम्हें अपनी शिक्षा के प्रति असंतोष है। जेल में मैने खूब पढा है, जिससे मैं समझता हूं कि केवल अक्षर ज्ञान ही शिक्षा नहीं है। सच्ची शिक्षा तो चरित्र निर्माण और कर्तव्य का बोध है यदि यह दृष्टिकोण सही है और मेरे विचार से यह बिलकुल सही है तो तुम सच्ची शिक्षा प्राप्त कर रहे हो। आज कल तुम्हें अपनी बीमार मां का सेवा का अवसर मिला है। रामदास और देवदास का भी तुम सम्भाल रहे हो । यदि यह काम तुम अच्छी तरह और खुशी खुशी कर रहे हो तो तुम्हारी आधी शिक्षा इसी के द्वारा ही पूरी हो जाती है।

एक बात मैं कहना चाहता हूं कि आमोद प्रमोद एक निश्चित आयु तक ही शोभा देते है। बारह वर्ष की उम्र के बाद बच्चों में जिम्मेदारी और कर्तव्य का भाव होना चाहिए। उन्हें अपने आचार विचार में सत्य और अहिंसा के प्रयोग की चेष्टा करनी चाहिए और यह वे भार समझ कर नहीं करें। बल्कि एक आनन्द का अनुभव करते हुए करें । यह आनन्द कृत्रिम भी नहीं होना चाहिए । यह सरल और स्वाभाविक होना चाहिए। मैं जब तुमसे काफी छोटा था तो मुझे स्वयं अपने पिताजी की सेवा करने में बहुत आनन्द मिलता था। बारह वर्ष की आयु के बाद आमोद प्रमोद का बहुत ही कम बल्कि नहीं के सामान ही अवसर मुझे मिला है।

संसार में तीन बातें बड़ी महत्वपूर्ण हैा इनको प्राप्त कर तुम संसार के किसी कोने में जाओगे तो अपना निर्वाह कर सकोंगे यह तीन बातें है – अपनी आत्मा का, अपने पाप का, और ईश्वर का सच्चा ज्ञानप्राप्त करना उसका मतलब यह नहीं है कि तुम्हें अक्षर ज्ञान नहीं मिलेगा वह तो मिलेगा ही लेकिन तुम उसी की करो यह मैं नहीं चाहता। इसके लिए तुम्हारे पास बहुत समय है अक्षर ज्ञान तो इसलिए करता है कि जो कुछ तुम्हें मिला है उसे तुम दूसरों को दे सको।

इतना और याद रखना कि अब से हमें गरीबी में रहना है। जितना अधिक मैं विचार करता हूं उतना ही अधिक मुझे लगता है कि गरीबी में ही सुख है। अमीरों की तुलना में गरीब अधिक सुखी है।

खेत में घास और गढढा खोदने में पूरा समय देना। भविष्य में अपना जीवन निर्वाह इसी से करना है। मेरी इच्छा है कि एक योग्य किसान बनो। सभी औजारों को सदा साफ और सुव्यवस्थित रखना।

अक्षर ज्ञान में गणित और संस्कृत पर पूरा ध्यान देना। भविष्य में संस्कृत तुम्हारे लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगी।

यह दोनों विषय बडी उम्र में सीखना कठिन है। संगीत में भी बराबर रूचि रखना।

हिन्दी, गुजराती और अंग्रेजी के चुने हुए भजनों और कविताओं का एक संग्रह तैयार करना चाहिए। वर्ष के अन्त में तुम्हें अपना यह संग्रह बहुत मूल्यवांन प्रतीत होगा। काम की अधिकता से मनुष्य को घबराना न चाहिए और न ही यह सोचना चाहिए कि यह कैसे होगा? और पहले क्या करें। शांत चित्त से और समझकर यदि तुमने सभी सदगुणों को प्राप्त करने की चेष्टा की तो वह तुम्हारे लिए बहुत उपयोगी और मूल्यवान सिद्ध होगे। तुमसे आशा है कि घर के लिए जो भी तुम खर्च करते होंगे उसके पैसे पैसे का हिसाब रखते होंगे।

मुझे यह भी आशा है कि तुम रोज शाम को नियमपूर्वक प्रार्थना करते होंगे और रविवार को श्रीवेस्ट के यहां भी प्रार्थना में जाते होंगे। सूर्योदय से पहले उठकर प्रार्थना करना बहुत ही अच्छा है। प्रयत्न पूर्वक एक निश्चित समय पर ही प्रार्थना करनी चाहिए। यह नियमितता तुम्हें अपने जीवन में आगे चलकर बडी सहायक सिद्ध होगी।

तुम्हारा पिता

मोहन दास

14.4 शब्दार्थ

चरित्र	–	गुणों का समूह
कर्तव्य	-	फर्ज, जिम्मेदारी
उदारता	–	दानशीलता
निर्माण	–	बनाना

संग्रह	–	एकत्रित करना
आमोद प्रमोद	–	रंग ' रैलियां, मनोरंजन
स्वाभाविक	–	सहज
निर्वाह	–	गुजारा करना
सुव्यवस्थित	–	सही स्थान पर ठीक से रखना
भविष्य	–	आने वाला समय
जिम्मेदारी	–	उत्तरदायित्व
तुलना	–	बराबरी
खर्च	–	व्यय
चेष्टा	–	प्रयत्न

14.5 सारांश

प्रस्तुत पाठ में पत्र विधा के माध्यमसे गांधीजी ने प्रत्यक्ष रूप में अपने पुत्र मणिलाल और अपरोक्ष रूप से सभी भारतीय जन को जीवन मूल्यों व भारतीय संस्कृति को अपनाने की सीख दी है। पिता के रूप में पुत्र को जो जीवन - शैली उन्होंने सिखाई है, वह आज के चमक-दमक वाले संसार से बिल्कुल अलग है। इन संस्कारों को जीवन में उतारना ही सच्चा जीवन है। इतने ऊँचे स्थान पर पहुँचने वाले बापू कितने सादगी भरे जीवन को अपनाने की प्रेरणा दे रहे हैं - यह सचमुच अनुकरणीय है।

14.6 अभ्यासार्थ प्रश्न

1 गांधीजी के अनुसार सबसे उपयोगी विषय क्या है?
2 यह पत्र किसने, किसको और कहां से लिखा।
3 गांधीजी सच्ची शिक्षा किसे मानते थे?
4 गांधीजी मणिलाल को क्या बनाना चाहते थे?
5 गांधीजी ने अक्षर ज्ञान का क्या अर्थ बताया?
6 'बा' कौन थी, उनके विषय में इस पत्र में क्या जानकारी मिलती है?
7 गांधीजी द्वारा बताई गई जिन तीन बातों को हमें ध्यान रखना चाहिए उनका उल्लेख कीजिए।
8 बारह वर्ष की आयु के बाद हमें किन किन गुणों के विकास की ओर ध्यान देना चाहिए?
9 गांधीजी के अनुसार सच्चा सुख कहां है?
10 इस पत्र के आधार पर गांधी के व्यक्तित्व की विशेषताएं उदघाटित कीजिए।

14.7 संदर्भ ग्रंथ

1 पत्र-लेखन विद्या के अनेक संग्रह और संकलन है : जैसे गांधी जी के पत्र - मोहनदास कर्मचन्द गांधी, सुभाष के पत्र - नेता जी सुभाश चन्द्र बोस, पिता के पत्र पुत्री के नाम - जवाहरलाल नेहरू आदि अनेक पुस्तकें हैं।

2 मोहदास करमचन्द गांधी : सत्य के प्रयोग (आत्म कथा)

इकाई – 15

कविता : नर हो न निराश करो मन को (मैथिलीशरण गुप्त)

इकाई की रूपेरखा

15.0 उद्देश्य

15.1 प्रस्तावना

15.2 कवि - परिचय

15.3 कविता - वाचन

15.4 शब्दार्थ

15.5 कविता का अर्थ

15.6 सारांश

15.7 अभ्यास प्रश्न

15.8 संदर्भग्रंथ

15.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन पश्चात आप -

- कवि मैथिलीशरण गुप्त के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- कविता का वाचन कर उसका अर्थ ग्रहण कर सकेंगे।
- शब्दों का अर्थ ग्रहण करते हुए कविता का भावार्थ समझ सकेंगे।

15.1 प्रस्तावना

कवि मैथिलीशरण गुप्त राष्ट्र कवि माने जाते है। पराधीन भारत में राष्ट्रीय चेतना जगाने का नव जागरण का कार्य कवि गुप्त जी ने किया। अपनी रचनाओं के माध्यम से कवि ने भव्य अतीत को पौराणिक - ऐतिहासिक घटनाओं और पात्रों के द्वारा सामने रखा। भारत के जन-जन में मानवतावादी दृष्टिकोण, राष्ट्रीय भावना का विकास करने और एकता - समानता का संदेश गुप्तजी ने अपनी कविताओं के माध्यम से दिया है। इस इकाई में प्रस्तुत कविता **'नर हो न निराश करो मन को'** में कवि ने कर्म की महत्ता

बताते हुए मनुष्य को स्वाभिमान के साथ कार्य करने की प्रेरणा दी है। कवि ने आशावादी दृष्टिकोण का जन मानस में विकास किया है।

15.2 कवि - परिचय

झांसी जिले के चिरगांव नामक ग्राम में मैथिलीशरण गुप्त का जन्म संवत 1943 में श्रावण शुक्ल द्वितीया सोमवार, 3 अगस्त सन 1886 को हुआ था। पिताजी ने इनका नाम श्री मिथिलाधिय नन्दिनीशरण रखा था जो बाद में मैथिलीशरण गुप्त नाम से प्रसिद्ध हुआ। गुप्त जी के पिता का नाम सेठ रामचरण था और माता का नाम काशीबाई था। बचपन में नटखट स्वभाव के बावजूद वे बुद्धिमान व प्रतिभाशाली थे। रामभक्ति के संस्कार उन्हें परिवार से ही प्राप्त हुए। पहली दो पत्नियां और उसकी संतानों की मृत्यु के पश्चात उनका तीसरा विवाह सरयूदेवी से हुआ। सरयूदेवी उनके सुख दुख में हमेशा के लिए उनकी सहभागी बनी और उनसे उन्हें उर्मिला चरण पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। सामाजिक सद्भाव मर्यादित प्रेम, ग्रामीण जीवन और पारिवारिक सामंजस्य आदि उनके व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताएं थी जो उनके जीवन से हमेशा जुड़ी रही। सादगी,सौम्यता, सरलता प्रकृति- प्रेम और मधुरता उनके व्यक्तित्व के अभिन्न गुण थे।

सदाजीवन और उच्च विचार की प्रेरणा गुप्त जी को महात्मा गांधी से मिली थी। महादेवी वर्मा, कवि निराला, माखनलाल चतुवेदी, सुमित्रानन्दन पंत, वृन्दावनलाल वर्मा आदि कई साहित्यकारों से गुप्तजी की मित्रता रही। भारतीय राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन की लड़ाई में सक्रिय भाग लेने के कारण 17 अप्रेल सन 1914 को गुप्तजी को जेल जाना पड़ा। अनेक वर्षों तक ये राज्य सभा के सदस्य रहे। सन 1953 में भारत सरकार ने इन्हें पदुमभूषण से सम्मानित किया। आगरा के हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा 1962 ई. में इन्हें डी. लिट. की उपाधि दी गई। राष्ट्रीय चेतना को जगाने वाले राष्ट्रकवि का देहावसन 11 दिसम्बर को सन 1964 को हुआ।

गुप्त जी का रचनाकर्म (कविता रचना) सन 1901 से प्रारम्भ होकर 1960 में उनकी काव्य रचना **रत्नावली** के प्रकाशन पर समाप्त होती है। इनकी प्रमुख काव्य कृतिया है - साकेत, यशोधरा, भारत भारती, पंचवटी सिद्धराज, रंग में भंग, किसान, जयद्रथ, वध, पृथ्वीपुत्र, नहुश, द्वापर और रत्नावली आदि है।

इनकी कविताओं में तप, त्याग, करूणा, शान्ति, दया, क्षमा जैसे मानव मूल्य, नारी चरित्रों की उच्च स्थिति और राष्ट्रीय चेतना का स्वर सुनाई देता है।

15.3 कविता - वाचन

नर हो न निराश करो मन को।
कुछ काम करो, कुछ काम करो।

जग में रहकर कुछ नाम करो।
यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो.
समझो, जिसमें यह व्यर्थ न हो।
कुछ तो उपयुक्त करो तन को..
नर हो न निराश करो मन को।।

समझो कि सुयोग न जाय चला.
कब व्यर्थ हुआ सदुपाय भला।
समझो जग को न निरा सपना,
पथ आप करो प्रशस्त अपना।
अखिलेश्वर है अवलंबन को।
नर हो न निराश करो मन को।।

निज गौरव का नित ज्ञान रहे.
हम भी कुछ है यह ध्यान रहे।
सब जाए अभी पर मान रहे.
मरने पर गुंजित गान रहे।
कुछ हो न तजो निज साधन को।
नर हो न निराश करो मन को।

प्रभु ने तुमको कर दान किए,
सब वांछित वस्तु विधान किए।
तुम प्राप्त करो उनको न अहो,
फिर है किसका यह दोष कहो।
समझो न अलभ्य किसी धन को।
नर' हो न निराश करो मन को।।
किस गौरव के तुम यांग्य नहीं?
कब कौन तुम्हें सुख भोग्य नहीं?
जन हो तुम भी जगदीश्वर के,

सब है जिसके अपने घर के।
फिर दुर्लभ क्या? उसके जन को?
नर हो न निराश करो मन को।।

15.4 शब्दार्थ

नर	-	मनुष्य
निराशा	-	आशा से रहित
अर्थ	-	प्रयोजन
वस्तुविधान	-	वस्तुओं की योजना
व्यर्थ	-	बेकार
उपयुक्त	-	उचित
प्रशस्त	-	उत्तम
सुयोग	-	अच्छा योग
निरा	-	कोरा
अखिलेश्वर	-	संसार का स्वामी
अवलंवन	-	सहारा
गौरव	-	प्रतिष्ठा
साधन	-	उपाय
वांछित	-	इच्छित
अलम्भ्य	-	प्राप्त न कर सकने योग्य
दुर्लभ	-	कठिन
भोग्य	-	भोग (उपभोग) करने योग्य।

15.5 कविता का अर्थ

नर हो निराश.....अखिलेश्वर है अवलंबन को ...

प्रस्तुत कविता में कवि मैथिलीशरण गुप्त स्वाभिमान के साथ मनुष्य को कर्म करने की प्रेरणा देते हुए कहते हैं कि आप सभी सामर्थ्यवान मनुष्य हो, इसीलिए कुछ काम करो, हमेशा कर्मरत रहो। इस संसार में रहकर

अपना नाम कमाओं, अपना रहना सार्थक करो। जिस अर्थ के लिए इस संसार में तुम्हारा जन्म हुआ, उसे समझो। तुम्हारा जन्म लेना व्यर्थ न हो जाए इसलिए जो कार्य अपने शरीर को उचित लगे वह कार्य करो। मानवता के रक्षण हेतु कुछ न कुछ कार्य रहते रहो। आप मनुष्य है अपने मन को निराश कर बैठ जाना उचित नहीं है।

कवि आगे लिखते है कि कर्म करने का यह अच्छा अवसर कहीं चला न जाए अच्छे प्रयास और उपाय कभी भी व्यर्थ नहीं हुए हैं। संसार को मात्र कोरा स्वप्न समझने की भूल मत करो वरन् कर्मनिष्ठ रहते हुए स्वयं अपने रास्ते को प्रशस्त करो, अपने लक्ष्य के लिए आगे बढ़ों। आपके सहारे के लिए समस्त संसार का स्वामी अर्थात ईश्वर आपके साथ है। इसलिए निराशा को दूर कर आस्थावना दृष्टिकोण अपनाते हुए कर्मरत रहो।

निज गौरव का नित.....फिर दुर्लभ क्या उसके जन को...

कवि मैथिलीशरण गुप्त कहते हैं कि आप सभी मनुष्यों को स्वयं की प्रतिष्ठा का हमेशा ध्यान रहना चाहिए। स्वयं के अस्तित्व पर गर्व महसूस करे। हमारे पास से सर्वस्व छिन जाए परन्तु हमारा स्वाभिमान हमेशा साथ रहे। मरने पर गुंजित गान हो अर्थात मरने के बाद भी सर्वत्र गूजंता हुआ गान (हमारे कर्मों) का सभी को सुनाई देता रहे।

संसार में सभी पैदा होते हैं। अपने अपने कर्म करते हैं और मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। मरना सभी का होता है परन्तु कुछ मनुष्य ऐसे होते है जो मरकर भी अमर हो जाते हैं। क्योंकि उनके द्वारा किए गए सुकर्म सभी को याद रहते हैं। वे परमात्मा द्वारा दिए गए कर्म को उन्हीं के अनुसार करते है और जीवन में सफल होते हैं। हमें स्वयं के साधनों और उपायों का त्याग नहीं करना चाहिए। आस्थावान मनुष्य का मन कभी निराश नहीं होता है।

ईश्वर ने कर्म करने हेतु हमें सक्षम हाथ प्रदान किए और सभी इच्छित वस्तुओं की योजना की है। यदि तुम इनको प्राप्त नहीं करते हो तो फिर दोष किसका है। किसी भी धन (अर्थ) को अपने पहुंच से बाहर नहीं समझना चाहिए अर्थात सभी मनुष्य कर्म करके अर्थ की प्राप्ति कर सकते है।

ऐसी कौनसी प्रतिष्ठा या सम्मान हैं जिसे तुम प्राप्त नहीं कर सकते। ऐसा कौनसा सुख है? जिसे तुम भोग नही सकते, कहने का तात्पर्य है कि सभी प्रकार की प्रतिष्ठा और सुखों का उपयोग मनुष्य स्वाभिमान के साथ कर्मरत रहकर कर सकता है। सभी मनुष्य ईश्वर के जन है, ईश्वर सभी के है, फिर इस ईश्वर की सन्तान के लिए कोई भी लक्ष्य दुर्लभ नहीं है। आप सभी समर्थ मनुष्य है इसीलिए मन से निराश नहीं होना चाहिए।

15.6 सारांश

प्रस्तुत कविता न**र हो न निराश करो मन को** में कवि ने कर्म की महत्ता बताते हुए ईश्वर की संतान मनुष्य को स्वाभिमान के साथ कर्मरत रहने की प्रेरणा दी है। हमारे कर्म ऐसे होने चाहिए कि लोग हमें इस जन्म में ही नहीं वरन मरने के बाद भी याद रखें जिस प्रकार महात्मा गांधी, मटर टेरेसा, विवेकानन्द सरीखे

महापुरूषों का कर्मों के कारण ही लोग हमेशा उनका स्मरण करते है। कवि मैथिलीशरण गुप्त ने राष्ट्रीय चेतना और भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को अपनी काव्य रचनाओं के माध्यम से व्यक्त किया है।

15.7 अभ्यास प्रश्न

1 हमें सब कुछ खोकर भी किसकी रक्षा करनी चाहिए?

2 प्रस्तुत कविता में कवि ने निराश न होने की प्रेरणा क्यों दी है?

3 इस कविता से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

4 कविता का भावार्थ लिखिए।

5 मरने पर गुंजित गान रहे इस पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

6 कवि मैथिलीशरण गुप्त के व्यक्तित्व का वर्णन कीजिए

15.8 संदर्भ ग्रंथ

1 डॉ. हरिचरण शर्मा : छायावाद के आधार स्तंभ, राजस्थान प्रकाशन, जयपुर

2 डॉ. उमाकान्त, : मैथिलीशरण गुप्त, कवि और भारतीय संस्कृति के आख्याता, नेशनल पब्लिशिंग हाउस,दिल्ली।

4 डॉ. द्वारका प्रसाद मित्तल : मैथिलीशरण गुप्त का साहित्य, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर।